

مختلف علوم و فنون کی اصطلاحات شہورہ کی معتبر و مستند کتب
سے اخذ شدہ تعریفات پر مشتمل ایک مفید تالیف

کنز التعریفات



مؤلف
علامہ محمد ظفر قادری عطاری

مکتبہ فیضانِ مدینہ

فیضانِ مدینہ چوک، سوسائ روڈ، مدینہ ٹاؤن، فیصل آباد 0346-6021452

کنز الشریقات

مؤلف

علامہ محمد ظفر القادری العطاری حفظہ اللہ

مکتبہ فیضانِ مدینہ
سوسائ روڈ فیضانِ مدینہ
چوک مدینہ ٹاؤن فیصل آباد

0303-3061574. 0344-6021452

اللہ ربُّ محمدٍ صَلَّی عَلَیْہِ وَسَلَامًا
نَحْنُ عِبَادُ مُحَمَّدٍ صَلَّی عَلَیْہِ وَسَلَامًا
ذُرُوعُ اَکْبَرِ الْعَالَمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْہِ وَسَلَامًا
سَيِّدِ الْمُرْسَلِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْہِ وَسَلَامًا

جملہ حقوق بحق ناشر محفوظ ہیں

کنز التعریفات

مؤلف _____ علامہ محمد ظفر القادری العطاری حفظہ اللہ
ایڈشن _____ پنجم
سن اشاعت _____ مئی 2011ء
ناشر _____ صالح محمد طاہر

ملنے کا پتہ

- مکتبہ نوریہ رضویہ گلبرگ اے فیصل آباد
- مکتبہ اہل سنت فیصل آباد
- شبیر برادرز لاہور
- مکتبہ اعلیٰ حضرت دربار مارکیٹ لاہور
- زاویہ پبلشرز دربار مارکیٹ لاہور
- مکتبہ غوثیہ گوجرانوالہ
- ضیاء القرآن پبلی کیشنز سمنگ بخش لاہور
- مکتبہ اہل السنہ دینہ جہلم
- مکتبہ غوثیہ ہول سیل کراچی

ہدیہ 160 روپے

مکتبہ فیضانِ مدینہ
سوسائ روڈ فیضان مدینہ
چوک مدینہ ٹاؤن فیصل آباد

0303-3061574, 0344-6021452

| صفحہ نمبر | عنوان | صفحہ نمبر | عنوان |
|-----------|---------------------------------------|-----------|------------------------|
| 16 | معراج کی تعریف | 3 | باب العقائد |
| 17 | باب العبادات | 3 | توحید کی تعریف |
| 18 | شریعت، طریقت، حقیقت | 4 | شرک کی تعریف |
| 18 | پیر کی تعریف | 4 | واجب الوجود کی تعریف |
| 18 | دین، شریعت، مذہب، ملت، مسلک، مکتب فکر | 4 | قدیم کی تعریف |
| 19 | نیت کی تعریف | 5 | حاضر و ناظر کی تعریف |
| 19 | علم کی تعریف | 5 | شفاعت کی تعریف |
| 20 | وحی کی تعریف | 7 | غیب کی تعریف |
| 20 | الہام کی تعریف | 8 | نور کی تعریف |
| 20 | فراست کی تعریف | 9 | انتیاری کی تعریف |
| 21 | حصول علم کے اعتبار سے علم کی تقسیم | 10 | استداد کی تعریف |
| 22 | شعور کی تعریف | 10 | میاد کی تعریف |
| 22 | ناخ کی تعریف | 10 | ایصال ثواب کی تعریف |
| 23 | تفسیر کی تعریف | 11 | ثواب کی تعریف |
| 23 | تاویل کی تعریف | 11 | سجدہ کی تعریف |
| 24 | قرآن کی تعریف | 12 | نقدیر کی تعریف |
| 24 | حدیث قدسی کی تعریف | 13 | وسیلہ کی تعریف |
| 25 | حدیث کی تعریف | 13 | عصمت کی تعریف |
| 28 | محدث کی تعریف | 14 | عبادت کی تعریف |
| 29 | حافظ کی تعریف | 14 | ایمان و اسلام کی تعریف |
| 29 | حجۃ کی تعریف | 15 | لعنت کی تعریف |

| صفحہ نمبر | عنوان | صفحہ نمبر | عنوان |
|-----------|----------------------------|-----------|------------------------|
| 29 | ماہنامہ کی تعریف | 37 | مہاجر کی تعریف |
| 29 | بہن کی تعریف | 37 | معارضہ کی تعریف |
| 30 | معجزہ کی تعریف | 37 | شیخین کی تعریف |
| 30 | کرامت و استدراج کی تعریف | 38 | صاحبین کی تعریف |
| 30 | جادو (سحر) کی تعریف | 38 | طرفین کی تعریف |
| 31 | صحابی کی تعریف | 38 | ائمہ اربعہ کی تعریف |
| 31 | تابعی کی تعریف | 38 | ائمہ ثلاثہ کی تعریف |
| 31 | ولی کی تعریف | 38 | مستندین کی تعریف |
| 31 | مجتہد کی تعریف | 38 | متاخرین کی تعریف |
| 31 | اجتہاد کی تعریف | 39 | احکام شریعت |
| 33 | تقلید کی تعریف | 39 | فرض اعتقادی کی تعریف |
| 33 | اجماع کی تعریف | 39 | فرض عملی کی تعریف |
| 34 | قیاس کی تعریف | 40 | واجب اعتقادی کی تعریف |
| 34 | حجت کی تعریف | 40 | واجب عملی کی تعریف |
| 35 | ظن، دوہم اور یقین کی تعریف | 40 | سنت موکدہ کی تعریف |
| 35 | عموم بلوی کی تعریف | 40 | سنت غیر موکدہ کی تعریف |
| 35 | عرف عام کی تعریف | 41 | مستحب کی تعریف |
| 36 | منظور کی تعریف | 41 | حرام قطعی کی تعریف |
| 36 | مکابرہ کی تعریف | 41 | مکروہ تحریمی کی تعریف |
| 36 | مجاہدہ کی تعریف | 41 | اسات کی تعریف |
| 37 | | 41 | مکروہ تنزیہی کی تعریف |
| | | 42 | خلاف اولی کی تعریف |

| صفحہ نمبر | عنوان | صفحہ نمبر | عنوان |
|-----------|-----------------------|-----------|---------------------|
| 42 | فرض کفایہ کی تعریف | 52 | مہاجر کی تعریف |
| 42 | سنت کی تعریف | 42 | مسافر کی تعریف |
| 43 | نفل کی تعریف | 43 | قصر کی تعریف |
| 43 | بدعت کی تعریف | 43 | شہر کی تعریف |
| 45 | نماز کی تعریف | 45 | وطن کی تعریف |
| 45 | عمل کثیر کی تعریف | 45 | روزہ کی تعریف |
| 46 | اداء قضاء کی تعریف | 46 | اعتکاف کی تعریف |
| 46 | طہارت کی تعریف | 46 | زکوٰۃ کی تعریف |
| 47 | نہایت کی تعریف | 47 | صدقہ فطر کی تعریف |
| 48 | وہو کی تعریف | 48 | مال کی تعریف |
| 48 | دھونے و مسح کی تعریف | 48 | مالک انصاب کی تعریف |
| 49 | پستہ پانی کی تعریف | 49 | حاجت اصلیہ کی تعریف |
| 49 | درد و کی تعریف | 49 | فقہ کی تعریف |
| 49 | مستعمل پانی کی تعریف | 49 | مسکین کی تعریف |
| 50 | ہیثم کی تعریف | 50 | یتیم کی تعریف |
| 50 | جنس زمین کی تعریف | 50 | عامل کی تعریف |
| 50 | غیر جنس زمین کی تعریف | 50 | حج کی تعریف |
| 51 | بہر اور سر کی تعریف | 51 | حج بدل کی تعریف |
| 51 | مسجد کی تعریف | 51 | قربانی کی تعریف |
| 52 | مسجد بیت کی تعریف | 52 | ذبح کی تعریف |

| صفحہ نمبر | عنوان | صفحہ نمبر |
|-----------|--------------------------|-------------------------------------|
| 64 | باب المعاملات | جہاد کی تعریف |
| 65 | نکاح کی تعریف | شبید کی تعریف |
| 65 | مہر کی تعریف | ہجرت کی تعریف |
| 66 | محرمات کی تعریف | دارالسلام کی تعریف |
| 66 | غیر کفو کی تعریف | دارالحرب کی تعریف |
| 67 | ولی کی تعریف | دارلکفر کی تعریف |
| 67 | عنین کی تعریف | مسلم کی تعریف |
| 67 | ضبط تولید (عزل) کی تعریف | غیر مسلم ذمی کی تعریف |
| 67 | متعہ کی تعریف | غیر مسلم مستامن کی تعریف |
| 68 | ولیمہ کی تعریف | غیر مسلم جو نہ ذمی ہو اور نہ مستامن |
| 68 | عقیقہ کی تعریف | کافر کی تعریف |
| 68 | طلاق کی تعریف | زندیق کی تعریف |
| 69 | تعلیق کی تعریف | لمح کی تعریف |
| 69 | خلع کی تعریف | معطل کی تعریف |
| 69 | ایلاء کی تعریف | دہریہ کی تعریف |
| 69 | ظہر کی تعریف | کتابی کی تعریف |
| 70 | امان کی تعریف | مشرک کی تعریف |
| 71 | قتل کی تعریف | مرد کی تعریف |
| 71 | حلالہ کی تعریف | منافق کی تعریف |
| 72 | عدت کی تعریف | مان غنیمت کی تعریف |
| | | جزیہ کی تعریف |
| | | مشر و خراج کی تعریف |

| صفحہ نمبر | عنوان | صفحہ نمبر |
|-----------|--------------------------------|----------------------|
| 85 | باب المبیوع | ہوک کی تعریف |
| 86 | بیع (خرید و فروخت کی) کی تعریف | بیع کی تعریف |
| 86 | بیع قاطعی کی تعریف | ظہر کی تعریف |
| 86 | بیع سلم کی تعریف | استحاضہ کی تعریف |
| 87 | بیع مطلق کی تعریف | جنابت کی تعریف |
| 87 | بیع صرف کی تعریف | معدوم کی تعریف |
| 88 | بیع مقایضہ کی تعریف | منی کی تعریف |
| 88 | بیع عینہ کی تعریف | مذی کی تعریف |
| 88 | بیع فاسد کی تعریف | ودی کی تعریف |
| 88 | بیع باطل کی تعریف | رضاعت کی تعریف |
| 89 | بیع مراحمہ و توایہ کی تعریف | بلوغ کی تعریف |
| 90 | بیع مضوی کی تعریف | مراہق کی تعریف |
| 90 | بیع مکروہ کی تعریف | طہق کی تعریف |
| 90 | خیار شرط کی تعریف | دیوث کی تعریف |
| 91 | خیار تعمیر کی تعریف | کابن کی تعریف |
| 91 | خیار رویت کی تعریف | نجوی (عراف) کی تعریف |
| 91 | خیار عیب کی تعریف | مکاتب کی تعریف |
| 92 | اقالہ کی تعریف | عبد کی تعریف |
| 92 | اجارہ و اعارہ کی تعریف | حق کی تعریف |
| 92 | عقد فاسد کی تعریف | |

| صفحہ نمبر | عنوان | صفحہ نمبر |
|-----------|------------------------|-----------|
| 103 | اعادہ (عاریت) کی تعریف | 116 |
| 104 | کفالت کی تعریف | 117 |
| 105 | ہبہ کی تعریف | 117 |
| 105 | ضمان کی تعریف | 118 |
| 106 | ودیعت کی تعریف | 119 |
| 106 | امانت کی تعریف | 122 |
| 107 | مضاربہ کی تعریف | 123 |
| 108 | مزارعت کی تعریف | 124 |
| 109 | مساقات کی تعریف | |
| 109 | شفعہ کی تعریف | |
| 110 | مہایاقہ کی تعریف | |
| 111 | حق کی تعریف | |
| 111 | وقف کی تعریف | |
| 111 | رہن کی تعریف | |
| 112 | وصیت کی تعریف | |
| 113 | مسابقت کی تعریف | |
| 114 | کسب کی تعریف | |
| 115 | دین کی تعریف | |
| 115 | قرض کی تعریف | |
| 116 | جوا (قمار) کی تعریف | |
| 103 | سود کی تعریف | |
| 104 | ہم جنس کی تعریف | |
| 105 | چند بیہانوں کی تعریفات | |
| 105 | ہبہ کی تعریف | |
| 106 | قسم کی تعریف | |
| 106 | نذر کی تعریف | |
| 107 | لفظ کی تعریف | |
| 108 | لقیظ کی تعریف | |
| 109 | باب الجنایات | |
| 109 | حد کی تعریف | |
| 109 | تغذیر کی تعریف | |
| 110 | چوری (سرقت) کی تعریف | |
| 111 | ڈاکہ (حراہ) کی تعریف | |
| 111 | غصب کی تعریف | |
| 111 | وکیل کی تعریف | |
| 112 | شہادت کی تعریف | |
| 113 | دعویٰ کی تعریف | |
| 114 | ثالث (حکم) کی تعریف | |
| 115 | رغم (جرح) کی تعریف | |
| 115 | قتل کی تعریف | |
| 115 | قسامت کی تعریف | |
| 116 | دیت کی تعریف | |

| صفحہ نمبر | عنوان | صفحہ نمبر |
|-----------|---------------------------|-----------|
| 135 | امان کی تعریف | 149 |
| 136 | خود پسندی (عجب) کی تعریف | 150 |
| 136 | غصے کی تعریف | 150 |
| 138 | فسق کی تعریف | 151 |
| 138 | توریہ کی تعریف | 151 |
| 138 | حیلہ کی تعریف | 152 |
| 138 | تقیہ کی تعریف | 153 |
| 139 | مداہنت و مدارات کی تعریف | 153 |
| 139 | جہل، نسیان، ذہول کی تعریف | 154 |
| 139 | خطا کی تعریف | 154 |
| 140 | گناہ کی تعریف | 154 |
| 141 | شکار کی تعریف | 135 |
| 142 | مردار کی تعریف | 136 |
| 142 | شراب کی تعریف | 136 |
| 144 | بھنگ کی تعریف | 138 |
| 144 | حشیش کی تعریف | 138 |
| 144 | ایون کی تعریف | 138 |
| 145 | نبیذ کی تعریف | 138 |
| 146 | اسپرٹ کی تعریف | 139 |
| 147 | نچکر کی تعریف | 139 |
| 148 | اکحل کی تعریف | 140 |
| 149 | زنا کی تعریف | 141 |
| 149 | اکراہ کی تعریف | 142 |
| 135 | امان کی تعریف | |
| 136 | مردار کی تعریف | |
| 136 | شراب کی تعریف | |
| 138 | بھنگ کی تعریف | |
| 138 | حشیش کی تعریف | |
| 140 | گناہ کی تعریف | |
| 141 | شکار کی تعریف | |
| 142 | مردار کی تعریف | |
| 142 | شراب کی تعریف | |
| 142 | بھنگ کی تعریف | |
| 142 | حشیش کی تعریف | |
| 142 | ایون کی تعریف | |
| 142 | نبیذ کی تعریف | |
| 142 | اسپرٹ کی تعریف | |
| 142 | نچکر کی تعریف | |
| 142 | اکحل کی تعریف | |
| 142 | زنا کی تعریف | |
| 142 | اکراہ کی تعریف | |

مَوْلَايَ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا
 عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمْ
 مُحَمَّدٌ سَيِّدُ الْكَوْنَيْنِ وَالْثَّقَلَيْنِ
 وَالْفَرِيقَيْنِ مِنْ عَرَبٍ وَمِنْ عَجَمٍ
 هُوَ الْحَبِيبُ الَّذِي تَرَجَّحَتْ شَفَاعَتُهُ
 لِكُلِّ هَوَلٍ مِنَ الْاَهْوَالِ مُقْتَحِمٍ
 يَا اَكْرَمَ الْخَلْقِ مَالِي مَنْ الْوُذُبِ
 سِوَاكَ عِنْدَ حُلُولِ الْحَادِثِ الْاَمَمِ
 يَا رَبِّ بِالْمُصْطَفَى بَلَغْ مَقَاصِدَنَا
 وَاعْفِرْ لَنَا مَا مَضَى يَا بَارِي النِّسَمِ

| صفحہ نمبر | عنوان | صفحہ نمبر | عنوان |
|-----------|-----------------------|-----------|-----------------------------|
| 158 | تقویٰ کی تعریف | | باب المکروہات |
| 159 | توکل کی تعریف | 144 | رشوت کی تعریف |
| 160 | مہربانی کی تعریف | 144 | وسوسہ کی تعریف |
| 160 | توفیق کی تعریف | 145 | غیبت کی تعریف |
| 161 | ہدایت کی تعریف | 146 | حسد و رشک کی تعریف |
| 161 | صراطِ مستقیم کی تعریف | 147 | چغلی کی تعریف |
| 161 | استقامت کی تعریف | 148 | تکبر کی تعریف |
| 163 | حیاء کی تعریف | 149 | بخل کی تعریف |
| 163 | زہد کی تعریف | 149 | گمان کی تعریف |
| 164 | توبہ کی تعریف | 150 | خود پسندی (عجب) کی تعریف |
| 164 | ادب کی تعریف | 150 | غصے کی تعریف |
| 164 | مذاق (مزاج) کی تعریف | 151 | فسق کی تعریف |
| 165 | مصافحہ کی تعریف | 151 | تورہ کی تعریف |
| 166 | بوسہ کی تعریف | 152 | حیلہ کی تعریف |
| 166 | خلق کی تعریف | 153 | تقیہ کی تعریف |
| 167 | اخلاص کی تعریف | 153 | مددِ اہست و مدارات کی تعریف |
| 167 | خشوع کی تعریف | 154 | جہل، ہنسین، ذہول کی تعریف |
| 167 | زینت کی تعریف | 154 | خطابہ کی تعریف |
| 168 | خواب کی تعریف | 154 | گناہ کی تعریف |
| 169 | مراقبہ کی تعریف | 155 | سناہ کی تعریف |
| 169 | تہنیت کی تعریف | 155 | سناہ کی تعریف |
| 169 | تہنیت کی تعریف | 156 | ریاضت کی تعریف |
| 170 | عزت کی تعریف | 156 | کذب کی تعریف |
| 170 | سیاست کی تعریف | 157 | فضول گوئی کی تعریف |
| 171 | مشورہ کی تعریف | | باب الآداب |
| 171 | عشق و محبت کی تعریف | 158 | نعمت و مدح، شکر کی تعریف |

عرض مولف

عرف عام میں مختلف علوم و فنون سے متعلق بے شمار اصطلاحات ہر عام و خاص کی زبان سے سننے کو ملتی ہیں لیکن تجربہ شہاد ہے کہ اکثر لوگ ان اصطلاحات کی تعریفات سے واقف نہیں ہوتے جسکی وجہ سے اشیاء کی حقیقت واضح نہیں ہوتی۔

مثال کے طور پر عقائد سے متعلق، حاضر و ناظر، توحید و شرک، نور و بشر و غیرہ، یا محرمات سے متعلق، سود و جوا، بیمہ و متعہ و غیرہ، یا حدود سے متعلق، قتل و زنا، شراب و نشہ، یا احکام سے متعلق، فرض و واجب، سنت و نفل و غیرہ وہ اصطلاحات ہیں کہ جن کی تعریفات سے عدم واقفیت کی وجہ سے بے شمار اختلافات اور غلط نتائج اخذ کئے جاتے ہیں اور میری وسعت نظری کے مطابق اس موضوع کو بہت کم توجہ حاصل ہوئی ہے۔ کافی عرصہ سے میرے ذہن میں یہ خیال پیدا ہو رہا تھا کہ اس موضوع پر ایک کتاب تالیف کروں چنانچہ اس جذبہ کے پیش نظر کہ اللہ تعالیٰ میرے لئے اس تالیف کو دنیا میں صدقہ جاریہ اور آخرت میں ذریعہ نجات بنائے میں نے مستند اور معتبر کتب سے تعریفات کو جمع کر کے، کنز العریفات، کے نام سے اس کو شائع کر دیا اور جہاں ضرورت محسوس ہوئی وہاں چیدہ چیدہ مسائل اور ان کے احکامات بھی بیان کر دئے۔ لیکن مختلف فنون کی تعریفات میں علمائے حق کا اختلاف بھی ایک اہل حقیقت ہے میں نے اپنی کوشش کے مطابق مستند تعریفات کو ہی اکٹھا کیا ہے لیکن پھر بھی میری یہ تالیف حرف آخر نہیں لہذا قارئین سے گزارش ہے کہ اگر کوئی غلطی یا ضعف محسوس کریں تو اصلاح ضرور فرمائیں انشاء اللہ اگلے ایڈیشن میں تصحیح کر دی جائے گی۔

محمد ظفر القادری غفرلہ

باب العقائد

توحید کی تعریف

اللہ تعالیٰ کی ذات و صفات اور اس کی عبادت میں کسی کو شریک ہونے سے پاک ماننا یعنی جس طرح اللہ تعالیٰ ہے ویسا کسی کو خدا نہ ماننا اور علم و سماعت و بصارت وغیرہ جیسی صفات اللہ تعالیٰ کی ہیں ایسی صفات کسی کی نہیں یہ عقیدہ رکھنا توحید کہلاتا ہے۔

توحید کے مراتب: توحید کے چار مراتب ہیں۔

(۱) اللہ تعالیٰ ہی کو واجب الوجود ماننا۔

(۲) تمام روحانی اور مادی عالم کا خالق اللہ تعالیٰ ہی کو جاننا۔

(۳) آسمان و زمین اور ان کے درمیان یعنی تمام عالم کی چیزوں میں تمام تدبیر اور تصرف کو اللہ تعالیٰ ہی کی ذات کے ساتھ مخصوص تسلیم کرنا۔

(۴) اللہ تعالیٰ ہی کو عبادت کے لائق سمجھنا۔

شرک کی تعریف

شرک یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کے علاوہ کسی کو واجب الوجود ماننا جیسا کہ مجوسیوں کا عقیدہ ہے یا اللہ تعالیٰ کے علاوہ کسی کو لائق عبادت جاننا جیسا کہ بت پرستوں کا عقیدہ ہے۔

حکم: شرک لغوی بدترین قسم ہے شرک کی بخشش نہیں ہمیشہ جہنم میں رہے گا۔

شرک کی اقسام: شرک کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) شرک فی الذات (۲) شرک فی الصفات۔

شرک فی الذات: یعنی اللہ تعالیٰ کی ذات پاک میں کسی غیر کو شریک ٹھہرانا مطلب یہ کہ اللہ تعالیٰ کی ذات جیسا کسی دوسرے کو سمجھنا اللہ تعالیٰ کی ذات واجب الوجود ہے لہذا کسی دوسرے کو واجب الوجود ماننا شرک فی الذات ہے۔

شرک فی الصفات: اللہ تعالیٰ کی صفات عالیہ میں کسی غیر کو شریک ٹھہرانا یعنی جس طرح اللہ تعالیٰ صفات عالیہ سے متصف ہے ایسی صفات کس دوسرے کے لئے ثابت کرنا شرک فی الصفات ہے۔

سوال: سمیع و بصیر اللہ تعالیٰ کی صفات ہیں جیسا کہ قرآن پاک میں ہے اگر یہ صفات کسی دوسرے کے لئے ثابت کی جائیں تو کیا یہ شرک ہے؟

جواب: قرآن پاک کی رو سے اللہ تعالیٰ سمیع و بصیر ہے اور انسان بھی سمیع و بصیر ہے اور آیات مبارکہ میں اللہ تعالیٰ نے سمیع و بصیر کی صفات اپنے لئے بھی بیان فرمائی ہیں اور انسان کے لئے بھی لیکن اللہ تعالیٰ اور انسان کی صفات میں فرق یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی یہ صفات ازلی وابدی ہیں اور بندوں کی یہ صفات اللہ تعالیٰ کی محتاج ہیں اور اسی کی عطا کردہ ہیں۔ اسی طرح علم و عزت اللہ تعالیٰ کی صفات ہیں لیکن قرآن میں انبیاء کے لئے بھی ثابت ہیں لہذا فرق یہی ہوگا کہ اللہ تعالیٰ کی یہ صفات ذاتی ہیں اور انبیاء کی صفات عطائی یعنی اللہ تعالیٰ کی عطا کردہ ہیں۔

واجب الوجود کی تعریف

ایسی ذات جو اپنے موجود ہونے میں کسی دوسرے کی محتاج نہ ہو اور نہ ہی اس کی کوئی ابتدا ہو اور نہ انتہا جیسے اللہ تعالیٰ کی ذات پاک۔

حکم: اللہ تعالیٰ کے علاوہ مخلوقات میں کسی کو واجب الوجود ماننا شرک ہے۔

قدیم کی تعریف

ایسی ذات کہ جس کی نہ کوئی ابتدا ہو اور نہ انتہا سے قدیم کہتے ہیں جیسے اللہ تعالیٰ کی ذات پاک۔ لہذا یہ نہیں کہہ سکتے کہ اللہ تعالیٰ کی صفات ایک سال پہلے تھیں اب نہیں بلکہ اس کی صفات ہمیشہ سے ہیں اور ہمیشہ رہیں گی۔

حکم: اللہ تعالیٰ کے علاوہ کسی کو قدیم ماننا شرک ہے جیسا کہ دہریے جو زمانے کو قدیم مانتے ہیں

حاضر و ناظر کی تعریف

وقت قدیم والا ایک ہی مقام میں رہ کر اپنے ہاتھ کی ہتھیلی کی مثل تمام عالم کو دیکھے اور قرب و بعد کی آوازن سکتا ہو اسے ناظر کہتے ہیں اور ایک ہی ساعت میں عالم کی سیر کرنے پر قادر ہو، یہ اختیار خواہ روحانی ہو یا جسمانی اسے حاضر کہتے ہیں۔

عقیدہ: اہل سنت و جماعت کا عقیدہ ہے کہ حضور نبی کریم ﷺ مدینہ شریف میں اپنی قبر انور کے اندر آرام فرما ہیں اور تمام عالم کو ہاتھ کی ہتھیلی کی مثل ملاحظہ فرما رہے ہیں، دور اور قریب کی آوازن سکتے ہیں، اگر چاہیں تو اپنے غلاموں کی حاجت روائی کے لئے صد ہا کوس تشریف لا سکتے ہیں اسے عقیدہ حاضر و ناظر کہتے ہیں۔ اس وقت یا ہر وقت اپنے جسم بشری کے ساتھ حضور ﷺ یہاں موجود ہیں یہ ہمارا عقیدہ نہیں۔

حکم: اللہ تعالیٰ کی طرف لفظ حاضر و ناظر منسوب کرنا درست نہیں کیونکہ اس سے مکان کا ثابت ہونا لازم آتا ہے جبکہ اللہ تعالیٰ مکان و زمان سے پاک ہے۔

شفاعت کی تعریف

گناہوں سے درگزر کرنے کی اس شخص کے حق میں درخواست کرنا جس سے نافرمانی سرزد ہوئی شفاعت کہلاتا ہے۔

اس کی جامع تعریف اس طرح ہوگی کہ بندہ عاصی کا گناہ بکیرہ کے مرتکب ہونے کی صورت میں عذاب کے اندر تخفیف یا مکمل عذاب ساقط کرنے یا گناہ صغیرہ سے معافی یا برائیاں یکساں ہو جائیں تو جنت کے دخول اور بلند کی درجات کے لئے اللہ تعالیٰ کا کوئی مقبول بندہ بارگاہ کبریائی میں اللہ تعالیٰ کی طرف سے عطا کردہ عزت ووجاہت کی بناء پر کسی بندہ کی سفارش کرے شفاعت کہلاتا ہے۔

شفاعت کی اقسام: شفاعت کی مندرجہ ذیل نو قسمیں ہیں۔

(۱) شفاعت عظمیٰ: وہ شفاعت جو تمام مخلوقات کے لئے عام ہے اور ہمارے نبی کریم ﷺ کے ساتھ خاص ہے۔ یعنی انبیائے کرام میں سے کسی اور نبی کو اس پر جرات اور پیش قدمی کی مجال نہ ہوگی۔ اس شفاعت کا مقصد لوگوں کو آرام پہنچانا، میدان محشر میں کسی کو پریشانیوں سے چھٹکارا دلانا اور اللہ تعالیٰ کے فیصلہ و حساب کو جلدی کرانا ہے۔

(۲) شفاعت ثانیہ: شفاعت ثانیہ یہ ایک قوم کو بغیر حساب جنت میں داخل کرنے کے لئے ہوگی اور یہ شفاعت بھی ہمارے آقا مدنی مصطفیٰ ﷺ کے ساتھ خاص ہے۔

(۳) شفاعت ثالثہ: شفاعت ثالثہ ان لوگوں کے لئے ہوگی جن کی نیکیاں اور برائیاں یکساں ہوں گی۔

(۴) شفاعت رابعہ: یہ شفاعت ان لوگوں کے لئے ہوگی جن پر دوزخ واجب ہو چکی ہوگی سرکارِ دو عالم ﷺ ان لوگوں کی شفاعت کر کے جنت میں لائیں گے۔

(۵) شفاعت خامسہ: شفاعت خامسہ بلند کی درجات کے لئے ہوگی۔

(۶) شفاعت سادسہ: شفاعت سادسہ ان لوگوں کے لئے ہوگی جو جہنم رسید ہو چکے ہوں گے اور شفاعت کے سبب نکل جائیں گے۔ اور اس شفاعت میں دیگر انبیائے کرام، ملائکہ، علمائے کرام، اور شہدائے کرام بھی شامل ہیں۔

(۷) شفاعت سابعہ: شفاعت سابعہ جنت کھولنے کے لئے ہوگی۔

(۸) شفاعت ثمانیہ: شفاعت ثمانیہ کافروں کے عذاب میں تخفیف کے لئے ہوگی۔

(۹) شفاعت تسعہ: شفاعت تسعہ مدینہ والوں اور روضہ انور کی زیارت کرنے والوں کے لئے ہوگی۔

غیب کی تعریف

وہ پوشیدہ چیز جسے انسان حواس خمسہ یعنی کان، ناک، ہاتھ، زبان، اور آنکھ سے معلوم نہ کر سکے اور نہ بدلہ عقل اس کا ادراک کر سکے۔

پاکستانی کے لئے مدینہ غیب نہیں یا تو خود اپنی آنکھوں سے دیکھنے کی سعادت حاصل کر چکا ہے یا کسی حاجی وغیرہ سے سن کر کہہ رہا ہے۔ اسی طرح وہ پوشیدہ شے جو بذریعہ آلات جانی جائے وہ غیب نہیں کیونکہ یہ حواس سے معلوم ہوئی اور جو حواس سے معلوم ہو وہ غیب نہیں۔ لہذا کوئی آلہ چھپی چیز ظاہر کر دے تو وہ غیب نہیں جیسے ماں کے پیٹ میں بچہ یا بچی اگر آ لے سے معلوم ہو جائے تو غیب نہیں۔

غیب کی اقسام: غیب کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) جو دلائل سے معلوم ہو سکے جیسے جنت، جن و ملائکہ، کیونکہ قرآن پاک سے انہیں جا

تا گیا۔

(۲) جو دلائل سے معلوم نہ ہو سکے مثلاً انسان کب فوت ہوگا قیامت کب ہوگی، کون جنتی

ہے، کون دوزخی۔

غیب کے متعلق اہم امور: غیب کے متعلق تین باتوں کا ذہن نشین رکھنا بے حد ضروری ہے اور ان تینوں کا تعلق ضروریات دین سے ہے۔

(۱) اللہ تعالیٰ عالم الغیب بالذات ہے اس کا علم ذاتی ہے کسی کا عطا کردہ نہیں اور اللہ تعالیٰ

کے بغیر کوئی نبی یا ولی یا مومن ایک حرف تک نہیں جان سکتا۔

(۲) اللہ تعالیٰ نے اپنے محبوب ﷺ، انبیائے کرام اور دیگر مقررین کو علم غیب عطا فرمایا ہے۔

(۳) اللہ تعالیٰ نے سرکارِ دو عالم ﷺ کو تمام مخلوقات سے زیادہ علم غیب عطا فرمایا ہے۔

نور کی تعریف

نور ایک ایسی کیفیت ہے جو خود ظاہر ہو اور دوسرے کو ظاہر کر دے۔

نور کی اقسام: نور کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) مادی یعنی حسی (۲) معنوی۔

(۱) مادی: ایسا نور جس کو حواسِ خمسہ سے جانا جائے۔ جیسے چاند، سورج اور تارے کے ان میں جو روشن کیفیت ہے اسے نور کہتے ہیں۔

بعض مواقع پر حضور نبی کریم ﷺ سے نور حسی کا بھی ظہور ہوا ہے جیسا کہ حدیث پاک میں ہے۔

قال ابن عباس کان اذا تكلم رای كالنور یخرج من ثنایا۔
(ترمذی شریف)

ترجمہ: حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ نے فرمایا کہ رسول اللہ ﷺ کے سامنے کے دو دانتوں میں خلا تھا جب آپ ﷺ کوئی کلام ارشاد فرماتے تو سامنے کے دونوں دانتوں کے درمیان سے نور کی طرح نکلتا دکھائی دیتا۔

بخاری شریف کی روایت میں ہے۔

اللهم اجعل فی قلبی نورا و فی بصری نورا و فی سمعی نورا و عن یمینی نورا و عن یساری نورا و فوقی نورا و تحتی نورا و امامی نورا و خلفی نورا و اجعل لی نورا۔ (صحیح بخاری ج ۲ ص ۹۳۴)

ترجمہ: اے اللہ میرے قلم میں نور کر دے میری آنکھوں میں نور کر دے میری سماعت میں نور کر دے میرے دائیں نور کر دے میرے بائیں نور کر دے میرے اوپر نور کر دے میرے نیچے نور کر دے میرے آگے نور کر دے میرے پیچھے نور کر دے اور مجھے سراپا نور کر دے۔

علامہ ابن حجر عسقلانی رحمۃ اللہ علیہ اس حدیث کی تشریح کرتے ہوئے فرماتے ہیں کہ علامہ قرطبی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں حضور ﷺ خدا کی بارگاہ میں جن انوار کے لئے دست بدعا ہوئے ان سے نور حسی بھی مراد ہو سکتا ہے۔

(۲) نور معنوی: یعنی وہ صفت کہ جس کے ذریعے جہالت و گمراہی کی تاریکیوں کو دور کیا جا سکے اور یہ نور حواس سے نہیں جانا جا سکتا۔ یہی وجہ ہے کہ علم اور ہدایت کو بھی نور کہتے ہیں۔

یہ بات تو تسلیم شدہ ہے کہ سرکارِ دو عالم ﷺ علم کے اعتبار سے نور ہیں اور یہ بھی مسلمہ حقیقت ہے کہ کفر و شرک اور جہالت کے گھٹا ٹوپ اندھیروں کو دور کرنا فعلِ انبیاء ہے اور یہ بات ذہن نشین کر لینی چاہئے کہ افضل نور وہی ہے جو علم و ہدایت کا نور ہے۔ مذکورہ بالا تفصیل کے بعد جان لینا چاہئے کہ آپ ﷺ سے نوری کیفیت کا ظہور آپ ﷺ کی بشریت کے منافی نہیں۔ جیسے حضرت موسیٰ علیہ السلام کے ید بیضاء اور آپ کے بشر ہونے میں کوئی تنافی نہیں اور یہ بات بھی واضح ہے کہ حضور ﷺ کے بشر ہونے کے باوجود آپ ﷺ کے جسم کا سایہ نہ تھا آپ ﷺ کے دیگر فضائل طیب و طاہر تھے۔

اختیار کی تعریف

اللہ تعالیٰ نے رسول اللہ ﷺ کو بے شمار احکام تفویض فرمائے ہیں لہذا آپ جس چیز کو جس کے لئے چاہیں حلال فرمادیں اور وہی چیز دوسرے کے لئے حرام فرمادیں، جسے چاہیں جنت عطا فرمادیں اور جسے چاہیں جہنم کی وعید سنادیں۔ آپ کو یہ اختیار اللہ تعالیٰ کی طرف سے عطا ہوئے لہذا آپ کے اختیار عطا ہی ہیں۔

حکم: اختیاراتِ مصطفیٰ ﷺ کا منکر بے دین ہے۔

استمداد کی تعریف

استمداد کا لغوی معنی ہے مدد طلب کرنا اور اصطلاح میں اللہ تعالیٰ کے کسی مقرب و محبوب بندہ سے اللہ تعالیٰ کی مدد کا مظہر جان کر اور واسطہ رحمت الہی اور غیر مستقل ذات تصور کر کے مدد مانگنا استمداد کہلاتا ہے۔ چاہے مستمد مند (جس سے مدد مانگی جائے) زندہ ہو یا وصال فرما گیا ہو۔

حکم: مذکورہ بالا تعریف کے تحت کسی بھی نبی یا ولی سے مدد مانگنا جائز ہے لیکن اصل اور افضل یہی ہے کہ اللہ تعالیٰ ہی سے مدد مانگی جائے۔ اور اگر مذکور بالا تعریف کے تحت کسی کے مدد مانگنے کو کسی نے شرک یا بدعت کہا تو قائل خود شرک یا بدعتی ہو جائے گا کیونکہ کسی مسلمان کو شرک کہنا خود کفر ہے۔

میلا د کی تعریف

اصطلاح میں رسول اللہ ﷺ کی ولادت پاک کا واقعہ بیان کرنا، حمل شریف کے واقعات، نور محمدی کی کرامات، نسب نامہ یا شیر خوارگی اور حضرت علیہ کے یہاں پرورش حاصل کرنے کے واقعات بیان کرنا، حضور نبی کریم ﷺ کی نعت شریف پڑھنا، خواہ واقعہ ولادت تنہائی میں ہو یا مجلس جمع کر کے نظم میں ہو یا شعر میں، کھڑے ہو کر ہو یا بیٹھ کر جس طرح بھی ہو میلا د النبی کہلاتا ہے۔

حکم: محفل میلا د منعقد کرنا اور ولادت پاک کی خوشی منانا، اس کے ذکر کے موقع پر خوشبو لگانا، گلاب چھڑکنا، شیرینی تقسیم کرنا، جلے جلوس کا اہتمام کرنا نیز ہر قسم کی خرافات سے بچ کر ولادت کی خوشی منانا جائز و مستحسن اور بہت ہی باعث برکت اور رحمت الہی کے نزول کا سبب ہے اور اس کو بدعت کہنے والا بدعتی ہے۔

ایصال ثواب کی تعریف

کسی انسان کا اپنے نیک اعمال کا ثواب کسی زندہ یا مردہ مسلمان کو ہدیہ کرنا ایصال ثواب کہلاتا ہے بشرطیکہ اس کی موت ایمان پر ہوئی ہو۔ اب چاہے ان اعمال کا تعلق خالص بدنی عبادات مثلاً نماز،

روزہ وغیرہ سے ہو یا فقط مالی عبادات مثلاً صدقات وغیرہ سے ہو یا بدنی و مالی سے مرکب عبادات مثلاً حج وغیرہ سے ہو ایصال کرنا جائز ہے۔ گیارہویں شریف، امام جعفر صادق کے کوٹھے، خولجہ غریب نواز کی چٹھی، دسواں، چالیسواں وغیرہ یہ سب ایصال ثواب کی صورتیں ہیں۔

حکم: ایصال ثواب اپنے مسلمان بھائی کے ساتھ بھلائی کرنا ہے اس لئے یہ ایک جائز اور مستحسن عمل ہے۔ ثواب ایصال کرنے سے کمی نہیں بلکہ ثواب میں انشاء اللہ مزید اضافہ ہوگا۔ اس کا منکر بے دین ہے۔

ثواب کی تعریف

وہ چیز کہ جس کے سبب انسان اللہ تعالیٰ کی رحمت و مغفرت اور رسول اللہ ﷺ کی شفاعت کا حقدار بن جائے ثواب کہلاتا ہے۔

سجدہ کی تعریف

شرعی اعتبار سے زمین پر سات اعضاء (۱۔ دونوں ہاتھ ۲۔ دونوں گھٹنے ۳۔ دونوں ہاتھ ۴۔ ناک اور پیشانی) کا پرنیت عبادت لگنا سجدہ کہلاتا ہے۔

سجدہ کی اقسام: سجدہ کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) سجدہ عبادت (۲) سجدہ تحیہ۔

(۱) سجدہ عبادت: کسی غیر اللہ کو خدا، یا خدا کی طرح اعتقاد رکھتے ہوئے سجدہ کرنا سجدہ عبادت کہلاتا ہے۔

حکم: عبادت کی نیت سے غیر اللہ کو سجدہ کرنا شرک ہے اور ایسا کرنے والا مشرک و کافر ہے۔ کسی بھی نبی کے دین میں یہ سجدہ جائز نہیں تھا۔

(۲) سجدہ تحیہ: کسی کی ملاقات کے وقت اس کی تعظیم کی نیت سے سجدہ کرنا سجدہ تحیہ ہے۔

حکم: یہ سجدہ سابقہ شریعتوں میں جائز تھا پھر شریعت محمدی نے اس کو حرام قرار دے دیا لہذا اگر کسی مسلمان نے غیر اللہ کو سجدہ تجویز کیا تو سخت گناہ گار ہوگا مگر مشرک و کافر نہیں۔

تقدیر کی تعریف

لغوی معنی اندازہ کرنا اور اصطلاح میں وہ فیصلہ جو رب تعالیٰ کی طرف سے اپنی مخلوق کے متعلق تحریر میں آچکا تقدیر کہلاتا ہے۔

ایک شبہ کا ازالہ: جو بھی نفع و نقصان انسان کو پہنچنے والا تھا یا جو اچھائی یا برائی وہ کرنے والا تھا سب لوح محفوظ پر لکھ دیا گیا یہ نہیں کہ جیسا لکھا گیا ویسا ہمیں کرنا پڑتا ہے بلکہ جیسا ہم کرنے والے تھے ویسا اللہ تعالیٰ نے اپنے علم ذاتی سے لکھ دیا۔ یاد رہے کہ شراب و زنا وغیرہ گناہ انسان اپنے اختیار سے کرتا ہے اور اس فعل پر قدرت اللہ تعالیٰ کی طرف سے ہوتی ہے لہذا انسان نہ تو مجبور محض ہوا اور نہ مختار کل۔

تقدیر کی اقسام: تقدیر کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) مبرم حقیقی: اس تقدیر کے اندر تبدیلی ناممکن ہے کسی طور بھی نہیں مل سکتی۔ مثلاً موت، قیامت قائم ہونا وغیرہ۔

(۲) معلق محض: یہ تقدیر اکثر اوقات اولیائے کرام کی دعاؤں سے ٹل جاتی ہے۔ جیسے حضور غوث اعظم رحمۃ اللہ علیہ کا اپنے مرید کے ستر عورتوں کے ساتھ زنا کو اپنی دعا سے سبب احتلام میں تبدیل کروادینا۔

(۳) معلق مشابہ مبرم: اس تقدیر تک خواصین کی رسائی ہوتی ہے۔ جیسے انبیائے کرام یا فرشتوں کی دعا سے یہ تقدیر بدل سکتی ہے۔

خبردار: تقدیر کے مسائل میں غور و فکر کرنا سبب ہلاکت ہے۔ نظر نہ آئے۔ بقیہ اور حضرت فاروق اعظم کو اس

مسئلہ میں بحث کرنے سے روک دیا گیا تو ہماری کیا مجال کہ ہم اس میں بحث کریں۔

وسیلہ کی تعریف

وسیلہ اصل میں ہر اس چیز کو کہتے ہیں کہ جس کے سبب کسی شے تک رسائی حاصل ہو اور اس شے کا قرب حاصل ہو جائے۔

عقیدہ: وسیلہ دعا کے طریقوں میں سے ایک طریقہ ہے اور توجہ الی اللہ کے دروازوں میں سے ایک دروازہ ہے مقصود اصلی حقیقی وہ صرف اور صرف اللہ تعالیٰ کی ہی ذات اقدس ہوتی ہے اور جس کو وسیلہ بنایا جاتا ہے وہ تو ایک واسطہ ہی ہوتا ہے اور تقرب الی اللہ کا ذریعہ ہوتا ہے۔ وسیلہ پکڑنے والا جس واسطہ کو بھی وسیلہ بناتا ہے وہ صرف اس وجہ سے بناتا ہے کہ اس بندہ کو اس سے محبت ہے اور یہ عقیدہ رکھتا ہے کہ اللہ تعالیٰ بھی اس واسطہ کو محبوب رکھتا ہے۔ وسیلہ اختیار کرنے والے اگر یہ اعتقاد کر کے وسیلہ کریں کہ جس کو وسیلہ بناتا ہے وہ بذات خود وسیلہ اللہ تعالیٰ کی مثل نفع و نقصان کر سکتا ہے تو بے شک وسیلہ بنانے والا مشرک ہو جائے گا۔

عصمت کی تعریف

گناہ کر سکنے کے باوجود گناہوں سے بچنے کا ملکہ پیدا کرنا عصمت کہلاتا ہے۔

حقیقت عصمت یہ ہے کہ اللہ تبارک و تعالیٰ بندے کے اندر اس کی قدرت و اختیار کے باوجود گناہ کو پیدا نہ کرے۔ عصمت اللہ تعالیٰ کا ایک ایسا لطف ہے جو بندے کو خیر کے کاموں پر براہیختہ کرتا ہے اور برے کاموں سے روکتا ہے حالانکہ بندے کو گناہ پر اختیار ہوتا ہے۔

عقیدہ: نبی کا معصوم ہونا ضروری ہے اور یہ عصمت نبی اور فرشتے کا خاصہ ہے کہ نبی اور فرشتے کے سوا کوئی معصوم نہیں۔ اماموں کو انبیاء کی طرح معصوم کہنا یا سمجھنا گمراہی اور بددینی ہے انبیاء کے لئے حفظ الہی کا وعدہ ہے جس کے سبب ان سے گناہ کا صدور شرعاً محال ہے بخلاف ائمہ اور اولیاء کے کہ

اللہ تعالیٰ انہیں محفوظ رکھتا ہے ان ائمہ و اولیاء سے گناہ ہوتا نہیں مگر ہو تو شرعاً محال بھی نہیں۔

عبادت کی تعریف

مكلف (جس کی طرف احکام شریعت متوجہ ہوں) کا ہر وہ فعل جو اس کی خواہشات نفس کے خلاف اور اللہ تعالیٰ کی تعظیم کے سبب ہو عبادت کہلاتا ہے۔

ایک تعریف اس طرح بھی ہے۔

اللہ تعالیٰ کی عظمت بیان کرنے اور اس کے لئے خشوع کا اظہار کرنے کا نام عبادت ہے۔

اقسام: عبادت کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) بدنی عبادت: وہ عبادت جس میں انسان کا بدن استعمال ہو۔ جیسے وضو، نماز، روزہ۔

حکم: بدنی عبادت میں ایک شخص دوسرے کی طرف سے کسی بھی صورت ادا نہیں کر سکتا۔

(۲) مالی عبادت: وہ عبادت جس میں فقط مال استعمال ہو۔ جیسے زکوٰۃ، فطرہ، صدقہ وغیرہ۔

حکم: مالی میں ایک شخص دوسرے کی طرف سے ادا کر سکتا ہے۔ جیسے زکوٰۃ، صدقہ وغیرہ۔

(۳) بدنی و مالی سے مرکب عبادت: جس میں مال و بدن دونوں استعمال ہوں۔ جیسے حج

وغیرہ۔

حکم: بدنی و مالی سے مرکب عبادت میں اگر خود عاجز ہے تو اس کی طرف سے دوسرا ادا کر سکتا

ہے ورنہ نہیں۔ جیسے حج۔

ایمان و اسلام کی تعریف

لغوی معنی دل کے ساتھ تصدیق کرنا اور شرعی معنی دل کے اعتقاد اور زبان سے اقرار کا نام ایمان ہے۔

ایک تعریف یوں کی گئی ہے کہ اللہ تعالیٰ کی وحدانیت والوہیت اور سرکار دو عالم ﷺ کی رسالت و

نبوت کی زبان و دل سے گواہی دینا ایمان کہلاتا ہے۔

ایک تعریف اس طرح بھی کی گئی ہے۔

باطنی اعتقادات کا نام ایمان ہے اور ظاہری اعتقادات کا نام اسلام ہے۔

مثلاً زبان سے کلمہ پڑھنا اسلام ہے اور دل سے اس کا اعتقاد رکھنا ایمان کہلاتا ہے۔

لعنت کی تعریف

لعنت کا لغوی معنی ہے عذاب۔

عذاب کی اقسام: عذاب کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) دائمی عذاب۔ (۲) عارضی عذاب۔

دائمی عذاب: یہ کفار کے ساتھ مخصوص ہے۔

عارضی عذاب: یہ عذاب گناہ گار مومن کے ساتھ خاص ہے۔

قرآن و سنت سے ثابت ہے کہ لعنت اوصاف کے اعتبار سے بھی ہوتی ہے اور ذات کے اعتبار سے بھی۔

اوصاف کے اعتبار سے لعنت کی اقسام: اوصاف کے اعتبار سے لعنت کی دو

قسمیں ہیں۔

(۱) کفر کے اعتبار سے اوصاف پر لعنت۔

جیسے ارشاد باری تعالیٰ ہے: **فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَافِرِينَ**، کافروں پر اللہ کی

لعنت ہو۔

یہ لعنت دائمی عذاب کے معنی میں ہے۔

(۲) گناہ کبیرہ کے اعتبار سے اوصاف پر لعنت

جیسے ارشاد ہوتا ہے: **لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ**، جھوٹوں پر اللہ کی لعنت۔

یہ لعنت عارضی عذاب کے معنی میں ہے۔

ذات کے اعتبار سے لعنت: جن لوگوں کی موت حتمی طور پر کفر پر ہوئی اور ان کے کافر ہونے کے ذرا برابر شک نہ ہو جیسے ابولہب، ابوجہل، فرعون، یا نمرود وغیرہ ان لوگوں کا نام لے کر دائمی عذاب کے معنی میں لعنت کرنا جائز ہے۔ لیکن وہ شخص کہ جسکی موت کا کفر پر ہونا معلوم نہ ہو اس پر ہرگز لعنت نہیں کر سکتے بلکہ لعنت کرنے والا گناہ گار ہوگا۔

معراج کی تعریف

لفوی معنی کے اعتبار سے وہ شے جو سیرمی سے مشابہت رکھتی ہو جس کے ذریعے رو جس اوپر چڑھتی ہیں۔

علامہ تفتازانی اس کی اصطلاحی تعریف کرتے ہوئے لکھتے ہیں۔

سرکارِ مدینہ ﷺ کا بیداری کی حالت میں اپنے جسم کے ساتھ آسمانوں تک جانا پھر اللہ تعالیٰ نے اپنے محبوب ﷺ کو جہاں تک چاہا سیر کرائی اسے معراج کہتے ہیں۔

حکم: معراج کا منکر بدعتی ہے۔

باب العبادات

شریعت، طریقت، حقیقت

دلیل باری رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں

اسلام اسلامیہ کے ظاہر کو شریعت، اس کے باطن کو طریقت اور ان دونوں کے خلاصہ کو حقیقت کہتے ہیں۔

شریعت بدن کا حصہ ہوتی ہے، طریقت دل کا اور حقیقت روح کا حصہ۔ شریعت میں احکام شرعی کی احاطت ہوتی ہے، طریقت میں علم اور معرفت کی اور حقیقت میں اللہ تعالیٰ کے مشاہدہ کی۔

یاد رہے کہ شریعت و طریقت کے احکام الگ الگ نہیں ہیں۔

(۱) اگر شریعت، حقیقت کی تائید نہ کر رہی ہو تو وہ غیر مقبول ہے۔

(۲) اور اگر حقیقت شریعت سے مقید نہیں تو غیر معتبر ہے۔

(۳) شریعت منع ہے اور طریقت اس میں سے نکلا ہوا ایک دریا۔ کسی منبع سے اگر دریا بہتا

ہوگا اسے زمینوں کو سیراب کرنے میں منبع کی حاجت نہیں ہوتی لیکن شریعت وہ منبع ہے کہ اس سے

نکلا ہوا دریا یعنی طریقت کو ہر آن شریعت کی حاجت ہے۔ اگر شریعت کے منبع سے طریقت کے

دریا کا تعلق ٹوٹ جائے تو صرف یہی نہیں کہ آئینہ کے لئے اس میں پانی نہیں آئے گا بلکہ یہ تعلق

نکال دیا جائے طریقت فوراً فنا ہو جائے گا۔ (امام اہل سنت)

(۴) یہ خیال کرنا کہ اہل معرفت ایسے مقام پر پہنچ جاتے ہیں کہ جہاں ان کو عمل کی

ضرورت نہیں رہتی اور وہ ظاہری اعمال چھوڑ دیتے ہیں گناہ عظیم ہے اور جو شخص اس بات کا قائل ہو

اس سے تو چہرہ اور زانی بہتر ہے۔ (حضرت جنید

بغدادی)

(۵) ہماری طریقت قرآن و سنت کے ساتھ مشروط ہے اور راہ طریقت نبی کریم ﷺ کی

پیردی اور سنت کی تابعداری کے بغیر طے نہیں ہو سکتی۔ (حضرت جنید بغدادی)۔

(۶) طریقت کو شریعت سے آزاد تصور کرنے والا احمقوں کی جنت میں رہتا ہے۔
(قادری غفرلہ)

پیر کی تعریف

ایسا شخص جو صراطِ مستقیم کی طرف رہنمائی کرے پیر یا مرشد کہلاتا ہے۔

پیر کی شرائط: پیر کے لئے مندرجہ ذیل شرائط کا ہونا ضروری ہے۔

(۱) صحیح العقیدہ ہونی ہو۔

(۲) اس کا سلسلہ طریقت حضور ﷺ سے جا کر ملتا ہو۔

(۳) عالم ہو یعنی تمام عقائد سے واقف ہو اور اپنی ضرورت کے مسائل بغیر کسی کی مدد کے کتابوں سے نکال سکتا ہو۔

(۴) فاسق معلن نہ ہو یعنی علانیہ کبیرہ گناہ نہ کرتا ہو۔

حکم: اگر کسی پیر میں مذکورہ بالا شرائط میں سے کوئی بھی کم ہو تو اس کی بیعت جائز نہیں۔

دین، شریعت، مذہب، ملت، مسلک، مکتب فکر

(۱) دین: وہ عقائد جو تمام انبیائے کرام میں مشترک ہوں انہیں دین کہتے ہیں۔
توحید، رسالت، جزا، جزا، جنت، دوزخ وغیرہ۔

(۲) شریعت: ہر نبی نے اپنے زمانہ نبوت میں عبادات و طریقہ حیات وغیرہ کے جو مخصوص احکام اپنی اپنی امتوں کو بتائے انہیں شریعت کہتے ہیں۔

(۳) ملت: ان تمام احکام کو مدون کرنا ملت کہلاتا ہے۔

(۴) مذہب: کسی مجتہد نے کتاب اللہ و سنت رسول ﷺ سے جو احکام نکالے اس کو

مذہب کہتے ہیں۔

(۵) مسلک: ائمہ طریقت و مشائخ طریقت نے اوراد و وظائف کے جو مخصوص طریقے مان لئے انہیں مسلک کہتے ہیں۔

(۶) مکتب فکر: کسی مخصوص درس گاہ کے نظریات کو مکتب فکر کہتے ہیں۔

نتیجہ: مذکورہ بالا وضاحت سے نتیجہ اخذ ہوا کہ ہم دین کے اعتبار سے مسلمان ہیں، شریعت کے اعتبار سے محمدی ہیں، مذہب کے اعتبار سے حنفی ہیں، مسلک کے اعتبار سے قادری ہیں اور مکتب فکر کے اعتبار سے بریلوی ہیں۔

نیت کی تعریف

لہوئی معنی ارادہ کرنا اور شرعی طور پر اللہ تعالیٰ کی خوشنودی حاصل کرنے اور اس کے حکم کی پیروی کرنے کے لئے کسی کام کی طرف متوجہ ہونے والا ارادہ نیت کہلاتا ہے۔

ایک تعریف یہ ہے کہ کسی کام کے کرنے میں اللہ تعالیٰ کی اطاعت اور اس کے قرب کے حصول کا قصد کرنا نیت کہلاتا ہے۔

حکم: جب تک کوئی عمل خالصۃ اللہ تعالیٰ کی خوشنودی اور اس کی بارگاہ کا قرب حاصل کرنے کے لئے پورے انہماک اور کمال توجہ سے نہ کیا جائے جب تک اس پر ثواب حاصل نہیں ہوگا۔

علم کی تعریف

کسی شے کی صورت کا عقل میں حاصل ہونا یا عالم کے ذہن میں کسی چیز کا انکشاف علم کہلاتا ہے۔ اگر علم کسی بشر کے واسطے سے حاصل ہو تو علم کہی ہے اور اگر بلا واسطہ حاصل ہو تو علم لدنی ہے۔

علم لدنی کی اقسام: علم لدنی کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) وحی (۲) الہام (۳) فراست۔

وحی کی تعریف

ملا علی قاری رحمۃ اللہ علیہ وحی کی تعریف کرتے ہوئے فرماتے ہیں اصطلاحی معنی کے اعتبار سے وحی وہ کلام الہی ہے جو نبی اکرم ﷺ کے قلب مبارک منور میں آئے اگر یہ کلام الفاظ و معانی کا مجموعہ ہو اور جبرائیل امین کے واسطے سے نازل ہو تو اس کو وحی جلی کہتے ہیں جیسے قرآن پاک۔ اور اگر اس کلام کا نزول صرف معانی کی صورت میں ہو اور اس کو حضور ﷺ اپنے الفاظ سے تعبیر فرمائیں تو وہ وحی خفی کہلاتا ہے جسے حدیث بھی کہتے ہیں۔

الہام کی تعریف

ہر وہ علم جو قلب میں واقع ہو الہام کہلاتا ہے اور یہ عمل کی طرف دعوت دیتا ہے نہ تو قرآن سے اس کا ثبوت ہوتا ہے اور نہ ہی کسی دوسری دلیل سے۔

الہام کا حکم: علمائے کرام کے نزدیک یہ حجت نہیں لہذا اس سے کوئی حکم ثابت نہیں ہو سکتا۔

الہام اور وحی میں فرق:

وحی الہام کے تابع نہیں ہوتی جبکہ الہام وحی کے تابع ہوتا ہے۔ اور وحی سے جو علم حاصل ہوتا ہے قطعی ہوتا ہے جبکہ الہام سے علم ظنی حاصل ہوتا ہے۔

فراست کی تعریف

فراست وہ علم ہے جس میں ظاہری صورت کو دیکھ کر علوم غیبیہ منکشف ہوتے ہیں الہام میں ظاہری صورت کا واسطہ نہیں ہوتا بلکہ واسطہ کشف ہوتا ہے اور فراست میں ظاہری صورتوں کا واسطہ ہوتا ہے۔

عوام و خواص کے اعتبار سے علم کی تقسیم: امام بیہقی فرماتے ہیں علم کی دو قسمیں ہیں۔ (۱) خواص کا علم (۲) عوام کا علم۔

خواص کا علم: احکام شریعہ، قرآن پاک کی واضح عبارات، دلالات وغیرہ کا جاننا اور علم حدیث و قیاس کا علم اور شرائط اور روزمرہ کے پیش آنے والے مسائل کا قرآن و سنت سے حل عوام الناس کو بتانا یہ خواصین کا علم ہے۔

عوام کا علم: فرائض و واجبات اور حرام و مکروہ چیزوں کا علم رکھنا عوام الناس کے لئے ضروری ہے۔

حصول علم کے اعتبار سے علم کی تقسیم: شرعی طور پر حصول علم کی چھ قسمیں ہیں۔

(۱) فرض علم: پہلی قسم وہ علم ہے جس کا حاصل کرنا شرعی طور پر ہر مسلمان مرد و عورت پر فرض میں ہے۔ جیسے عقائد کا علم، اسلام کے بنیادی ارکان کا علم، فرائض و واجبات کا علم، حلال و حرام کا علم وغیرہ۔

(۲) فرض کفایہ: وہ علم کہ جس کا حاصل کرنا شریعت میں فرض کفایہ ہو یعنی جس کا حاصل کرنا اور نہ کرنا ضروری تو ہو مگر ہر فرد پر نہیں بلکہ کچھ لوگ بھی کر لیں تو فرض ادا ہو جائے گا۔ جیسے علم لغت، علم طب، وراثت کا علم، تاریخ و منسوخ کا علم وغیرہ۔

(۳) مستحب علم: ایسا علم کہ جس کا حاصل کرنا شرعاً افضل و مستحب ہو جیسے علم فقہ میں مہارت حاصل کرنا اور اس کی باریکیوں پر نظر رکھنا، تفقہ فی الفقہ وغیرہ کا علم۔

(۴) مباح علم: وہ علم جس کا حاصل کرنا مباح ہو جیسے وہ اشعار کہ جن میں نہ کسی مسلمان کی جھوٹ اور نہ اس کی مذمت ہو اور ہر وہ دنیاوی علوم جن میں شرعاً کوئی قباحت نہ ہو وغیرہ۔

(۵) مکروہ علم: وہ علم جس کا حاصل کرنا مکروہ و ناجائز ہو۔ جیسے عشقیہ اشعار کا علم جن میں عورتوں کا حسن بیان کیا جائے یا مسلمانوں کی جھوٹ بیان کی جائے یا جن میں ہجو و وصال اور شباب و

باب کی باتیں ہوں۔

(۶) حرام علم: وہ علم جس کا حصول حرام ہو۔ جیسے فلسفہ کا وہ علم جس میں عالم کے قدیم ہونے، خدا کا انکار کرنے، آسمانوں کے وجود کا انکار کرنے اور دیگر کفریات و مخرمات کی تعلیم دی جاتی ہو۔ لیکن اگر کوئی شخص اپنے اسلام کی پختگی کے ساتھ ان کا رد کرنے کے لئے اور لوگوں کو ان کی گمراہی سے بچانے کے لئے اس علم کو حاصل کرے تو جائز ہے۔ اسی طرح شعبہ بازی، جادو کا علم وغیرہ سب کا حاصل کرنا حرام ہے۔

شعور کی تعریف

ہر وہ چیز کہ جسے عقل سے جانا جائے علم کہلاتا ہے اور جو چیز حواس سے معلوم ہوا سے شعور کہتے ہیں۔ شعور کی ایک تعریف اس طرح بھی کی گئی ہے کہ جو چیز بار بار کے تجربات سے حاصل ہوا سے شعور کہتے ہیں۔

ناسخ کی تعریف

ایک دلیل شرعی کے بعد ایک اور دلیل شرعی آئے جو پہلی دلیل شرعی کے حکم کے خلاف کو واجب کرے یا ایسی دلیل شرعی جس سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ اس ناسخ سے پہلے جو حکم کسی دلیل شرعی سے ثابت تھا وہ حکم اب نہیں ناسخ یا نسخ کہلاتا ہے۔

منسوخ آیات کی تعداد: علامہ جلال الدین سیوطی کے نزدیک بیس آیتوں کا حکم منسوخ ہے

منسوخ ہونے کی حکمتیں: آیات کے منسوخ ہونے کی مندرجہ ذیل حکمتیں ہیں۔

(۱) مشکل حکم کی آسان حکم میں تبدیلی: بعض آیات ایسی ہیں کہ جس میں کسی حکم میں تخفیف کی وجہ سے منسوخ کر دیا گیا تاکہ مسلمان اللہ تعالیٰ کا شکر ادا کریں کہ اس نے مشقت

سے انہیں نجات دی اور آسان حکم مشروع فرما دیا۔

جیسے دل میں آنے والے خطرات پر بھی محاسبہ اور مواخذہ کا ہونا لیکن بعد میں اسے منسوخ کر کے معاف کر دیا گیا۔

(۲) آسان حکم کی مشکل حکم میں تبدیلی: بعض منسوخ احکام آیات ایسی ہیں جن

میں آسان حکم کو منسوخ کر کے مشکل احکام مشروع کئے گئے ان کی حکمت یہ ہے کہ جب نبی کریم ﷺ نے لوگوں کو اسلام کی دعوت دی تو وہ زبانہ فترت تھا اور برسوں سے جو عقائد عادات اور معمولات ان میں رچ بس گئے تھے وہ ان کی فطرت بن چکے تھے اور یک لخت ان تمام چیزوں سے ان کو چھڑانا بہت مشکل تھا کیونکہ اگر ایسا کیا جاتا تو خدشہ تھا کہ وہ اسلام کو ہی چھوڑ دیں۔

جیسے شراب کے حلال ہونے کے بعد اس کو حرام قرار دینا۔

(۳) بعض احکام کا مشکل اور سہل ہونے میں نسخ کے مساوی ہونا: بعض احکام

ایسے تھے کہ جو مشکل اور سہل ہونے میں نسخ کے مساوی تھے ان کو منسوخ کرنے کی حکمت یہ تھی کہ مسلمانوں کی آزمائش کی جائے اور انہیں امتحان میں ڈالا جائے تاکہ مومنوں اور منافقوں میں امتیاز ہو جائے، طیب اور خبیث الگ الگ ہو جائیں۔

جیسے بیت المقدس کے قبلہ ہونے کو منسوخ کر کے بیت اللہ کو قبلہ بنانا۔

تفسیر کی تعریف

تفسیر کا لغوی معنی ہے کشف اور ظاہر کرنا اور اصطلاح شرع میں واضح لفظوں کے ساتھ آیت کے معنی کو بیان کرنا اس سے مسائل مستبطہ کرنا اس کے متعلق احادیث و آثار بیان کرنا اور اس کا شان نزول بیان کرنا تفسیر کہلاتا ہے۔

تاویل کی تعریف

لغوی معنی ہے لونا نا اور شریعت کی اصطلاح میں ایک لفظ کو اس کے ظاہری معنی سے ہٹا کر ایک ایسے

معنی پر محمول کرنا جس کا وہ احتمال رکھتا ہو اور وہ احتمال کتاب اللہ اور سنت رسول کے موافق ہو تاویل کہلاتا ہے۔

مثلاً،،،،، یخرج الحي من الميت ،،،،، ترجمہ: وہ مردے سے زندہ کو نکالتا ہے۔

اگر اس آیت میں انڈے سے پرندے کو نکالنا مراد ہو تو تفسیر ہے اور اگر کافر سے مومن کو پیدا کرنا یا جاہل سے عالم کو پیدا کرنا مراد ہو تو یہ تاویل ہے۔

تفسیر اور تاویل میں فرق: جس لفظ کا صرف ایک معنی ہو اس کو بیان کرنا تفسیر ہے اور جس لفظ کے کئی معنی ہوں تو دلیل سے کسی ایک معنی کو بیان کرنا تاویل ہے۔

تفسیر بالرائے کی تعریف: قطعیت کے ساتھ بیان کرنا کہ قرآن کے اس لفظ کا یہ معنی ہے اور اس بات کی شہادت دینا کہ اللہ تعالیٰ نے اس لفظ سے یہ معنی مراد لیا ہے اور یہ شہادت دلیل قطعی کی بناء پر ہو تو یہ تفسیر صحیح ہے اور اگر ایسا نہ ہو تو یہ تفسیر بالرائے ہے اور یہ ممنوع ہے۔

قرآن کی تعریف

وہ کتاب جو نبی کریم ﷺ پر نازل کی گئی اور نقل متواترہ کے ساتھ مصحف میں تحریر شدہ ہے اور اس کی تلاوت کرنا عبادت ہے۔

حدیث قدسی کی تعریف

وہ حدیث ہے کہ جس میں کلام اللہ تعالیٰ کا ہو اور راوی رسول اللہ ﷺ ہوں۔ یا جس میں قول کی نسبت اللہ تعالیٰ کی طرف ہو۔

جیسے عن ابی ہریرۃ ان رسول اللہ ﷺ قال يقول الله تعالى ان عند ظن عبدي۔

ترجمہ: حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا کہ اللہ تعالیٰ فرماتا

ہے بندہ جیسا مجھ سے گمان کرتا ہے میں اس کے ساتھ ویسا ہی سلوک کرتا ہوں۔

قرآن اور حدیث قدسی میں فرق:

قرآن اور حدیث قدسی میں درج ذیل صورتوں میں فرق ہے۔

(۱) قرآن کے الفاظ و معانی دونوں اللہ تعالیٰ کی طرف سے ہوتے ہیں لیکن حدیث قدسی کے معانی اللہ تعالیٰ کی طرف سے ہوتے ہیں اور الفاظ میں دو قول ہیں۔

(!) بعض کے نزدیک الفاظ بھی اللہ تعالیٰ کی طرف سے ہوتے ہیں۔

(!!) بعض کے نزدیک الفاظ حضور ﷺ کے ہوتے ہیں۔

(۲) قرآن مجید نبی کریم ﷺ کا معجزہ ہے جبکہ حدیث قدسی معجزہ نہیں۔

(۳) قرآن تواتر سے منقول ہے اور علم قطعی کا فائدہ دیتا ہے جبکہ حدیث قدسی اکثر علم ظنی کا فائدہ دیتی ہے۔

(۴) قرآن میں کسی قسم کی تبدیلی نہیں ہو سکتی جبکہ حدیث قدسی میں روایت بالمعنی (کلمات و حروف میں تبدیلی) جائز ہے۔

(۵) قرآن کی تلاوت نماز میں جائز جبکہ حدیث قدسی کی تلاوت نماز میں جائز نہیں ہے

(۶) جنتی، جنّی، نفاس والی عورت قرآن کو نہیں چھو سکتے جبکہ حدیث قدسی کو چھونا جائز لیکن منافی ادب ضرور ہے۔

حدیث کی تعریف

رسول اللہ ﷺ یا صحابی یا تابعی کے قول، فعل اور تقریر کو حدیث کہتے ہیں۔

تقریر: سرکارِ دو عالم ﷺ کے سامنے کوئی کام کیا گیا اور آپ نے اس پر خاموشی اختیار فرمائی اس کو تقریر کہتے ہیں۔

حدیث کی اقسام: نسبت کے اعتبار سے حدیث کی تین قسمیں ہیں۔

حدیث مرفوع: وہ حدیث پاک جس میں قول، فعل، تقریر کی نسبت رسول اللہ ﷺ کی طرف ہو

مثال: عن ابی ہریرہ قال قال رسول اللہ ﷺ

حدیث موقوف: وہ حدیث پاک جس میں قول، فعل اور تقریر کی نسبت صحابی کی طرف ہو۔

مثال: عن سعید بن مسیب قال قال علی رضی اللہ عنہ

حدیث مقطوع: وہ حدیث پاک جس میں قول، فعل اور تقریر کی نسبت تابعی کی طرف ہو۔

مثال: عن ابی یوسف قال قال ابو حنیفہ رضی اللہ عنہ

مراتب کے اعتبار سے حدیث کی اقسام: اس کی مندرجہ ذیل قسمیں ہیں۔

(۱) حدیث متواترہ: وہ حدیث جس کے اتنے کثیر راوی ہوں کہ جن کا جھوٹ پر جمع ہونا عقلاً محال ہو اور یہ کثرت ہر زمانے میں یکساں اور غیر معین رہے۔

جیسے حدیث من کذب علی متعمدا فلیتبوا مقعده من النار۔

ترجمہ: جو مجھ پر جان بوجھ کر جھوٹ بولے یعنی میری طرف غلط بات منسوب کرے اسے چاہئے کہ وہ دوزخ میں اپنا ٹھکانہ بنالے۔

حکم: حدیث متواترہ سے علم قطعی یقینی حاصل ہوتا ہے لہذا اس حدیث کا انکار کفر ہے۔

(۲) حدیث صحیح: وہ حدیث پاک جس کے راوی کثیر تو نہ ہوں لیکن عادل، تام الضبط اور ثقہ (قابل بھروسہ) ہوں اور اس حدیث میں کوئی علت قادحہ (عیب دار) نہ ہو۔

حکم: اس حدیث کا انکار کفر نہیں لیکن اس کا منکر فاسق و فاجر ہے۔

(۳) حدیث حسن: وہ حدیث جس کے راوی تام الضبط تو نہ ہوں لیکن باقی تمام

صفات صحیح دالی ہوں اور اس ضبط کو متعدد طرق سے پورا کیا جاسکے۔

حکم: اس کا حکم وہی ہے جو حدیث صحیح کا ہے۔

(۴) حدیث ضعیف: وہ حدیث جس میں صحیح حدیث کی بعض صفات مفقود ہو

جائیں اور دوسرے طرق سے یہ کمی پوری نہ ہو سکے۔

حکم: فضائل اعمال میں یہ حدیث معتبر ہے۔

(۵) حدیث موضوع: وہ حدیث کہ جس میں راوی پر حدیث نبوی میں جھوٹ بولنے کا

ظن موجود ہو یعنی کوئی روایت اپنی طرف سے بیان کر کے اس کی نسبت رسول اللہ ﷺ کی طرف کر

دے۔

حکم: حدیث موضوع سے کوئی حکم ثابت نہیں ہوتا اور نہ ہی اس کو بیان کرنا جائز ہے۔

(۳) تعداد روایات (راوی کی جمع) کے اعتبار سے حدیث کی اقسام: اس کی تین قسمیں

ہیں۔

(۱) حدیث مشہور: وہ حدیث پاک جس کے کسی مقام پر کم از کم تین راوی ہوں۔

(۲) حدیث عزیز: وہ حدیث پاک جس کے کسی مقام پر کم از کم دو راوی ہوں۔

(۳) حدیث غریب: وہ حدیث پاک جس کے کسی مقام پر کم از کم ایک راوی ہو۔

تعداد حدیث:

(۱) احادیث صحیحہ اور غیر صحیحہ کی مجموعی تعداد سات لاکھ پچاس ہزار ہے۔

(۲) بغیر تکرار کے احادیث کی مجموعی تعداد پچاس ہزار ہے۔

کتاب احادیث کی اقسام: کتب احادیث کی مندرجہ ذیل اقسام ہیں۔

(۱) صحیح: وہ کتاب کہ جس کے مصنف نے صرف صحیح احادیث درج کی ہوں۔

جیسے امام بخاری اور امام مسلم کی کتابیں، صحیح بخاری، اور صحیح مسلم۔

(۲) جامع: وہ کتاب کہ جس میں ۸ عنوانوں کے تحت احادیث لائی گئی ہوں۔ عنوان مندرجہ ذیل ہیں۔

(۱) آداب (۲) تفسیر (۳) سیر (۴) عقائد (۵) احکام (۶) فتن (۷) اشراط (۸) مناقب۔

جیسے امام ترمذی کی کتاب، جامع ترمذی۔

(۳) سنن: وہ کتاب جس میں فہم احکام سے متعلق احادیث لائی جائیں۔

جیسے امام داؤد کی کتاب، سنن ابی داؤد۔

(۴) مسند: وہ کتاب جس میں ترتیب صحابہ کے اعتبار سے احادیث ہوں۔

جیسے امام احمد بن حنبل کی کتاب، مسند امام احمد۔

(۵) معجم: وہ کتاب جس میں ترتیب شیوخ کے اعتبار سے احادیث ہوں۔

جیسے امام طبرانی کی کتاب، معجم طبرانی۔

(۶) مستدرک: وہ کتاب جس میں مختلف ابواب کے تحت ان احادیث کو جمع کیا گیا ہو جو ان ابواب میں مصنف سے روئے گئی ہوں۔

جیسے امام حاکم کی کتاب، مستدرک۔

محدث کی تعریف

حدیث کے معلم کو محدث کہتے ہیں۔

حافظ کی تعریف

وہ شخص جس کو ایک لاکھ احادیث متون و اسناد سمیت حفظ ہوں اور راویوں کے احوال کے ان پر جرح ہوئی یا یہ عادل ہیں محفوظ ہوں۔

جیسے، حافظ ابن حجر عسقلانی، حافظ بدرالدین عینی، ر

حجتہ کی تعریف

وہ شخص جسکو تین لاکھ احادیث متون و اسناد سمیت حفظ ہوں اور راویوں پر جرح ہوئی یا یہ عادل ہیں معلومات رکھتا ہو۔

جیسے، امام بخاری۔

حاکم کی تعریف

وہ شخص جس کو تمام احادیث متناوہ سند اور جرحاً تعدیلاً حفظ ہوں۔

جیسے

نبی کی تعریف

وہ برگزیدہ شخصیت جس کو اللہ تعالیٰ فرمائے کہ میں نے تجھ کو فلاں قوم فلاں لوگوں کی طرف پیغمبر بنا کر بھیجا، یا میری طرف سے ان کو میرے احکام پہنچا دے نبی کہلاتا ہے۔

نبی کی ایک تعریف یوں بھی کی گئی ہے۔

ایسا انسان جس کو اللہ تعالیٰ نے شرعی احکام کی تبلیغ کے لئے دنیا میں مبعوث فرمایا نبی کہلاتا ہے۔

نبی اور رسول میں فرق:

نبی: رسول کے معنی میں کوئی خاص فرق نہیں یہ دونوں لفظ ایک ہی معنی کے لئے بولے جاتے

البتہ نبی سب سے پہلے جیسے اللہ تعالیٰ نے ہدایت کے لئے وحی بھیجی ہو جبکہ رسول فرشتوں میں بھی

ہوتے ہیں اور انسانوں میں بھی اور بعض علمائے کرام یہ فرماتے ہیں کہ جو نبی نئی شریعت لائے اسے رسول کہتے ہیں۔

حکم: نبی کی تعظیم فرض عین ہے بلکہ تمام فرائض کی اصل ہے کسی بھی نبی کی ادنیٰ توہین یا تکذیب کفر ہے۔

معجزہ کی تعریف

علامہ تفتازانی معجزہ کی تعریف میں لکھتے ہیں۔

ایسا فعل جو خلاف عادت ہو اور ایسے شخص کے ہاتھ سے ظاہر ہو جو نبوت کا دعویٰ کرے اور منکرین کو ایسا فعل کرنے پر چیلنج کرے لیکن منکرین اس فعل کی مثل لانے پر عاجز آجائیں معجزہ کہلاتا ہے۔

کرامت و استدراج کی تعریف

ایسا خلاف عادت فعل جو ایسے شخص کی طرف سے ظاہر ہو جو ایمان اور عمل خیر کی دولت سے مالا مال ہو اور نبوت کا دعویٰ نہ کرے کرامت کہلاتا ہے۔ اور اگر ایسا خلاف عادت فعل جو ایسے شخص کی طرف سے ظاہر ہو جو ایمان اور عمل خیر سے خالی ہو چاہے کافر ہو یا فاسق و فاجر اسے استدراج یعنی شعبدہ کہتے ہیں۔

جادو (سحر) کی تعریف

ایسا عجیب و غریب فعل جو عام عادت و معمول کے خلاف ہو سحر کہلاتا ہے۔ ایک تعریف یوں ہے کہ کسی خبیث اور بدکار شخص کے مخصوص عمل کے ذریعہ کوئی غیر معمولی اور عام عادت کے خلاف کام یا چیز صادر ہو اس کو سحر یعنی جادو کہتے ہیں۔ یہ فعل تین طریقوں سے حاصل کیا جاتا ہے۔

(۱) بعض اوقات یہ اقوال خبیثہ مثلاً کلمات شرکیہ اور شیطان کی تعریف سے حاصل ہوتا

(۲) بعض اوقات اس کا حصول افعال خبیثہ مثلاً مختلف قسم کے گناہوں کے ذریعے ہوتا

(۳) اور کبھی یہ عقائد خبیثہ مثلاً شیطان کی عبادت کے ذریعے حاصل ہوتا ہے۔

سحر کا حکم: (۱) جس سحر میں کفر کا دخل ہو وہ بلاشبہ کفر ہے۔

(۲) ائمہ اربعہ کا اتفاق ہے کہ سحر حرام ہے اور گناہ کبیرہ ہے اور اس کا سیکھنا سکھانا بھی

(۳) امام اعظم کے نزدیک سحر کو قتل کرنا واجب ہے اور وہ ڈاکو کے حکم میں ہے۔

(۴) بعض علماء کے نزدیک ضرر کو دفع کرنے کے لئے جادو سیکھنا جائز ہے۔

صحابی کی تعریف

صحابی وہ شخص ہے جس نے حضور نبی کریم ﷺ سے حیات ظاہری میں ایمان کی حالت میں ملاقات کی اور اسلام پراس کی وفات ہوئی ہو۔

تابعی کی تعریف

تابعی وہ شخص ہے جس نے کسی صحابی سے حیات ظاہری میں ایمان کی حالت میں ملاقات کی ہو اور اسلام پراس کی وفات ہوئی ہو۔

ولی کی تعریف

وہ مسلمان جو اللہ تعالیٰ کی بقدر طاقت بشری ذات و صفات کا عارف یعنی جاننے والا ہو اور پابند شریعت ہو، لذات اور شہوات میں اٹھنا رکھنے سے پرہیز کرتا ہو۔

مجتہد کی تعریف

وہ شخص جس کے اندر اتنی علمی لیاقت ہو کہ قرآن کے رموز و اشارات کو جان سکے، قرآن سے مسائل نکال سکے، علم صرف دُلو پر عبور رکھتا ہو، ناسخ و منسوخ آیات و احادیث کا مکمل علم رکھتا ہو، شرعی احکام کی تمام آیات کو جانتا ہو مجتہد کہلاتا ہے۔

مجتہدین کے طبقات: مجتہدین کے چھ طبقات ہیں۔

(۱) مجتہد فی الشرع: وہ نفوس قدسیہ کہ جنہوں نے اجتہاد کے قواعد بنائے۔

جیسے امام ابوحنیفہ، امام شافعی، امام مالک، امام احمد بن حنبل۔

(۲) مجتہد فی المذہب: وہ فقہائے کرام جو ان قواعد میں تقلید کرتے ہیں اور ان اصول و قواعد سے مسائل شریعہ اخذ کرتے ہیں۔

جیسے امام یوسف، امام محمد امام زفر۔

(۳) مجتہد فی المسائل: وہ علمائے کرام جو قواعد و مسائل شریعہ میں تقلید کرتے ہیں اور وہ مسائل جن کے متعلق ائمہ و مجتہدین کی تصریح نہ ملی ہو انہیں قرآن و سنت سے نکال سکتے ہیں۔

جیسے امام طحاوی، امام سرخی۔

(۴) اصحاب الترجیح: وہ حضرات جو اجتہاد تو نہ کر سکتے ہوں لیکن ائمہ کرام کے مجمل قول کی وضاحت کر سکتے ہوں۔

جیسے امام کاشانی وغیرہ۔

(۵) اصحاب التخریج: وہ بزرگان دین جو امام ابوحنیفہ کی بعض روایات میں سے بعض کو ترجیح دے سکتے ہیں یعنی کسی مسئلہ میں امام ابوحنیفہ کے دو مختلف قول تھے تو ان میں جس کو ترجیح دینا ہو وہ یہ کر سکتے ہیں۔

جیسے صاحب ہدایہ اور صاحب قدوری وغیرہ۔

(۶) اصحاب التمیز: وہ حضرات جو قوی اور ضعیف قول، مفتی بہ قول میں امتیاز کر سکتے

ہیں۔

جیسے صاحب درمختار، صاحب کنز الدقائق وغیرہ۔

اجتہاد کی تعریف

شرعی اعتبار سے فقیہ کا کسی حکم شرعی کے حصول اور دلائل کے ساتھ مقصود کو طلب کرنے کے لئے اپنی علمی صلاحیتوں کو صرف کرنا اجتہاد کہلاتا ہے۔

تقلید کی تعریف

کسی کے قول و فعل کو اپنے اوپر یہ سمجھ کر کہ اس کا کلام اور اس کا کام ہمارے لئے حجت ہے لازم شرعی تسلیم کرنا تقلید کہلاتا ہے۔

تقلید کی اقسام: تقلید کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) تقلید شرعی (۲) تقلید غیر شرعی۔

تقلید شرعی: شرعی احکام میں کسی کی پیروی کرنا تقلید شرعی ہے۔ مثلاً نماز، روزہ، حج، زکوٰۃ وغیرہ کے مسائل میں ائمہ اربعہ کی اطاعت کی جاتی ہے۔

تقلید غیر شرعی: افعال دنیاوی میں کسی شخص کی پیروی کرنا جیسے طبیب لوگ علم طب میں یا بوعلی سینا کی پیروی کرتے ہیں۔

تقلید غیر شرعی کی دو قسمیں ہیں: (۱) حرام (۲) جائز و مباح۔

تقلید حرام: ایسے غیر شرعی افعال و اقوال جو شریعت سے متصادم ہوں ان میں تقلید حرام ہے۔

جائز و مباح: اگر غیر شرعی افعال و اقوال اسلام کے مخالف نہ ہوں تو ان میں تقلید جائز ہے۔

شرعی مسائل کی اقسام: اس کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) عقائد (۲) احکام۔

(۱) عقائد: وہ احکام شرعی جو قرآن و حدیث متواترہ سے صراحتاً ثابت ہوں۔ جن میں اجتہاد کا کوئی دخل نہ ہو ان میں تقلید جائز نہیں۔ جیسے توحید و رسالت، جنت و دوزخ، جزا و سزا و غیرہ۔ ان مسائل میں یہ نہیں کہہ سکتے کہ امام ابوحنیفہ کے بتانے سے توحید و رسالت وغیرہ کو مانا ہے بلکہ کہنا پڑے گا کہ دلائل سے جانا۔

(۲) احکام: وہ احکام جو قرآن و سنت سے غور و فکر کے بعد نکالے جائیں۔

جیسے ارشاد باری تعالیٰ،، و امسحوا بروجکم۔ ترجمہ: اور اپنے سروں کا مسح کرو۔ اس آیت کریمہ میں ابہام ہے کہ مقدار مسح کیا ہے لہذا امام اعظم کے غور و فکر کے بعد چوتھائی سر کا مسح فرض قرار پایا۔

اجماع کی تعریف

لغوی معنی عزم اور اتفاق اور اصطلاحی معنی یہ ہیں کہ سرکار دو عالم ﷺ کی امت کے ہم زمانہ مجتہدین کسی دینی معاملے پر اتفاق کرنا اجماع کہلاتا ہے۔

اجماع کا حکم: اجماع شرعی حجت ہے اس کا انکار گمراہی و بے دینی ہے۔

قیاس کی تعریف

ایک چیز کے لئے ایک حکم مذکور ہو مثلاً یہ کہ شراب حرام ہے ایک دوسری چیز مثلاً افیون کے لئے کوئی حکم نہیں لیکن جس علت یعنی نشہ آور ہونے کی وجہ سے پہلی چیز یعنی شراب پر حرام ہونے کا حکم لگایا گیا وہ علت یعنی نشہ آور ہونا بعینہ دوسری چیز یعنی افیون میں بھی پائی جائے تو اسی علت یعنی نشہ آور ہونے کے مشترک ہونے کی بنا پر حرام ہونے کا حکم اس دوسری چیز یعنی افیون کے متعلق ثابت ہو جائے اس

لایا، کی اصطلاح میں قیاس کہتے ہیں۔

قیاس کا حکم: قیاس ایک شرعی حجت ہے اس لئے اس کا منکر بے دین ہے۔

حجتہ کی تعریف

وہ شے جو اپنے دعویٰ کے صحیح ہونے پر دلالت کرے حجتہ کہلاتی ہے۔

ظن، وہم اور یقین کی تعریف

ظن کا مطلب یہ ہے کہ انسان دو جانب میں سے کسی ایک جانب کو ترجیح دے دے اور اس کی جانب مخالف کو بھی مغلوب اور مرجوح درجہ میں جائز قرار دے تو یہ ظن ہے اور اس کی مخالف جانب وہم ہے

مثال: ایک طالب علم تین مرتبہ سوال حل کرتا ہے دو مرتبہ حل کرنے پر اس کا جواب صحیح ہوتا ہے اور ایک مرتبہ حل کرنے پر غلط ہو اس کا ذہن اس حکم کو ترجیح دے گا کہ اس کا جواب صحیح ہے اور یہ حکم ظن کے درجہ میں ہے کیونکہ یہ بھی ہو سکتا ہے کہ دو مرتبہ حل کرنے پر اس کا جواب غلط ہو اور ایک بار کا صحیح ہو اس لئے اس کا ذہن اس حکم کو بھی دو مرتبہ حل کرنے پر جواب غلط ہو اور ایک بار کا صحیح ہو اس لئے اس کا ذہن اس حکم کو بھی جائز قرار دے گا کہ اس کا جواب غلط ہے لیکن یہ حکم وہم کے درجہ میں ہے۔ اور اگر تینوں مرتبہ حل کرنے کے نتیجہ میں جواب درست ہو تو اس کو درست ہونے کا جزم ہو گا اگر یہ جزم واقع کے مطابق ہو اور شک و شبہ سے زائل نہ ہو تو اس کو یقین کہتے ہیں۔

عموم بلوی کی تعریف

وہ امر عام جس سے بچتا دشوار ہو اور اس وجہ سے عوام و خواص سبھی اس میں مبتلا ہوں صرف عوام کا ابتلاء عموم بلوی نہیں نیز عموم بلوی کے لئے ہر فرد کا ابتلاء بھی ضروری نہیں بلکہ اکثر افراد کا ابتلاء بھی کافی ہے۔ یاد رہے کہ عموم بلوی کا اثر صرف طہارت و نجاست کے ساتھ خاص نہیں بلکہ باب علت و حرمت

میں بھی یہ اثر انداز ہوتا ہے اسی طرح اس کا دائرہ اختیاری و غیر اختیاری تمام افعال کو عام ہے۔ نیز عموم بلوی کے لئے کسی ایک ملک کے بلاد کثیرہ میں پایا جانا کافی ہے یہ ضروری نہیں کہ پوری دنیا کے مسلمانوں کا اس پر عمل درآمد ہو۔ اور نہ یہ ضروری ہے کہ ہمیشہ سے ہو بلکہ کسی ایک زمانہ میں یہ صورت حال پائی جائے تو یہ بھی عند الشرح معتبر ہوگا۔

عرف عام کی تعریف

ایسا عمل جو بار بار وقوع پذیر ہونے کے سبب لوگوں میں پختہ ہو جائے اور سلیم الفطرت اشخاص کے نزدیک مقبول ہو عادت یا عرف عام کہلاتا ہے۔

حکم: عادت یا عرف عام کو فقہاء نے شرعی احکام میں موثر تسلیم کیا ہے۔

شرائط: عرف یا عادت کے معتبر ہونے کے لئے تین شرائط کا پایا جانا ضروری ہے۔

(۱) عرف یا عادت نص صریح کے خلاف نہ ہو اگر کسی مسئلہ کا حکم نص صریح سے ثابت ہو مگر عادت اس کے خلاف ہو تو ایسی عادت کا اعتبار نہیں ہوگا بلکہ نص کے مطابق عمل کیا جائے گا
(۲) وہ عرف یا عادت عام جاری ہو اور غالب ہو ایسی عادت معتبر نہیں ہوگی جسے اقل یعنی اکثر کے مقابلے میں کم نے اپنارکھا ہو۔

(۳) وہ عرف عام ہو کیونکہ عام حکم عرف خاص سے ثابت نہیں ہوتا۔

مناظرہ کی تعریف

دو جھگڑنے والوں کے درمیان نسبت کے بارے میں اظہار حق کے لئے متوجہ ہونا مناظرہ کہلاتا ہے۔

مکابرہ کی تعریف

یہ بھی مناظرہ ہی کی قسم ہے لیکن اظہار حق کے لئے نہیں بلکہ مد مقابل پر الزام قائم کرنے کے

لئے ہوتا ہے۔

مجادلہ کی تعریف

مجادلہ اہم بحث و مباحثہ ہی ہے لیکن یہ نہ تو اظہار ثواب کے لئے ہوتا ہے اور نہ الزام خصم کے لئے۔

مہابلہ کی تعریف

مہابلہ نہایت عاجزی کے ساتھ اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں یہ دعا کرتے ہیں کہ ان میں سے جو جھوٹا ہو اس پر اللہ تعالیٰ کی لعنت ہو اسے مہابلہ کہتے ہیں۔

معارضہ کی تعریف

معارضہ جو دلیل قائم کی اس کے خلاف کوئی دلیل قائم کرنا معارضہ کہلاتا ہے۔

حکم: دین حق کی حمایت کے لئے مناظرہ کرنا جائز ہے بلکہ عبادت ہے اور اگر اس لئے مناظرہ کرتا ہے کہ کسی مسلمان کو مغلوب نہ کر دے تاکہ لوگوں پر اس کا عالم ہونا ظاہر ہو جائے یا دنیا حاصل کرنا مقصود ہو یا لوگوں میں مقبولیت حاصل ہوگی یہ ناجائز ہے۔

شیخین کی تعریف

(۱) اہل سیر جب شیخین کا لفظ بولیں تو اس سے مراد حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر

فاروق ہوتے ہیں۔

(۲) فقہائے احناف کے نزدیک شیخین سے مراد امام ابو حنیفہ اور حضرت امام ابو یوسف

کی ذات گرامی ہیں۔

(۳) محدثین کی اصطلاح میں اس سے مراد امام بخاری اور امام مسلم ہوتے ہیں۔

صاحبین کی تعریف

اس سے مراد امام ابو یوسف اور امام محمد ہوتے ہیں۔

طرفین کی تعریف

ان سے امام ابو حنیفہ اور امام محمد مراد ہوتے ہیں۔

ائمہ اربعہ کی تعریف

ان سے مراد چار مشہور مسالک کے بانی (۱) امام ابو حنیفہ (۲) امام شافعی (۳) امام مالک (۴) امام احمد بن حنبل ہیں۔

ائمہ ثلاثہ کی تعریف

(۱) جب مطلقاً ائمہ ثلاثہ بولا جائے تو اس سے امام ابو حنیفہ، امام ابو یوسف اور امام محمد مراد ہوں گے۔

(۲) جب امام ابو حنیفہ کے قول کے مقابلہ میں ائمہ ثلاثہ بولا جائے تو اس سے مراد حضرت امام شافعی، حضرت امام مالک اور حضرت امام احمد بن حنبل ہوں گے۔

محققین کی تعریف

محققین سے مراد وہ فقہائے کرام ہیں جو امام ابو حنیفہ، امام ابو یوسف اور امام محمد کے زمانے میں ہوں اور ان تینوں سے فیوض و برکات حاصل کئے ہوں۔

متاخرین کی تعریف

وہ فقہائے کرام جو ان تینوں کے ہم زمانہ اور فیض یافتہ ہوں متاخرین کہلاتے ہیں۔ اور ایک قول یہ ہے کہ تیسری صدی سے پہلے تک کے علمائے کرام کو محققین کہتے ہیں اور تیسری صدی

کی ابتداء سے متاخرین کا زمانہ شروع ہوتا ہے۔

احکام شریعت

احکام شریعت تیرہ ہیں۔ (۱) فرض اعتقادی (۲) فرض عملی (۳) واجب عملی (۴) سنت موکدہ (۵) سنت غیر موکدہ (۶) مستحب (۷) مباح (۸) حرام قطعی (۹) مکروہ تحریمی (۱۰) اسات (۱۱) مکروہ تنزیہی (۱۲) خلاف اولیٰ (۱۳) فرض کفایہ۔

فرض اعتقادی کی تعریف

وہ فرض ہے جس کا ثبوت دلیل قطعی سے ہو یعنی ایسی دلیل کہ جس میں کوئی شک و شبہ نہ ہو۔ جیسے قرآن پاک اور حدیث متواترہ ان دونوں سے علم قطعی حاصل ہوتا ہے۔ مثلاً نماز، روزہ، حج و زکوٰۃ وغیرہ۔

حکم: (۱) جو شخص فرض اعتقادی کا منکر ہو احناف کے نزدیک کافر ہے۔ جیسے کوئی شخص نماز، روزہ کی فرضیت کا انکار کر دے۔

(۲) جو شخص اس فرض کو بلا عذر جان بوجھ کر ایک مرتبہ بھی ترک کر دے وہ فاسق و فاجر اور مستحق عذاب نار ہے۔

جیسے نماز، روزہ کو جان بوجھ کر قضاء کر دینا۔

فرض عملی کی تعریف

وہ فرض ہے جو دلیل قطعی سے تو ثابت نہ ہو مگر مجتہد کی نظر میں دلائل شریعہ سے اس کا ثبوت ایسا یقینی ہو کہ اسے ادا کئے بغیر انسان بری الذمہ نہ ہو۔ جیسے چوتھائی سرکاسح۔

حکم: بغیر کسی وجہ کے اس کا انکار کرنا موجب فسق و کفر ای ہے اہل علم میں سے اگر کوئی اس کا دلائل کے ساتھ انکار کر دے تو اس کے لئے جائز ہے۔

مثلاً چوتھائی سر کا مسح احناف کے نزدیک فرض ہے جبکہ شوافع اس کا دلائل شریعہ کے ساتھ رد کر کے ایک بال کے مسح کو فرض قرار دیتے ہیں۔

واجب اعتقادی کی تعریف

وہ واجب ہے کہ جس کا ضروری و لازمی ہونا دلیل نقلی سے ثابت ہو۔ اس کی دو قسمیں ہیں۔
(۱) فرض عملی (۲) واجب عملی۔

واجب عملی کی تعریف

وہ واجب کہ جس کے ادا کئے بغیر بری الذمہ ہونے کا احتمال ہو مگر ظن غالب اس کے ضروری ہونے پر ہو۔ اگر کسی عبادت میں اس کا بجالانا درکار ہو تو اس کے ادا کئے بغیر عبادت ناقص رہے گی بہر حال ادا ہو جائے گی۔ مجتہد دلیل شرعی سے اس کا انکار کر سکتا ہے۔

حکم: واجب کا ایک بار بھی جان بوجھ کر چھوڑ دینا گناہ صغیرہ اور ترک پر اصرار کرنا گناہ کبیرہ ہے۔

سنت موکدہ کی تعریف

وہ سنت کہ جس پر سرکارِ دو عالم ﷺ نے پہلی اختیار فرمائی ہو لیکن کبھی کبھار ترک بھی فرمایا ہو۔

حکم: (۱) اس کا بلا عذر ترک کرنا اسات اور ادا کرنا موجب ثواب ہے۔

(۲) کبھی کبھار ترک پر عتاب ہے اور ترک پر عادت بنالینا موجب عذاب ہے۔

سنت غیر موکدہ کی تعریف

عند الشریعہ اس کا ترک کرنا ناپسندیدہ ہے مگر اس پر عذاب نہیں۔

حکم: اس کی ادائیگی پر ثواب ہے اور عدم ادائیگی پر عذاب نہیں، چاہے ترک کرنا عادت ہو۔

مستحب کی تعریف

عند الشریعہ پسندیدہ ہے اور ترک پر پسندیدگی بھی نہیں چاہے سرکارِ دو عالم ﷺ نے کیا ہو یا نہ کیا ہو۔

حکم: اس کا ادا کرنا ثواب اور ترک پر کچھ بھی نہیں۔

مباح: جس کی ادائیگی اور عدم ادائیگی دونوں یکساں ہو یعنی نہ ثواب نہ گناہ۔

حرام قطعی کی تعریف

یہ فرض کا مقابل ہے۔

حکم: اس کا جان بوجھ کر ارتکاب کرنا گناہ کبیرہ ہے اس سے اجتناب فرض ہے اور اس سے بچنے پر ثواب ہے۔ جیسے بلا عذر نماز ترک کر دینا۔

مکروہ تحریمی کی تعریف

یہ واجب کا مقابل ہے۔

حکم: اس کے ارتکاب سے عبادت ناقص رہتی ہے اس کا مرتکب گناہ گار ہوتا ہے۔ یاد رہے کہ اس کا کرنا حرام سے کم لیکن چند بار کرنے سے گناہ کبیرہ بن جاتا ہے۔ جیسے داڑھی منڈانا۔

اسات کی تعریف

یہ سنت موکدہ کے مقابل ہے۔

حکم: اس کا کرنا برا ہے کبھی کبھار کرنے والا مستحق عتاب اور تنبیہی کرنے والا مستحق عذاب نار ہے۔ جیسے کھڑے ہو کر پیشاب و پاخانہ کرنا۔

مکروہ تنزیہی کی تعریف

یہ سنت غیر موکدہ کے مقابل ہے۔

حکم: اس کو کرنا شریعت کو ناپسند ہے مگر اس کا مرتکب مستحق عذاب نہیں۔
جیسے عصر و عشاء کی چار سنتیں ترک کرنا۔

خلاف اولیٰ کی تعریف

اس کا نہ کرنا بہتر ہے اگر مرتکب ہوا تو کچھ نہیں یہ مستحب کا مقابل ہے۔ جیسے زیادہ ہنسا۔

فرض کفایہ کی تعریف

وہ فرض ہے کہ بعض لوگوں کی ادائیگی سے سب بری الذمہ ہو جائیں۔ اور اگر کسی ایک نے بھی ادا نہ کیا تو سب گناہ گار ہوئے۔ اس میں وقت کی تعیین نہیں ہوتی۔ جیسے نماز جنازہ۔

سنت کی تعریف

لغوی معنی: سنت کا لغوی معنی ہے طریقہ، چاہے وہ طریقہ پسندیدہ ہو یا ناپسندیدہ۔

شرعی معنی: ایسا طریقہ جو دین میں رائج کیا گیا ہو، نہ تو فرض ہو اور نہ واجب۔ لہذا رسول اللہ ﷺ نے جس کو ہمیشہ اختیار کیا اور کبھی کبھی ترک بھی کیا سنت کہلاتا ہے۔

سنت کی اقسام: اس کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) سنت ہدیٰ یعنی سنت موکدہ (۲) سنت زوائد۔

(۱) سنت ہدیٰ: وہ کام کہ جس پر رسول اللہ ﷺ نے بطور عبادت یا بطور عبادت بھیجی اختیار فرمائی جیسے ایک مٹھی داڑھی رکھنا، فرض نماز کے لئے جماعت قائم کرنا وغیرہ۔

(۲) سنت زوائد: وہ کام جس پر رسول اللہ ﷺ نے بطور عادت یا بطور عادت بھیجی اختیار فرمائی ہو جیسے سرکار دوعا ﷺ کا کھانا، چینا، اٹھنا، بیٹھنا، لباس پہننا وغیرہ۔

حکم: (۱) تکمیل دین کے لئے سنت ہدیٰ کا ادا کرنا ضروری ہے اس کا ترک موجب کراہیت اور اسات ہے۔

(۲) سنت زوائد پر عمل کرنا کارِ ثواب اور اس کا ترک کرنا نہ تو موجب کراہیت ہے اور نہ ہی موجب اسات۔

نفل کی تعریف

نفل کے شرعی معنی ہیں وہ نفل جو فرائض و واجبات پر زائد ہو اور اس کا ارتکاب افضل و مستحب ہو اور اس کے ترک پر کوئی کراہیت اور اسات نہ ہو۔

نوٹ: نفل چونکہ عبادت پر زائد ہوتے ہیں اس لئے ان کو نفل کہتے ہیں۔

بدعت کی تعریف

وہ نیا کام جو زمانہ نبوی کے بعد ایجاد ہوا یہ عام ہے کہ اس نئے کام کا تعلق اعتقاد سے ہو یا اعمال سے، دینی ہو یا دنیوی بدعت کہلاتا ہے۔

بدعت کی اقسام: بدعت کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) بدعت اعتقادی (۲) بدعت عملی۔

بدعت اعتقادی: وہ عقائد باطلہ جو حضور نبی کریم ﷺ کی حیات ظاہری کے بعد ایجاد ہوئے جیسے عقیدہ رکھنا کہ اللہ تعالیٰ جھوٹ بول سکتا ہے، رسول اللہ ﷺ کے بعد دوسرا نبی آ سکتا ہے، نماز میں رسول اللہ ﷺ کا خیال بیل گدھے کے خیال سے بدتر ہے، نبی کا علم شیطان کے علم سے کم ہے وغیرہ (نعوذ باللہ من ذلک)۔

بدعت عملی: اس کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) بدعت حسنہ (۲) بدعت سیئہ۔

بدعت حسنہ: وہ نیا کام جو خلاف سنت نہ ہو اور نہ ہی کسی سنت کو مٹانے والا ہو۔ جیسے محفل میلاد شریف، گیارہویں شریف یا بزرگان دین کا عرس منانا وغیرہ۔

بدعت سیئہ: وہ نیا کام جو خلاف سنت ہو یا کسی سنت کو مٹانے والا ہو۔ جیسے پینٹ شرٹ پہننا، وغیرہ۔

نوٹ: بدعت حسنہ اور سیئہ میں سے ہر ایک کی پھر تین تین قسمیں ہیں۔

بدعت حسنہ کی اقسام: اس کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) بدعت مباحہ (۲) بدعت مستحبہ (۳) بدعت واجبہ۔

بدعت مباحہ: وہ نیا کام جو خلاف شرع نہ ہو اور بغیر نیت خیر کے کیا جائے جیسے یوم آزادی پاکستان منانا، شادی بیاہ پر چمچاں کرنا وغیرہ۔

بدعت مستحبہ: وہ نیا کام جو خلاف شرع نہ ہو اور نیت خیر کے ساتھ کیا جائے عوام الناس اس کو ثواب جانتے ہوں۔ جیسے محفل میلاد منانا خطبہ جمعہ وعیدین میں صحابہ کرام کا ذکر کرنا، دینی اجتماعات کا انعقاد کرنا، مساجد کو مزین کرنا وغیرہ۔

بدعت واجبہ: وہ نیا کام جو خلاف شرع نہ ہو اور ترک کرنے کی صورت میں مسلمان حرج میں مبتلا ہو جائیں جیسے قرآن پر اعراب لگانا، دینی مدارس کا قیام، علم صرف و نحو کا التزام کرنا وغیرہ۔

بدعت سیئہ کی اقسام: اس کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) بدعت مکروہ تنزیہی (۲) بدعت مکروہ تحریمی (۳) بدعت حرام۔

بدعت مکروہ تنزیہی: وہ نیا کام جو خلاف سنت ہو اور بہت غیر موکدہ کو ترک کرنے کا سبب بنے۔ جیسے ننگے سر کھانا، پیتا۔

بدعت مکروہ تحریمی: وہ نیا کام جو خلاف سنت ہو اور سنت مکدہ کو ترک کرنے کا سبب

بنے جیسے داڑھی منڈانا، یا گھٹا کر ایک ٹٹھی سے کم کر لینا۔

بدعت حرام: وہ نیا کام جو خلاف شرع ہو اور فرض یا واجب کو ترک کرنے کا سبب بنے۔ جیسے بزرگان دین کے مزارات پر تاجپنا، گانا اور ڈھول پٹینا وغیرہ۔

نماز کی تعریف

نماز کا لغوی معنی ہے دعاء اور اصطلاح میں مقررہ اوقات میں چند ضروری شرائط کے ساتھ ارکان مخصوصہ اور اذکار معلومہ کے ساتھ ادائیگی کا نام نماز کہلاتا ہے اور اس کے فاعل کو نمازی کہتے ہیں۔

نمازی کی اقسام: نمازی کی مندرجہ ذیل پانچ اقسام ہیں۔

(۱) مقتدی ہد رک: وہ نمازی جس نے اول سے آخر تک امام کے ساتھ نماز ادا کی ہو مقتدی ہد رک کہلاتا ہے۔

(۲) مقتدی لاحق: وہ نمازی جس کی ایک رکعت یا رکعت کا بعض حصہ کسی وجہ سے فوت ہو جائے یعنی جس نے اکثر رکعتیں پالی ہوں مقتدی لاحق کہلاتا ہے۔

(۳) مسبوق: وہ شخص جس نے فقط تشهد یا ایک دو رکعتیں پائیں یعنی نماز کی اکثر رکعتیں نہ پا سکا مسبوق کہلاتا ہے۔

(۴) مسبوق لاحق: وہ شخص کہ جو دوسری رکعت میں شریک ہوا پھر دوسری یا تیسری رکعت میں سو گیا یا وضو ٹوٹ گیا امام کے کچھ رکن یا پوری نماز ادا کرنے کے بعد بیدار ہوا یا وضو سے فارغ ہوا اور پھر بقیہ نماز ادا کی اسے مسبوق لاحق کہتے ہیں۔

(۵) منفرد: وہ شخص جو امام کی اقتداء کے علاوہ اکیلی نماز پڑھ رہا ہو۔

عمل کثیر کی تعریف

نماز کے اندر کوئی ایسا فعل کرنا کہ دور سے دیکھنے والا غالب گمان کرے کہ یہ نماز میں نہیں بشرطیکہ وہ عمل نماز کی اصلاح کے لئے نہ ہو عمل کثیر کہلاتا ہے۔ اور اگر دور سے دیکھنے والے کو شبہ شک ہو کہ نماز میں ہے یا نہیں عمل قلیل ہے۔

حکم: عمل کثیر سے نماز فاسد ہو جاتی ہے جبکہ عمل قلیل سے نماز فاسد نہیں ہوتی۔

عمل کثیر کی اقسام: عمل کثیر کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) اختیاری (۲) غیر اختیاری۔

(۱) اختیاری: جیسے جان بوجھ کر دوران نماز سر پر کنگھا کرنا۔

(۲) غیر اختیاری: جیسے دھکے کی وجہ سے نمازی کا تین قدم سے زیادہ اپنی جگہ سے ہٹ جانا۔

حکم: دونوں صورتوں میں نماز ٹوٹ جائے گی اس لئے کہ یہ عمل کثیر اصلاح نماز کے لئے نہیں اگر عمل کثیر اصلاح نماز کے لئے ہو تو اس سے نماز نہیں ٹوٹی جیسے دوران نماز بے وضو ہو جانے کی صورت میں اگر کوئی وضو کرنے چلا گیا تو اس کی نماز باطل نہیں ہوگی۔

اداء قضا کی تعریف

جن چیزوں کے کرنے کا بندوں کو حکم ہے انہیں وقت میں بجالانا ادا کہلاتا ہے اور وقت کے بعد بجالانے کو قضا کہتے ہیں اور اگر اس کام کو بجالانے میں کوئی قحاح پیدا ہوئی اور اس خرابی کو دور کرنے کے لئے دوبارہ فعل کیا تو یہ اعادہ کہلائے گا۔

طہارت کی تعریف

لغوی معنی ہے نظافت اور شریعت میں اعضائے مخصوصہ کو مفت مخصوصہ کے ساتھ دھونے کا نام طہارت ہے۔

طہارت کی اقسام: طہارت کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) طہارت صغریٰ (۲) طہارت کبریٰ۔

طہارت کبریٰ: غسل کرنے کو طہارت کبریٰ کہتے ہیں اور جن چیزوں سے غسل فرض ہو جائے انہیں حدث اکبر کہتے ہیں۔

طہارت صغریٰ: وضو کرنے کو طہارت صغریٰ کہتے ہیں اور جن چیزوں سے صرف وضو لازم آتا ہے انہیں حدث اصغر کہتے ہیں۔

نجاست کی تعریف

وہ چیز کہ جو نماز اور اس کے علاوہ دیگر عبادات کی ادائیگی کے لئے رکاوٹ ہو نجاست کہلاتی ہے۔

نجاست کی اقسام: نجاست کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) نجاست حکمیہ (۲) نجاست حقیقیہ۔

نجاست حکمیہ: وہ نجاست جو نظر نہ آئے لیکن شریعت نے اس پر ناپاکی کا حکم لگایا ہو جیسے بے وضو ہونا یا جنابت کا طاری ہونا۔

حکم: جس عبادت میں وضو لازمی ہو وہاں وضو کرنا اور جہاں غسل کی ضرورت ہو وہاں غسل کرنا واجب و ضروری ہے۔

نجاست حقیقیہ: وہ ناپاک چیز جو کپڑے یا بدن پر لگ جائے اور ظاہری طور پر معلوم ہو نجاست حقیقیہ ہے جیسے پاخانہ، پیشاب وغیرہ۔

نجاست حقیقیہ کی اقسام: حکم کے اعتبار سے نجاست حقیقیہ کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) نجاست غلیظہ (۲) نجاست خفیفہ۔

نجاست غلیظہ : وہ نجاست ہے کہ شریعت میں جس کا حکم سخت ہو۔ جیسے انسان کا پیشاب و پاخانہ، بہتا خون، حرام جانوروں کا پیشاب، حلال جانوروں کا پاخانہ، شراب وغیرہ۔

حکم: (۱) اگر کپڑے یا بدن پر ایک درہم سے زیادہ لگ جائے تو پاک کرنا فرض ہے۔

(۲) اگر ایک درہم کی مقدار لگ جائے تو پاک کرنا واجب ہے۔

(۳) اگر درہم سے کم لگی تو پاک کرنا سنت ہے لازم نہیں۔

نجاست خفیفہ : وہ نجاست کہ شریعت میں جس کا حکم ہلکا ہو۔ مثلاً حلال جانوروں کا پیشاب، حرام پرندوں کی بیٹ، مرغی اور بلی وغیرہ کے علاوہ حلال پرندوں کی بیٹ وغیرہ۔

حکم: (۱) کپڑے یا بدن کے جس حصہ کی چوتھائی سے کم لگی تو معاف ہے۔

(۲) اور اگر اس حصہ کی پوری چوتھائی یا اس سے زیادہ لگی ہو تو پاک کرنا فرض ہے۔

وضوء کی تعریف

وضوء کا لغوی معنی ہے حسن اور شریعت میں اعضائے مخصوصہ کو دھونے اور مسح کرنے کا نام وضوء ہے۔

وضوء کی ایک تعریف اس طرح بھی کی گئی ہے کہ

چار مخصوص اعضاء پر پانی پہنچانے کا نام وضوء ہے۔

اعضائے وضوء: اعضائے وضوء چار ہیں۔

(۱) چہرہ۔ (۲) دونوں بازو۔ (۳) دونوں پاؤں۔ (۴) سر کا مسح۔

دھونے و مسح کی تعریف

کسی عضو کے دھونے کا مطلب یہ ہے کہ اس عضو کے ہر حصہ پر کم از کم دو بوند پانی بہہ جائے بھیگ جانے یا تیل کی طرح پانی چڑھ لینے یا ایب آدھ بوند بہہ جانے کو دھونا نہیں کہیں گے نہ اس سے وضوء ہوگا اور نہ غسل اور اعضاء پر خالی تری کے پہنچ جانے کو مسح کہتے ہیں۔ امام اعظم کے نزدیک تین دفعہ مسح

کرنے سے بھی دھونا ثابت ہو جائے گا۔

بہتے پانی کی تعریف

ایسا پانی کہ جس میں چمکا ڈالیں تو وہ نیچے کو بہا کر لے جائے بہتا پانی کہلاتا ہے۔

حکم: ایسا پانی پاک ہے اور پاک کرنے والا ہے نجاست پڑنے سے ناپاک نہ ہوگا جب تک وہ نجاست اس کے رنگ یا بویا مزے کو بدل نہ دے اگر ایسے پانی کے رنگ یا بویا مزے کو نجاست نے بدل دیا تو وہ ناپاک ہو گیا اب یہ اس وقت پاک ہوگا جب نجاست نہ نشین ہو جائے یا اتنا پاک پانی ملے جو نجاست کو بہا لے جائے۔

دہ دردہ کی تعریف

ایسا حوض جو دس ہاتھ لمبا، دس ہاتھ چوڑا ہو اسے دہ دردہ کہتے ہیں۔ یہاں یہ بات ضرور ذہن نشین رکھنی چاہئے کہ حوض کی کل لمبائی اور چوڑائی سو ہاتھ ہونی چاہئے چاہے ایک طرف بیس ہاتھ ہو اور دوسری طرف پانچ ہاتھ یا ایک طرف سے پچیس ہاتھ اور دوسری طرف سے چار ہاتھ اور اگر مکمل لمبائی چوڑائی سو سے کم ہو تو وہ دہ دردہ نہیں کہلائے گا۔

ضروری بات: حوض کے چھوٹے بڑے ہونے میں اس حوض کی پیمائش معتبر نہیں بلکہ اس کے پانی کی بالائی سطح کا اعتبار ہے لہذا اگر حوض تو بڑا ہے لیکن اس میں پانی دہ دردہ سے کم ہے تو وہ بڑا حوض نہیں ہے۔ نیز دہ دردہ حوض میں اتنا ذل کافی ہے کہ زمین کہیں سے کھلی ہوئی نہ ہو۔

حکم: ایسا پانی بہتے پانی کے حکم میں ہے نجاست پڑنے سے ناپاک نہیں ہوگا۔ باقی تفصیل دہی ہے جو بہتے پانی کے لئے بیان ہوئی۔

مستعمل پانی کی تعریف

کسی بے وضو یا جنسی آدمی کا ہاتھ یا انگلی کا پورا یا ناخن یا بدن کا کوئی ٹکڑا جو وضوء اور غسل میں دھویا جاتا ہو

جان بوجھ کر یا بھول کر درہ درہ سے کم پانی مثلاً پانی سے بھری ہوئی بالٹی یا لوٹے وغیرہ میں پڑ جائے۔
اس پانی کو مستعمل پانی کہتے ہیں۔

حکم: مستعمل پانی وضو اور غسل جنابت کے لائق نہیں رہتا۔ ہاں اگر دھلا ہاتھ یا دھلے ہوئے بدن کا کوئی حصہ پڑ جائے تو حرج نہیں۔

تیمم کی تعریف

لفوی معنی ارادہ کرنا اصطلاحی معنی ایسا ارادہ جو مٹی یا جنس مٹی سے طہارت کے حصول کے لئے کیا جائے تیمم کہلاتا ہے۔

تیمم کی شرائط: تیمم کی چھ شرطیں ہیں۔

(۱) مسلمان ہونا۔ (۲) نیت کرنا۔ (۳) مسح کرنا۔ (۴) مٹی یا جنس مٹی سے تیمم کرنا۔ (۵) مٹی پاک ہونا۔ (۶) پانی کا نہ ہونا۔

جنس مٹی کی مثال، پتھر، چونا، اینٹ، گیر، سرمہ، گندھک وغیرہ۔

تیمم کا رکن: تیمم میں دو شرطیں ہیں۔ (۱) مٹی پر پہلی ضرب مار کر، نہ پر مسح کرنا (۲) دوسری ضرب مار کر دونوں بازوؤں کا ہاتھوں سمیت مسح کرنا۔

جنس زمین کی تعریف

ایسی چیز جو آگ سے جل کر راکھ نہ ہو، نہ پگھل سکے اور نہ نرم ہو سکے وہ زمین کی جنس میں سے ہے۔

مثلاً: ریت، چونا، سرمہ، پتھر، پکی اینٹ، چینی یا مٹی کے برتن وغیرہ۔

حکم: چاہے ان پر گرد و غبار ہو یا نہ ہو ان سے تیمم کر سکتے ہیں۔

غیر جنس زمین کی تعریف

ایسی چیز جو آگ سے جل کر راکھ ہو جائے یا پگھل جائے یا نرم ہو جائے غیر جنس زمین کہلاتی ہے۔
مثلاً: لکڑی، گھاس، سونا، چاندی، لوہا وغیرہ۔

حکم: اس قسم کی اجناس سے تیمم جائز نہیں ہے اور اگر ان پر گرد و غبار موجود ہو تو اب تیمم کیا جاسکتا ہے۔

جہر اور سر کی تعریف

جہر کا مطلب ہے کہ دوسرے لوگ یعنی صف اول والے سن سکیں جہر کہلاتا ہے لیکن یہ جہر کا ادنیٰ درجہ ہے اور اعلیٰ درجہ کی کوئی حصہ مقرر نہیں اور اتنا آہستہ پڑھنا کہ پڑھنے والا خود اپنی آواز سن سکے یا فقط دو ایک آدمی سن سکیں سر کہلاتا ہے۔

مسجد کی تعریف

لفوی معنی مسجد کرنے کی جگہ اور اصطلاح میں وہ جگہ کہ جسے کسی مسلمان نے اپنی ذاتی ملک سے الگ کر کے وقف کر دیا ہو اور مسلمانوں کو عبادت کرنے کے لئے اذن عام کر دیا ہو اب یہ جگہ تا قیامت مسجد ہو جائے گی۔

مسجد ہونے کی شرائط: کسی جگہ کے مسجد ہونے کی لئے چند باتوں کا ہونا ضروری ہے۔

(۱) مسجد ہونے کے لئے ضروری ہے کہ بنانے والا کوئی ایسا فعل کرے یا ایسی بات کہے جس سے مسجد ہونا ثابت ہوتا ہو محض مسجد کی ہی عمارت بنانا مسجد ہونے کے لئے کافی نہیں۔

(۲) مسجد بنائی اور جماعت سے نماز پڑھنے کی اجازت دے دی مسجد ہو گئی۔

(۳) یہ کہا کہ میں نے اسے مسجد کر دیا تو مسجد ہو گئی۔

(۴) مسجد کہے لئے عمارت کا ہونا ضروری نہیں خالی زمین بھی اگر کوئی مسجد کے لئے دے

دیا جی مسجد ہے۔

(۵) بعض لوگ اپنے چند گھروں کے بیچ میں مسجد کی طرح عمارت بنا دیتے ہیں لیکن نماز

پڑھنے کا اذن عام نہیں دیتے ایسی جگہ بھی مسجد نہیں۔

حکم: مسجد تاقیامت مسجد ہے نہ اس کو مسجد کے علاوہ دوسرے معاملات کے لئے تبدیل کیا جا سکتا ہے اور نہ اس میں کوئی کمی کی جاسکتی۔

مسجد بیت کی تعریف

گھر کے اندر کسی جگہ کو عبادت کے لئے مخصوص کرنا مسجد بیت کہلاتا ہے۔

حکم: مسجد بیت شرعی احکام سے مستثنیٰ ہے۔ اس پر مسجد کے احکام مرتب نہیں ہوں گے۔ عورت مسجد بیت میں استکاف کر سکتی ہے۔

تحری کی تعریف

جب کسی موقع پر حقیقت معلوم کرنا دشوار ہو جائے تو سوچے اور جس جانب گمان غالب ہو اسی کے مطابق عمل کرے اس سوچنے کا نام تحری ہے۔

مثلاً قبلہ مشتبہ ہو جائے اور کوئی بتانے والا بھی نہ ہو تو تحری کرے جہاں دل جھے وہی قبلہ ہے۔ اسی طرح پاک اور ناپاک برتن یا کپڑے آپس میں اس طرح مل گئے کہ پاک و ناپاک میں تمیز کرنا مشکل ہو جائے تو تحری کرے جس کی نسبت پاک ہونے کا گمان ہو اس کپڑے میں نماز پڑھے یا اس برتن میں پانی پئے۔

حکم: تحری پر عمل کرنا اس وقت جائز ہے جب دلائل سے پتہ نہ چلے دلیل کے ہوتے ہوئے تحری پر عمل کرنا جائز نہیں ہے۔

مسافر کی تعریف

جو شخص تین دن اور اس کی راتوں کی مسافت کے لئے سفر کی نیت کے ساتھ گھر سے نکلے وہ شرعی مسافر ہے۔

نوٹ: اس مسافت کی کم از کم حد ساڑھے ستاون میل یعنی بانوے کلومیٹر ہے۔

علم: مسافر فرض نماز میں قصر کرے گا یعنی چار رکعت کی بجائے دو رکعت ادا کرے گا۔ مسافر کے لئے قصر تب ثابت ہوگا جب وہ شہر کی آبادی سے نکل جائے۔

قصر کی تعریف

قصر کا معنی یہ ہے کہ نماز کے بعض ارکان کم کر کے اس کو مختصر کر دیا جائے۔

مدت قصر: امام اعظم کے نزدیک مدت قصر پندرہ دن ہے اگر اس سے زیادہ قیام کا ارادہ کرے تو اس کو پوری نماز پڑھنی ہوگی۔

قصر میں سنت کا حکم: اختلاف کے نزدیک حالت سفر میں سنت موکدہ نہ پڑھے اور رخصت پر عمل کرے البتہ صبح کی سنتیں پڑھے اس لئے کہ وہ قریب واجب ہیں اور جب دوران سفر حالت اطمینان حاصل ہو تو سنتیں پڑھ لے۔

شہر کی تعریف

علا میں امام اعظم فرماتے ہیں وہ بڑی جگہ جہاں گھیاں اور بازار ہوں اور مضافاتی علاقہ ہو اور اس میں ایک حاکم ہو جو عوام الناس کے فیصلے کرنے پر قادر ہو اور لوگ اپنے معاملات میں اس کی طرف رجوع کریں شہر کہلاتا ہے۔

شہر کی ایک تعریف یوں بھی کی گئی ہے کہ جس میں متعدد کوچے و بازار ہوں اور وہ ضلع یا تحصیل ہو کہ اس کے متعلق دیہات گئے جاتے ہوں اور وہاں کوئی حاکم ہو کہ اپنے دبدبہ کے سبب مظلوم کو ظالم سے انصاف دے سکے یعنی انصاف پر قدرت کافی ہے اگر چہ نا انصافی کرتا ہو اور شہر کے آس پاس کی جگہ اگر شہر کی مصلحتوں کے لئے ہوا سے فنائے شہر کہتے ہیں، جیسے قبرستان، گھوڑ دوڑ کا میدان، اسٹیشن کہ یہ

چیزیں شہر سے باہر ہوں تو فٹائے شہر کہلائیں گی۔

حکم: شہر میں جمعہ پڑھنا جائز ہے جبکہ دیہات اور فٹائے شہر میں جائز نہیں۔

وطن کی تعریف

وطن کی تین قسمیں ہیں۔ (۱) وطن اصلی (۲) وطن اقامت (۳) وطن سکنی۔

وطن اصلی: ایسی جگہ کہ جہاں بندے نے سکونت اختیار کر لی ہو یا اس کی پیدائش ہوئی ہو یا اس کے اہل خانہ وہاں رہتے ہیں یا اس کا ارادہ ہے کہ یہاں سے نہیں جائے گا وطن اصلی کہلاتا ہے۔

وطن اقامت: وہ مقام کہ جہاں مسافر نے پندرہ دن یا اس سے زیادہ قیام کی نیت کی ہو وطن اقامت کہلاتا ہے اس شرط پر کہ اسے یقینی کاٹھکانہ نہیں بنائے گا۔

وطن سکنی: وہ مقام کہ جہاں مسافر نے دوران سفر پندرہ دن سے کم ٹھہرنے کا ارادہ کیا ہو وطن سکنی کہلاتا ہے۔

روزے کی تعریف

اہل عبادت کا عبادت کی نیت سے صبح صادق سے لے کر غروب آفتاب تک اپنے آپ کو کھانے، پینے اور جماع سے روکنا روزہ کہلاتا ہے۔

روزہ کی اقسام: روزہ کی مندرجہ ذیل سات قسمیں ہیں۔

(۱) فرض روزے: رمضان کے روزے، رمضان کی قضاء کے روزے، کفارہ قتل، کفارہ تلہار، کفارہ قسم کے روزے، احرام کی حالت میں شکار کرنے کی صورت میں جزاء کے روزے، حالت احرام میں کوئی ایسا فعل سرزد ہو گیا ہو جو احرام کے منافی ہو اس کے فدیہ کے روزے یہ تمام روزے ادا کرنا فرض ہے۔

(۲) واجب روزے: کسی چیز پر روزے کی نذر مانی، نذر پوری ہو جانے کے بعد روزہ رکھنا واجب ہے۔

(۳) سنت روزے: نویں، دسویں محرم اور ہر پیر کا روزہ رکھنا سنت ہے۔

(۴) مستحب روزے: صوم داودی، یعنی ایک دن روزہ ایک دن افطار اور ایام بیض کے روزے، نو (۹) ذی الحجہ کا روزہ یہ سب مستحب ہیں۔

(۵) نفل روزے: ہر وہ دن کہ جس میں روزہ رکھنا مکروہ نہ ہو ان دنوں میں روزہ رکھنا نفل ہے۔

(۶) مکروہ تنزیہی روزے: فقط دس محرم کا روزہ جب تک کہ ساتھ دوسرا روزہ نہ ملائے مکروہ تنزیہی ہے۔

(۷) مکروہی تحریمی روزے: عید الفطر، عید الفصحی اور ایام تشریق کا روزہ رکھنا مکروہ تحریمی ہے۔

روزے کے درجات: روزے کے تین درجے ہیں۔

(۱) ایک عام لوگوں کا روزہ یعنی پیٹ اور شرم گاہ کو کھانے پینے اور جماع سے روک لینا عوام الناس کا روزہ ہے۔

(۲) دوسرا خواص کا روزہ یعنی عوام الناس کے روزے کے علاوہ کان آنکھ زبان ہاتھ پاؤں اور تمام اعضاء کو گناہ سے محفوظ رکھنا خواص کا روزہ ہے۔

(۳) تیسرا خاص الخاص کا روزہ یعنی اللہ تعالیٰ کے ماسوا سے اپنے آپ کو کلی طور پر جدا کر کے صرف اسی کی طرف متوجہ رہنا خاص الخاص کا روزہ ہے۔

اعتکاف کی تعریف

لغوی معنی غرنا، قائم رہنا اور اصطلاح میں روزے دار کا اپنے دل کو دنیاوی مصروفیات سے فارغ کرنے اور خود کو اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں سوچنے کی نیت سے مسجد جماعت میں ٹھہرنا اعتکاف کہلاتا ہے۔
اقسام: اعتکاف کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) فرض (۲) سنت (۳) نفل۔

فرض اعتکاف: نذر مانی کر فلاں کام ہو گیا تو اتنے دن کا اعتکاف کروں گا منت پوری ہونے کے بعد اعتکاف فرض ہو جائے گا۔

سنت اعتکاف: بیسویں رمضان کی عصر سے لے کر عید کا چاند نظر آنے تک اعتکاف بیٹھنا سنت ہے۔

نفل اعتکاف: اس اعتکاف کی نہ تو کوئی مدت مقرر ہے اور نہ ہی روزہ رکھنا شرط ہے جب بھی مسجد میں جائے اعتکاف کی نیت کر لے۔

نوٹ: (۱) رمضان کے آخری عشرے کا اعتکاف سنت کفایہ ہے۔

(۲) عورت مسجد بیت میں اعتکاف کرے۔

اعتکاف کی شرائط: اعتکاف کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) اعتکاف کی نیت کرنا شرط ہے۔

(۲) جس مسجد میں اذان و اقامت ہو اور باجماعت نماز ہو اس میں اعتکاف کرنا۔

(۳) واجب اعتکاف میں روزہ بھی واجب ہے۔

(۴) نفل اعتکاف میں روزہ بھی نفل ہے۔

(۵) جنابت حیض اور نفاس سے پاک ہونا۔

(۶) مسلمان ہونا۔

(۷) عاقل ہونا۔ بالغ ہونا اور مرد ہونا شرط نہیں۔

زکوٰۃ کی تعریف

زکوٰۃ کا لغوی معنی ہے زیادتی اور شرعی معنی کے اعتبار سے مال مخصوص کا مالک نصاب پر ایک مقررہ مقدار میں واجب ہونا زکوٰۃ کہلاتا ہے۔

نصاب: (۱) زکوٰۃ کے وجوب کے لئے مال کا مقدار نصاب کو پہنچنا۔

(۲) مال کا نامی ہونا۔

(۳) اپنی ضروریات و قرض سے فارغ ہونا۔

(۴) اس مال پر سال کا گزرتا شرط ہے۔

مال کی اقسام: زکوٰۃ تین قسم کے مالوں میں واجب ہوتی ہے۔

(۱) سونا۔ (۲) چاندی۔ (۳) مال تجارت۔

نوٹ: روپے پیسے چاندی کے حکم میں ہیں۔

مقدار نصاب: (۱) سونے کی مقدار ساڑھے سات تولے (۲) چاندی کی مقدار ساڑھے

باون تولے (۳) مال تجارت چاندی کے حکم میں ہے

نوٹ: (۱) جس کے پاس فقط سونا ہو اور روپیہ اور مال تجارت نہ ہو تو اس پر باون تولے چاندی میں

زکوٰۃ نہیں بلکہ سونے کے نصاب کا اعتبار ہوگا

(۲) اگر سونا یا چاندی دونوں ہوں یا سونے کے ساتھ روپیہ وغیرہ اور مال تجارت بھی ہو تو

وزن معتبر نہ ہوگا بلکہ اب قیمت کا اعتبار ہوگا لہذا سونا چاندی نقد روپیہ اور مال تجارت سب ملا کر اگر

ان کی قیمت ساڑھے باون تولے چاندی کی قیمت کے برابر ہو جائے تو اس صورت میں زکوٰۃ فرض ہو

جائے گی۔

(۳) اسی طرح مال تجارت کی قیمت لگا کر اگر سونا چاندی اور روپیہ بھی ہو تو سب ملا کر

ساڑھے باون تولے چاندی کی قیمت کے برابر ہو جائے تو اب زکوٰۃ فرض ہو جائے گی۔

نوٹ: چاندی کی قیمت میں کمی، زیادتی ہوتی رہتی ہے لہذا جس دن اپنے مال سے زکوٰۃ نکالے گا اس دن کی چاندی کی قیمت معتبر ہوگی۔

صدقہ فطر کی تعریف

مال کی کسی مقررہ مقدار کا مخصوص شرائط کے ساتھ کسی صاحب نصاب پر عید کی صبح صادق طلوع ہوتے ہی واجب ہو جانا صدقہ فطر کہلاتا ہے۔

حکم: (۱) صدقہ فطر ہر مسلمان، مالک نصاب پر جس کی نصاب حاجت اصلیہ سے فارغ ہو واجب ہے۔ اس میں عاقل بالغ کی قید نہیں عمر بھر اس کا وقت ہے یعنی اگر ادا نہ کیا ہو تو اب ادا کرے ادا نہ کرنے سے ساقط نہیں ہوگا۔

(۲) صدقہ فطر شخص پر واجب ہے مال پر نہیں لہذا اگر گیا تو اس کے مال سے ادا نہیں کیا جائے گا۔

(۳) عید کے دن صبح صادق طلوع ہوتے ہی صدقہ فطر واجب ہو جاتا ہے۔

صدقہ فطر کی مقدار: صدقہ فطر کی مقدار گے ہوں یا آٹا یا ستوک نصف صاع یعنی سوا دو سیر ہے جس کی قیمت آج کے تقریباً ۲ روپے بنتی ہے۔

مال کی تعریف

امام محمد نے فرمایا ہر وہ چیز جس کے لوگ مالک بن سکتے ہوں وہ مال ہے مثلاً ذرہم، دینار، گندم، جو، جانور، کپڑا وغیرہ۔

ایک تعریف اس طرح بھی کی گئی ہے کہ ہر وہ چیز جس کی طرف طبیعت مائل ہو اور اس کا جمع کر کے رکھنا ممکن ہو مال کہلاتی ہے۔

مال کی اقسام: مال کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) مال مقوم: اس مال کو کہتے ہیں جس سے نفع اٹھایا جانا ممکن ہو۔

(۲) مال غیر مقوم: ایسا مال جس سے نفع اٹھایا جانا ممکن نہ ہو۔

مالک نصاب کی تعریف

جس شخص کے پاس ساڑھے سات تولہ سونا یا ساڑھے باون تولہ چاندی ہو یا اتنی ہی مالیت کی رقم یا مال تجارت ہو یا اتنی مالیت کا ایسا سامان ہو جو حاجت اصلیہ کے علاوہ ہوا سے مالک نصاب کہتے ہیں۔

حکم: ایسے شخص پر زکوٰۃ، فطرہ اور قربانی کرنا فرض ہو جائے گا۔

حاجت اصلیہ کی تعریف

وہ اشیاء کہ جن کی عام طور پر انسان کو ضرورت ہوتی ہے اور ان اشیاء کے مفقود ہونے کے وقت اس کا گزر برستگی و دشواری کے ساتھ ہو حاجت اصلیہ کہلاتی ہیں۔

مثلاً پہننے کے کپڑے اور جوتے، رہنے کے لئے مکان، دینی کتابیں یا گھریلو استعمال کے برتن وغیرہ، کام کاج کے اوزار، اپنے ذاتی استعمال کے لئے گاڑی وغیرہ۔

حکم: جو چیزیں حاجت اصلیہ میں داخل ہیں ان پر یا ان کی مالیت پر زکوٰۃ واجب نہیں۔

فقیر کی تعریف

وہ شخص کہ جس کے پاس کچھ مال ہو مگر بقدر نصاب نہ ہو، یا بقدر نصاب ہو مگر وہ نصاب غیر نامی ہو اور یہ شخص ضروریات زندگی میں گھرا ہوا ہو۔

حکم: ایسے شخص پر زکوٰۃ، فطرہ، قربانی فرض نہیں بلکہ یہ خود ان صدقات کا حقدار ہے۔

مسکین کی تعریف

وہ شخص کہ اس کے پاس کوئی چیز نہ ہو، نہ تن ڈھا پنے کو کپڑا اور نہ ہی نان نفقہ پر قادر ہو مسکین کہلاتا ہے۔
مسکین فقیر سے زیادہ خستہ حال ہوتا ہے۔
حکم: اس کا حکم وہی ہے جو فقیر کا ہے۔

یتیم کی تعریف

ایسا نابالغ انسان کہ جس کا باپ فوت ہو گیا ہو یتیم کہلاتا ہے کیونکہ اس کا نان نفقہ باپ کے ذمہ ہوتا ہے۔ اور جانوروں میں وہ یتیم ہے کہ جس کی ماں مرجائے کیونکہ اس کا دودھ اور کھانا ماں کی طرف سے ہوتا ہے۔
حکم: ایسا انسانی بچہ بھی صدقات کا حقدار ہے۔

عالم کی تعریف

عالم اس شخص کو کہتے ہیں جسے بادشاہ اسلام نے زکوٰۃ اور عشر وصول کرنے کے لئے مقرر کیا ہو۔
حکم: ایسے شخص کو کام کے لحاظ سے اتنا دیا جائے کہ اس کو اور اس کے مددگاروں کو متوسط طور پر کافی ہو مگر اتنا نہ دیا جائے کہ جو وصول کر لیا ہے اس کے نصف سے زیادہ ہو جائے۔

حج کی تعریف

لغوی معنی کسی معظّم کی طرف ارادہ کرنا اور اصطلاح شرع میں مقام مخصوص کا فعل مخصوص کے ساتھ وقت مخصوص میں شرائط مخصوصہ کے ساتھ ارادہ کرنا حج کہلاتا ہے۔
حج کی ایک تعریف اس طرح بھی ہے۔
احرام باندھ کر نوں ذی الحجہ کو عرفات میں ٹھہرنے اور کعبہ معظمہ کے طواف کا نام حج ہے۔

حج کی فرضیت قطعی ہے لہذا اس کی فرضیت کا انکار کرنے والا کافر ہے اور حج زندگی میں ایک مرتبہ فرض ہوتا ہے۔

حج کی اقسام: اس کی تین قسمیں ہیں۔
(۱) افراد (۲) قرآن (۳) تمتع۔

حج افراد: اس کا طریقہ یہ ہے کہ اس میں صرف حج کا احرام باندھا جاتا ہے اور فقط حج ہوتا ہے عمرہ نہیں کیا جاتا۔

حج قرآن: اس کا طریقہ یہ ہے کہ حاجی حج اور عمرہ کا ایک ہی احرام باندھ لیتا ہے اور مکہ مکرمہ پہنچنے کے بعد سب سے پہلے عمرہ کرتا ہے پھر حج تک حالت احرام میں رہتا ہے پھر حج کرتا ہے حج تمتع: اس حج کا طریقہ یہ ہے کہ دو رکعت نفل پڑھنے کے بعد سب سے پہلے عمرہ کی نیت کی جاتی ہے اور پھر مکہ معظمہ پہنچ کر عمرہ ادا کرتے ہیں اس کے بعد احرام کھول کر عام کپڑے پہن لئے جاتے ہیں اور پھر آٹھ ذی الحجہ کو حج کرنے سے پہلے احرام باندھ لیتے ہیں۔

حج تمتع کی شرائط: اس کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) حج کے مہینے میں پورا طواف یا طواف کا اکثر حصہ یا چار چکر۔

(۲) عمرہ کے احرام کا حج کے احرام سے مقدم ہونا۔

(۳) عمرہ فاسد نہ کیا ہو۔

(۴) حج فاسد نہ کیا ہو۔

قرآن کی شرائط: قرآن کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

عمرہ کے طواف کا اکثر حصہ وقوف عرفہ سے پہلے ہو چنانچہ اگر کسی نے طواف کے چار چکروں سے پہلے وقوف کیا تو قرآن باطل ہے۔

جج بدل کی تعریف

کسی مسلمان شخص کا کسی دوسرے مسلمان کو اپنی طرف سے جج کے لئے بھیجنا جج بدل کہلاتا ہے۔

جج بدل کی شرائط: جج بدل کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) جس کی طرف سے جج کیا جائے وہ معذور ہو یعنی خود ادا نہ کر سکتا ہو اور اگر اس قابل ہے کہ خود ادا کر سکتا ہے تو اس کی طرف سے جج ادا نہیں ہو سکتا۔

(۲) جج کے وقت سے لیکر موت تک یہ عذر باقی رہے اگر درمیان میں عذر جاتا رہا یعنی خود جج کرنے پر قادر ہو جائے تو پہلے والا جج ناکافی ہے۔

(۳) جس کی طرف سے جج کیا جائے اس نے حکم دیا ہو بغیر اذن اس کا جج نہیں ہو سکتا۔

(۴) مصارف (خرچہ وغیرہ) اس کے مال سے ہوں جس کی طرف سے جج ادا کیا جائے اگر دوسرا کرے گا توجہ نہ ہوا۔

جج کب واجب ہوتا ہے:

(۱) مسلمان ہونا۔ اگر اسلام لانے سے پہلے استطاعت تھی پھر فقیر ہو گیا تو اسلام لانے کے بعد زمانہ کفر کی استطاعت معتبر نہیں۔

(۲) مسلمان کو جج کی استطاعت حاصل تھی لیکن جج نہیں کیا بعد میں فقیر ہو گیا تو اب بھی جج کا ادا کرنا فرض ہے۔

(۳) جج کرنے کے بعد معاذ اللہ مرتد ہو گیا پھر مسلمان ہو گیا اور اب جج کی استطاعت حاصل ہو تو پھر جج فرض ہو جائے گا کہ مرتد ہونے کی وجہ سے جج اور دیگر نیک اعمال باطل ہو گئے۔

(۴) بالغ ہونا۔ نابالغ نے جج کیا تو یہ نفل جج ادا ہو گا بالغ ہونے کے بعد اگر استطاعت حاصل ہو جائے تو جج فرض ہو جائے گا۔

(۵) عاقل ہونا۔ مجنون یا نا سمجھ پر جج فرض نہیں۔

قربانی کی تعریف

قربانی کی شرعی تعریف یہ ہے کہ مخصوص عمر کے مخصوص جانور کو مخصوص دن میں تمام اسباب و شرائط کے پائے جانے کے وقت اللہ تعالیٰ کا قرب حاصل کرنے کی نیت سے ذبح کرنا قربانی کہلاتا ہے۔

قربانی کے واجب ہونے کی شرائط: قربانی کے واجب ہونے کی تین شرائط ہیں۔

(۱) غنی اور فقیر دونوں پر واجب: مثلاً قربانی کی منت مانی کہ فلاں کام ہوا تو اللہ تعالیٰ کے لئے بکری وغیرہ کی قربانی کروں گا۔

(۲) فقیر پر واجب غنی پر نہیں: فقیر نے قربانی کے لئے جانور خریدا تو اس پر اس کی قربانی کرنا واجب ہو جائے گی اور اگر غنی خریدا تو اس پر واجب نہ ہوتی۔

(۳) غنی پر واجب فقیر پر نہیں: مثلاً عید قربانی کہ اس عید پر غنی کے لئے جانور کی قربانی کرنا واجب ہے فقیر پر نہیں۔

ذبح کی تعریف

جانور کے گلے میں کچھ رگیں ہوتی ہیں ان رگوں کے کاٹنے کو ذبح کہتے ہیں اور جانور کو زچہ کہتے ہیں رگوں کی اقسام: رگیں چار ہیں۔

(۱) حلقوم۔ (۲) مری۔ (۳-۴) ودجین۔

حلقوم: وہ نالی جس میں سانس آتی جاتی ہے۔

مری: اس سے کھانا پانی اترتا ہے۔

ودجین: حلقوم اور مری کے ارد گرد دو رگیں ہوتی ہیں جن میں خون رواں ہوتا ہے۔

ذبح کی اقسام: ذبح کی دو قسمیں ہیں۔ (۱) اضطراری۔ (۲) اختیاری۔

ذبح اختیاری: جب کوئی مسلمان شخص جانور کے گلے پر چھری پھیرنے پر قادر ہو اور بسم اللہ پڑھ کر اس جانور کو ذبح کر سکے ذکاۃ اختیاری کہلاتا ہے۔

ذبح اضطراری: اگر مسلمان جانور کے گلے پر چھری پھیر کر ذبح نہ کر سکا ہو تو کسی آلہ کے ذریعے اسے ضرب لگا کر خون نکال لے ذکاۃ اضطراری کہلاتا ہے۔

مثلاً کوئی وحشی جانور گرفت میں نہ آ سکا ہو یا کوئی پالتو جانور بھاگ جاتا ہو اور اس پر گرفت نہ ہو سکے یا جانور کے مرنے کا خطرہ ہو یا یہ اکیلا ہے اور ذبح پر قادر نہیں اور جانور مرنے کے قریب ہو یا آلہ ذبح میسر نہ آ سکے تو ان صورتوں میں کسی ایسے آلہ کے ساتھ جو ذبح کے لئے استعمال نہ کیا جاتا ہو جیسے نیزہ، تیر یا تگوار یا کوئی لوک دار پتھر و لوہا وغیرہ جانور کے اندر گھونپ کر خون بہا دے تو جانور حلال ہو جائے گا۔

جہاد کی تعریف

اللہ تعالیٰ کے دین کی سر بلندی اور نصرت کے لئے کافروں سے لڑنا اور اپنی پوری طاقت و قوت کو خرچ کرنا جہاد کہلاتا ہے۔ اور شرعی احکام پر عمل پیرا ہونے کے لئے اپنے آپ کو تھکا دینا شہوت و لذت کی طرف مائل ہونے کی بناء پر نفس و شیطان کی مخالفت کرنا جہاد فی اللہ ہے۔

جہاد کی اقسام: جہاد کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) فرض عین (۲) فرض کفایہ۔

فرض عین: اگر کفار کسی اسلامی سلطنت پر حملہ کر دیں تو اس سلطنت کے تمام مسلمانوں پر جہاد فرض عین ہو گیا۔

فرض کفایہ: کفار کو تبلیغ دین کرنے کے بعد اگر وہ دین اسلام قبول نہ کریں تو ان کے ساتھ جہاد فرض کفایہ ہو جائے گا۔

جہاد کی صورتیں: (شعب الایمان)

شہید کی تعریف

فقہاء کی اصطلاح میں شہید اس مسلمان عاقل، بالغ، طاہر کو کہتے ہیں جو بطور قلم کسی آلہ جارحہ سے قتل کیا جائے اور نفس قتل سے مال واجب نہ ہو اور دنیا سے نفع بھی نہ اٹھایا ہو شہید کہلاتا ہے۔

شہید کی اقسام: شہید کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) شہید حقیقی (۲) شہید حکمی۔

شہید حقیقی: اس کی تعریف اوپر گزر گئی۔

شہید حکمی: وہ مسلمان جو مذکورہ بالا تعریف کے علاوہ حدیث پاک کی رو سے کسی اور

سبب سے فوت ہوا۔ حدیث پاک میں ان کا ذکر اس طرح ہے۔

(۱) جو طاعون سے فوت ہوا۔ (۲) جو ڈوب کر مرے۔ (۳) پیٹ کی بیماری میں مرنے والا (۴) جل کر مرنے والا۔ (۵) جس کے اوپر دیوار گر جائے۔ (۶) عورت بچہ پیدا ہونے سے مر جائے۔ سب شہید حکمی کہلاتے ہیں۔

حکم: شہید حقیقی کا حکم یہ ہے کہ اسے غسل نہ دیا جائے اور ویسے ہی خون سمیت دفن کر دیا جائے۔ جبکہ شہید حکمی کو عام طریقہ کار کے مطابق غسل و کفن اور دفن کیا جائے۔

ہجرت کی تعریف

ترک وطن کو ہجرت کہتے ہیں۔

ہجرت کی اقسام: ہجرت کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) ہجرت عامہ (۲) ہجرت خاصہ۔

(۱) ہجرت عامہ: تمام اہل وطن ترک وطن کر کے چلے جائیں۔

حکم: یہ ہجرت دارالحرب سے دارالاسلام کی طرف سب پر فرض ہے۔ دارالسلام سے ہجرت عامہ حرام ہے کہ اس میں مساجد کی ویرانی اور بے حرمتی ہے مسلمین کی بربادی، عورتوں، ضعیفوں، بچوں کی تباہی ہوگی۔

(۲) ہجرت خاصہ: وہ ہجرت جس میں خاص اشخاص ترک وطن کر کے چلے جائیں

تسم: ہجرت خاصہ میں تین صورتیں ہیں۔

(۱) اگر کوئی شخص کسی وجہ خاص سے کسی مقام خاص میں اپنے فرائض دینیہ بجا نہ لاسکے اور دوسری جگہ فرائض دینیہ بجالا ناممکن ہو تو اگر یہ خاص اسی مکان میں ہے تو اس پر فرض ہے کہ یہ مکان چھوڑ کر دوسرے مکان میں چلا جائے اگر اس محلہ میں معذور ہو تو دوسرے محلہ میں اٹھ جائے اور اس گھر میں مجبور ہو تو دوسرے شہر ہجرت کر جائے۔

(۲) دوسرے وہ کہ یہاں اپنے فرائض مذہبی بجالانے سے عاجز نہیں اور اس کے ضعیف ماں باپ یا بیوی بچے جن کا نفقہ اس پر فرض ہے وہ نہ جاسکیں یا نہ جانا چاہیں اور اس کے چلے جانے سے بے وسیلہ رہ جائیں گے تو اس کو دارالاسلام سے ہجرت کرنا حرام ہے۔

(۳) تیسرے وہ کہ نہ فرائض سے عاجز ہے نہ اس کی یہاں حاجت لہذا اسے اختیار ہے رہے یا چلا جائے جو اس کی مصلحت سے ہو۔

دارالاسلام کی تعریف

ایسا علاقہ کہ جہاں مسلمانوں کی حکومت ہو اور شعائر اسلامی اور شرعی احکام کا غلبہ ہو دارالاسلام کہلاتا ہے۔

دارالحرب کی تعریف

وہ علاقہ جہاں کفار کی حکومت ہو اور احکام کفریہ کا غلبہ ہو اور اس ملک میں مسلمانوں کو ان کے مسلمان ہونے کی بناء پر ان کی جان و مال اور عزت محفوظ نہ ہو دارالحرب کہلاتا ہے۔

دارالکفر کی تعریف

ایسا علاقہ جہاں پر کفار کی حکومت ہو اور ان کفار کے ساتھ مسلمانوں کے سفارتی تعلقات ہوں مسلمانوں کو تجارت کی مکمل آزادی حاصل ہو اور مسلمانوں کو اس مملکت میں جان و مال اور عزت کا تحفظ حاصل ہو احکام شریعہ پر عمل پیرا ہونے کی عام اجازت ہو دارالکفر کہلاتا ہے۔

مسلم کی تعریف

وہ شخص جس نے مذہب اسلام کو قبول کیا ہو اور اس کے تمام اصول و فروع، عقائد و عبادات و معاملات میں اس کی پابندی کا دل و زبان سے عہد و اعتراف کیا ہو مسلم کہلاتا ہے۔

غیر مسلم ذمی کی تعریف

وہ شخص جس نے اسلام کو قبول نہیں کیا لیکن سلطان اسلام سے اجازت حاصل کر کے دستوری معاہدہ کے ساتھ اسلامی حکومت میں اس نے مستقل سکونت اختیار کر لی ہو یعنی وہیں کا باشندہ ہو گیا ہو۔

غیر مسلم مستامن کی تعریف

یہ بھی ایک طرح کا ذمی ہی ہے لیکن فرق یہ ہے کہ اس کا قیام اسلامی حکومت میں محض عارضی ہوتا ہے جیسے آج کے زمانے میں کسی بھی غیر ملک میں دیزالے کر جانے والے کا قیام عارضی ہوتا ہے۔

غیر مسلم جو نہ ذمی ہو اور نہ مستامن

ایسا شخص کہ جو سلطان اسلام سے کوئی دستوری معاہدہ کئے بغیر دارالاسلام میں عارضی یا مستقل رہائش

پذیر ہو یا غیر دارالاسلام کا باشندہ ہو۔

حکم: ذمی اور مستامن چونکہ اپنی رضا و خوشی سے سلطان اسلام سے دستوری معاہدہ کر کے اس کی حکومت میں مستقل یا عارضی رہائش اختیار کرتے ہیں اور اس معاہدہ میں ان پر کوئی جبر و زور نہیں ہوتا اس لئے دیوانی کے معاملات اور تعزیرات میں ان کا حکم ٹھیک وہی ہے جو مسلمان کا ہے لہذا جو معاملات مسلمانوں کے درمیان باہم حرام و گناہ ہوں گے وہ تمام تر معاملات مسلمان اور غیر مسلم ذمی و مستامن کے درمیان بھی حرام و گناہ قرار پائیں گے۔ اور جس غیر مسلم نے سلطان اسلام سے کوئی دستوری معاہدہ نہیں کیا اس پر عبادات کی طرح سے دیوانی کے معاملات میں بھی اسلامی قانون کا اطلاق نہیں ہوگا اور اسے اس بات کی مکمل آزادی حاصل ہوگی کہ اپنے تمام مال و اسباب میں اپنے مذہب کے مطابق جیسے چاہے تصرف کرے کہ جب اس نے مذہب اسلام کو قبول ہی نہیں کیا اور کاروبار میں بھی اس نے اسلامی اصولوں سے کوئی مصالحت نہیں کی تو اسلامی اصول کی پابندی اس کے ذمہ کیوں عائد ہوگی۔

کفار کی مزید اقسام: کفار کی مندرجہ ذیل اقسام ہیں۔

کافر کی تعریف

جو شخص ظاہری و باطنی دونوں صورتوں میں ایمان نہ لائے کافر کہلاتا ہے۔

زندیق کی تعریف

وہ شخص کہ جو نبی کی نبوت کو تسلیم کرتا ہو شعائر اسلامی کا اظہار بھی کرتا ہو لیکن اس کے قلب میں عقائد کفریہ ہوں زندیق کہلاتا ہے۔

ملحد کی تعریف

وہ شخص کہ جو شریعت سے کفر کی کسی محبت کی طرف مائل ہو ملحد کہلاتا ہے۔ ایک تعریف یہ ہے کہ ایسا

شخص جو اسلام کے عقائد یا قرآن کی آیتوں کا ایسا ترجمہ اور معنی کرے جو اجماع کے خلاف ہو ملحد ہے۔

معطل کی تعریف

وہ شخص جو اللہ تعالیٰ کے وجود کا انکار کرتا ہو معطل کہلاتا ہے۔

دہریہ کی تعریف

وہ شخص جو زمانے کو قدیم ماننے سے انکار کرے اور حوادث کی زمانے کی طرف نسبت کرے دہریہ کہلاتا ہے۔

کتابی کی تعریف

وہ شخص جو سابقہ منسوخ شدہ دینوں کا معتقد ہو جیسے یہودی، عیسائی کتابی کہلاتا ہے۔

مشرک کی تعریف

وہ شخص جو کئی خداؤں کو مانے یا غیر اللہ کی عبادت کرے مشرک کہلاتا ہے۔ جیسے ہندو اور آتش پرست وغیرہ۔

حکم: جو شخص کافر، منافق یا ملحد یا زندیق وغیرہ ہو اسے مسلمانوں کے قبرستان میں دفن کرنا، ان کی نماز جنازہ میں شریک ہونا ان کے لئے مغفرت و بخشش کی دعا کرنا، ان کے ساتھ مسلمانوں کا سبوتاؤ کرنا کفر اور حرام و گناہ ہے۔

مرتد کی تعریف

وہ شخص جو مسلمان ہونے کے بعد کفر کی طرف لوٹ جائے مرتد کہلاتا ہے۔ مرتد کی ایک تعریف اس طرح بھی کی گئی ہے۔

وہ شخص کہ اسلام لانے کے بعد کسی ایسے امر کا انکار کرے جو ضروریات دین سے ہو یعنی زبان سے کلمہ کفر کہے جس میں تاویل صحیح کی گنجائش نہ ہو اسی طرح اگر کوئی شخص بطور شخصہ و مذاق بھی کفر کرے گا تو بھی مرتد ہے۔

حکم: مرتد پر حاکم وقت اسلام پیش کرے اگر وہ مہلت مانگے تو تین دن قید میں رکھا جائے اور اگر اس نے مہلت نہ مانگی اور اس کے اسلام قبول کر لینے کی امید ہو جب بھی تین دن قید رکھا جائے پھر اگر مسلمان ہو جائے تو بہت اچھا اور نفل کر دیا جائے۔ بغیر اسلام پیش کئے قتل کرنا مکروہ ہے۔
مرتد کی شرائط: مرتد ہونے کی چند شرائط ہیں۔

- (۱) عاقل ہونا۔ ناسمجھ یا پاگل نے کفر کیا تو مرتد نہیں۔
- (۲) ہوش میں ہونا۔ اگر نشہ میں کلمہ کفر کا تو مرتد نہیں۔
- (۳) اختیار حاصل ہو۔ مجبوری اور اکراہ کی وجہ سے کفر کا تو مرتد نہیں۔

منافق کی تعریف

وہ شخص جو ظاہری طور پر ایمان لائے لیکن دل میں کفر رکھے منافق کہلاتا ہے جیسے عبداللہ بن ابی۔

منافق کی اقسام: منافق کی دو قسمیں ہیں

- (۱) منافق عملی
- (۲) منافق اعتقادی۔

منافق اعتقادی: اس کی تعریف ادھر گزر گئی۔

حکم: ایسا شخص پکا کافر ہے۔

منافق عملی: ایسا شخص کہ ظاہری اور باطنی طور پر تو مسلمان ہو لیکن اس کے اندر منافقوں والی حرکتیں ہوں۔ مثلاً جھوٹ بولنا، وعدہ خلافی کرنا، گالی گلوچ کرنا، امانت میں خیانت کرنا۔ جیسا کہ حدیث پاک میں ہے کہ منافق ہے وہ شخص جو بات کرے تو جھوٹ بولے، وعدہ کرے تو اس کو پورا نہ

کرے۔ جھگڑا کرے تو گالیاں بکے اور اس کے پاس کوئی امانت رکھی جائے تو خیانت کرے۔

نوٹ: اس حدیث پاک میں منافق سے مراد منافق عملی ہے۔

حکم: ایسا شخص مسلمان ہے لیکن فاسق و فاجر ہے اسے منافق اعتقادی جان کر منافق کہنا کفر ہے۔

مال غنیمت کی تعریف

وہ مال جو لڑائی کے دوران کافروں سے غیظ و غضب کے طور پر لیا جائے غنیمت کہلاتا ہے۔

حکم: مال غنیمت میں چار حصے مجاہدین پر تقسیم ہوں گے اور پانچواں حصہ بیت المال میں جمع کیا جائے گا۔

مجاہدین میں تقسیم کا طریقہ کار: (۱) ہر سوار مجاہد، پیدل مجاہد کی بہ نسبت دو گنا پائے گا یعنی ایک اس کا حصہ اور ایک گھوڑے کا۔

(۲) لشکر کا سردار اور سپاہی تقسیم میں برابر ہیں یعنی جتنا سپاہی کو ملے گا اتنا سردار کو۔

(۳) اونٹ، گدھے اور خیر والے کو ان کی سوار یوں کی وجہ سے زیادہ نہیں ملے گا یعنی

انہیں بھی پیدل کے برابر ملے گا۔

جزیہ کی تعریف

حکومت اسلامیہ کی طرف سے ذمی کافر پر جو کچھ مقرر کیا جائے اسے جزیہ کہتے ہیں۔

اقسام: جزیہ کی دو قسمیں ہیں۔

- (۱) مال کی کسی معین مقدار پر صلح ہوئی کہ ہر سال کفار سلطنت اسلامیہ کو اتنا مال دیں گے۔

حکم: اس میں کمی بیشی بالکل نہیں ہو سکتی اور شریعت کی طرف سے اس کی کوئی مخصوص مقدار مقرر نہیں بلکہ جتنے مال پر صلح ہوئی وہی دینا پڑے گا۔

(۲) مسلمانوں نے ملک فتح کیا اور کافروں کے املاک بدستور چھوڑ دئے چنانچہ اس پر شریعت کی جانب سے ان کی حالت کے مطابق جزیہ مقرر کیا جائے گا۔ ان کفار کی رضا اور عدم رضا معتبر نہیں اس جزیہ کی مقدار حسب ذیل ہے۔

(۱) مال دار کافروں پر اڑھتالیس درہم سالانہ یا ہر مہینے چار درہم۔

(۲) متوسط طبقہ پر چوبیس درہم سالانہ یا ہر مہینے دو درہم۔

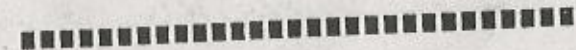
(۳) فقیر طبقہ پر بارہ درہم سالانہ یا ہر ماہ میں ایک درہم ادا کرنا ہوگا۔

عشر و خراج کی تعریف

وہ شہر جو طاقت سے فتح کیا گیا اور وہاں کی زمین مجاہدین پر تقسیم کی گئی یا وہ زمین کہ جہاں لوگ خود بخود مسلمان ہو گئے عشری کہلاتی ہے۔

اور جو شہر از روئے صلح ہوا یا جنگ کی صورت میں لیکن وہ زمین مجاہدین میں تقسیم نہیں ہوئی بلکہ وہیں کے لوگ برقرار رکھے گئے ایسی زمین کو خراجی کہتے ہیں۔

حکم: مسلمان نے بنجر زمین کو آباد کیا اگر اس کے آس پاس والی زمین عشری ہے تو یہ بھی عشری تصور کی جائے گی اور اگر خراجی ہے تو یہ بھی خراجی کہلائے گی۔



باب المعاملات

نکاح کی تعریف

ایسا عقد جو اس لئے مقرر کیا گیا ہو کہ مرد و عورت کی شرم گاہ کا مالک ہو جائے اور اس کو عورت کے ساتھ جماع وغیرہ کرنا حلال ہو جائے نکاح کہلاتا ہے۔

نکاح کی صورتیں: نکاح کی مندرجہ ذیل چھ صورتیں ہیں۔

(۱) فرض: جو شخص مہر اور نان نفقہ دینے پر قادر ہو اور اسے مکمل یقین ہو کہ نکاح نہ کرنے

کی صورت میں زنا میں مبتلا ہو جائے گا تو اس صورت میں نکاح کرنا فرض ہے۔

(۲) واجب: اگر زنا کا فظ اندیشہ ہو یقین کامل نہ ہو اور نان نفقہ پر بھی قادر ہو تو نکاح کرنا

واجب ہے۔

(۳) سنت موكده: اگر غلبہ شہوت ہو تو نکاح کرنا سنت موكده ہے۔

(۴) مستحب: اگر شہوت کا غلبہ نہ ہو تو نکاح کرنا مستحب ہے۔

(۵) مکروہ: اگر اندیشہ ہے کہ نکاح کرنے کی صورت میں نان نفقہ نہیں دے سکے گا اور

حقوق زوجہ ادا نہیں کر سکے گا تو نکاح کرنا مکروہ ہے

(۶) حرام: اور اگر ان باتوں کا یقین ہو تو نکاح کرنا حرام ہے۔

مشورہ: جو نوجوان نکاح کی استطاعت نہ رکھتا ہو اسے چاہئے کہ کثرت سے روزے رکھے انشاء اللہ

شہوت پر قابو رہے گا۔

مہر کی تعریف

وہ مال جو نکاح کے دوران مرد اور عورت کے درمیان طے پائے مہر کہلاتا ہے۔

مہر کی اقسام: مہر کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) مہر مہر (۲) مہر مہر (۳) مہر مہر

مہر مہر: ایسا مہر جو غلوٹ سے پہلے دیا جائے مہر مہر کہلاتا ہے۔

حکم: مہر مہر وصول کرنے کے لئے عورت جماع کرنے سے مرد روک سکتی ہے۔

مہر مہر: وہ مہر کہ جس کی ادائیگی کے لئے کوئی مدت مقرر کر دی جائے۔

حکم: مہر مہر میں مقررہ مدت تمام ہونے کے بعد عورت جماع سے روک سکتی ہے پہلے نہیں۔

مہر مہر: ایسا مہر جسے نہ تو غلوٹ سے پہلے دینا ضروری ہو اور نہ ہی کوئی مدت مقرر ہو۔

حکم: مہر مہر وصول کرنے کے لئے عورت شوہر کو جماع سے کبھی نہیں روک سکتی۔

مہر کی مقدار: مہر کی کم سے کم مقدار دس درہم ہے اس سے کم نہیں اور زیادہ سے زیادہ کی کوئی مقدار مقرر نہیں لیکن بھاری مہر مقرر کرنا خلاف سنت ہے۔

محرمات کی تعریف

محرمات ان عورتوں کو کہتے ہیں جن سے نکاح کرنا مرد کو حرام ہوتا ہے۔

حرام ہونے کے اسباب: حرام ہونے کے مندرجہ ذیل اسباب ہیں۔

(۱) بہ سبب نسب: یعنی نسب کی وجہ سے نکاح کا حرام ہونا۔ اس قسم میں سات عورتیں ہیں۔ ماں، بیٹی، بہن، پھوپھی، خالہ، بھتیجی، بھانجی۔

(۲) بہ سبب مصاہرت: ایسی عورت جس سے جماع کر لیا ہو اس کی بیٹیاں، بیوی کی ماں

دادی، نانی، باپ، دادا، بیٹے، پوتے وغیرہ سے نکاح حرام ہے۔

(۳) جمع بین المحارم: ایسی دو عورتوں سے بھی نکاح حرام ہے کہ ان میں جس ایک کو مرد

فرض کریں تو دوسری اس کے لئے حرام ہو۔

مثال نمبر (۱) دو بہنیں، کہ ایک کو مرد فرض کریں تو بھائی بہن کا رشتہ ہوا لہذا نکاح حرام۔

مثال نمبر (۲) پھوپھی بھتیجی، اگر پھوپھی کو مرد فرض کر دو تو چچا بھتیجی کا رشتہ ہوا اور بھتیجی کو مرد

فرض کر دو تو پھوپھی بھتیجی کا رشتہ ہوا لہذا نکاح حرام۔

مثال نمبر (۳) خالہ بھانجی، اگر خالہ کو مرد فرض کر دو تو ماموں بھانجی کا رشتہ ہوا اور بھانجی کو مرد

فرض کر دو تو بھانجی خالہ کا رشتہ ہوا لہذا نکاح حرام۔

(۴) حرمت بالشرب: یعنی مسلمان مرد و عورت کا نکاح کسی مشرک سے نہیں ہو سکتا۔

(۵) حرمت بوجہ تعلیق حق غیر: دوسرے کی منکوحہ سے نکاح نہیں ہو سکتا۔

(۶) متعلق بعدد: یعنی مسلمان آزاد کو بیک وقت چار عورتوں سے زیادہ نکاح حلال نہیں۔

(۷) بوجہ رضاعت: یعنی رضاعی بہن بھائی سے نکاح حرام ہے۔

غیر کفو کی تعریف

شرعی اعتبار سے غیر کفو وہ شخص ہے جو نسب یا مذہب یا پیشے یا چال چلن میں ایسا کم ہو کہ اس کے ساتھ عورت کا نکاح عورت کے خاندان والوں کے لئے بے عزتی تصور کیا جائے غیر کفو کہلاتا ہے۔

حکم: ایسے شخص سے اگر کسی بالغ عورت نے بغیر اذن ولی اپنی مرضی سے نکاح کر لیا تو نکاح نہیں

کا

جوازی صورت: اگر ولی نکاح سے پہلے غیر کفو کی حالت پر مطلع ہو جائے اور لڑکی کو اس کے

ساتھ نکاح کرنے کی صریحا اجازت دے دے تو نکاح جائز ہو جائے گا۔

ولی کی تعریف

وہ شخص کہ جس کا قول دوسرے پر نافذ ہو جائے دوسرا اس پر راضی ہو یا نہ ہو ولی یعنی سرپرست کہلاتا ہے۔

ولی کی شرائط: ولی کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) عاقل و بالغ ہو۔ بچہ یا مجنون ولی نہیں بن سکتا۔

(۲) مسلمان کے ولی کا مسلمان ہونا۔ کافر کو مسلمان پر اختیار نہیں۔

(۳) متقی ہونا شرط نہیں فاسق بھی ولی بن سکتا ہے۔

حکم: ولی کو ہر قسم کے قولی و فعلی تصرفات میں اختیار حاصل ہوتا ہے۔

عنین کی تعریف

وہ شخص جو مرض یا بڑھاپے کی وجہ سے جماع پر قادر نہ ہو یا شبیہ سے جماع کر سکتا ہے لیکن باکرہ سے نہیں عنین کہلاتا ہے۔

تفصیل:

آلہ تامل تو موجود ہو لیکن عورت کی شرم گاہ میں دخول پر قدرت نہ رکھتا ہو یا بعض عورت سے جماع کر سکتا ہے اور بعض سے نہیں تو جس سے نہیں کر سکتا اس کے حق میں اس کو عنین کہیں گے اور جس سے دخول کر سکتا ہے اس عورت کے حق میں یہ عنین نہیں۔

حکم: ایسے مرد اور عورت کے درمیان تفریق کر دی جائے گی۔

ضبط تولید (عزل) کی تعریف

حمل سے بچنے کے لئے وقت انزال مرد کا اپنی عورت کی شرم گاہ سے آلہ تامل نکال لینا عزل یعنی ضبط تولید کہلاتا ہے۔

حکم: عزل یعنی ضبط تولید کے حکم کی مندرجہ ذیل صورتیں ہیں۔

حرام: (۱) جو شخص عزل یعنی ضبط تولید کا عمل تنگی رزق کی بناء پر کرتا ہے تو اس کا یہ فعل حرام ہے کیونکہ اس کی حرمت قرآن و حدیث سے ثابت ہے۔

(۲) اسی طرح لڑکیوں کی پیدائش سے احتراز کی وجہ سے ضبط تولید کرنا بھی حرام ہے۔

واجب: (۱) جب پیٹ میں مزید آپریشن کی گنجائش نہ رہے تو ضبط تولید کرنا واجب ہے۔

(۲) اگر ماہر ڈاکٹر کہہ دے کہ مزید بچہ پیدا ہونے سے عورت کی جان کو خطرہ ہے تو ضبط تولید واجب ہے۔

جائز: (۱) اگر مسلسل پیدائش سے بچوں کی تربیت اور نگہداشت میں حرج کا خدشہ ہو تو وقفے سے پیدائش کے لئے ضبط تولید جائز ہے۔

(۲) اگر سلسلہ تولید کو قائم رکھنے سے عورت کے شدید بیمار ہونے کا خدشہ ہو تو ضبط تولید

جائز ہے۔

متعہ کی تعریف

طے شدہ معاوضہ سے ایک معین مدت تک کے لئے کسی عورت کو اپنی ثبوت پوری کرنے کے لئے حاصل کرنا متعہ کہلاتا ہے۔

لطفیہ: اس میں نہ گواہوں کی ضرورت ہوتی ہے اور نہ ایسی عورتوں کے لئے تعداد کی قید ہے نہ نان نفقہ کی، نہ میراث، نہ ظہار، نہ طلاق اور نہ عدت کی ضرورت ہے جہاں مرد و عورت باہم راضی ہوئے مدت و مال طے ہوا، وہیں جنسی تسکین کا سامان کر لیا۔

حکم: احناف کے نزدیک متہ حرام ہے۔

ولیمہ کی تعریف

شبِ زفاف کی صبح کو دوست احباب کی دعوت کرنا ولیمہ کہلاتا ہے۔ رخصتی سے پہلے جو دعوت کی جاتی ہے اسے ولیمہ نہیں کہتے۔

حکم: دعوت ولیمہ کرنا سنت مبارکہ ہے لیکن ریاکاری کی نیت سے ولیمہ کرنا حرام ہے اور جہاں دعوت کو قرض سمجھا جاتا ہو وہاں قرض اتارنے کی نیت سے دعوت کرنا حرج نہیں۔

دعوت میں شرکت کرنے کی صورتیں: اس کی مندرجہ ذیل صورتیں ہیں۔

دعوت ولیمہ میں شرکت سنت ہے۔ ولیمہ کے علاوہ دوسری دعوتوں میں جانا بھی افضل ہے اور اگر یہ شخص روزہ دار نہ ہو تو کھانا کھانا افضل ہے اور اگر اپنے مسلمان بھائی کی خوشی میں شرکت اور اس کا دل خوش کرنا ہے اور یہ روزہ دار بھی ہے تو بھی جانا جائز ہے۔ لیکن دعوت ولیمہ کا یہ حکم جو بیان ہوا ہے اس وقت ہے کہ دعوت کرنے والوں کا مقصود ادائے سنت ہوا اگر مقصود نفرد بڑائی ظاہر کرنا ہو تو ایسی دعوتوں میں شریک نہ ہونا بہتر ہے خصوصاً اہل علم کو ایسی جگہ نہ جانا چاہئے۔

عقیقہ کی تعریف

بچے کی پیدائش کے بعد اس کے سر کے بال منڈانے اور پیدائش کے شکر یہ میں جو جانور ذبح کیا جائے اسے عقیقہ کہتے ہیں۔

حکم: (۱) احناف کے نزدیک بچے کا عقیقہ کرنا سنت مبارکہ ہے۔

(۲) عقیقہ لڑکے کا ہو تو دو بکرے اور لڑکی کا ہو تو ایک بکری۔ لیکن اس کا الٹ بھی کیا جا

سکتا ہے۔

(۳) بکرے اور بکری کی عمر ایک سال ہونا ضروری ہے۔

(۴) عقیقہ قربانی کے جانور میں حصہ ڈال کر بھی کیا جاسکتا ہے۔
(۵) عقیقہ پیدائش کے ساتویں دن کیا جائے۔ اسی دن بال بھی کاٹے جائیں اور ختنہ بھی کر دیا جائے۔

طلاق کی تعریف

نکاح کی وجہ سے عورت اپنے شوہر کی پابند ہو جاتی ہے اس پابندی کے اٹھا دینے کا نام طلاق ہے۔

طلاق کی تقسیم (۱): طلاق کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) احسن (۲) حسن (۳) بدی۔

طلاق احسن: عورت جب اپنے ایام ماہواری سے پاک ہو جائے اور ان ایام میں مرد نے عورت سے جماع نہ کیا ہو ان میں مرد صرف ایک طلاق دے اس کے بعد عورت عدت گزارے عدت گزارنے کے بعد عورت بائند ہو جائے گی اس صورت میں مرد عورت کے باہم رضامندی سے حلالہ کئے بغیر دوبارہ نکاح ہو سکتا ہے۔

طلاق حسن: جن ایام میں عورت حیض یعنی ماہواری سے پاک ہو جائے اور مرد نے عورت سے جماع بھی نہ کیا ہو ان ایام میں مرد ایک طلاق دے جب ایک حیض گزر جائے تو جماع کیے بغیر دوسری طلاق دے اور جب دوسرا حیض بھی گزر جائے تو بغیر جماع کئے تیسری طلاق دے جب تیسری ماہواری گزر جائے تو عورت اب مغلظہ یعنی مرد پر حرام ہو جائے گی لہذا اس صورت میں اب حلالہ کئے بغیر اس سے نکاح نہیں کر سکتا۔

طلاق بدی: طلاق بدی کی تین مندرجہ ذیل صورتیں ہیں۔

(۱) مجلس واحدہ میں دفعتاً تین طلاقیں دینا، چاہے منفرد الفاظ سے دے یا ایک ہی کلمہ سے مثلاً میں نے تجھے طلاق دی، میں نے تجھے طلاق دی، میں نے تجھے طلاق دی۔ یا میں نے تمہیں تین طلاقیں دیں۔

(۲) طلاق بدی کی دوسری صورت یہ ہے کہ ایام حیض میں مرد نے عورت کو ایک طلاق دی اس طلاق میں مرد پر واجب ہے کہ فوراً عورت سے رجوع کرے کیونکہ حیض کے دوران طلاق دینا سخت گناہ ہے۔

(۳) جن ایام میں مرد نے عورت سے جماع کیا ان دنوں میں عورت کو ایک طلاق دی طلاق بدی کہلاتی ہے۔

حکم: طلاق بدی کی ان تین صورتوں میں مرد گناہ گار ہوگا۔

طلاق کی تقسیم: (۱) طلاق رجعی (۲) طلاق بائنہ (۳) طلاق مغلظہ۔

طلاق رجعی: لفظ صریح (ایسا لفظ جس کا معنی بالکل واضح ہو جیسے لفظ طلاق) کے ساتھ ایک یا دو طلاقیں دے۔ اس میں مرد عورت سے دوران عدت رجوع کر سکتا ہے اسے طلاق رجعی کہتے ہیں حکم: طلاق رجعی میں مرد دوبارہ بغیر نکاح کے عورت سے رجوع کر سکتا ہے لیکن سابقہ طلاق شمار کی جائے گی۔ مثلاً پہلے ایک طلاق دی بعد رجوع اب دو طلاقیں کا مالک رہے گا۔

طلاق بائنہ: اگر لفظ کنایہ (وہ لفظ جس کا معنی واضح نہ ہو جیسے کہا تو مجھ سے فارغ ہے) سے طلاق دی تو اس کو طلاق بائنہ کہتے ہیں اب اس جملے سے واضح نہیں تھا کہ اس کی مراد نان نفقہ وغیرہ سے فارغ کرنا مقصود تھا یا طلاق مراد تھی لہذا طلاق کی نیت کی صورت میں طلاق بائنہ پڑ جائے گی۔

حکم: طلاق بائنہ کی صورت میں نکاح فوراً باطل ہو جاتا ہے لیکن اگر تین طلاقیں سے کم طلاق بائنہ ہوں تو دوران عدت دونوں کی رضامندی سے دوبارہ نکاح ہو سکتا ہے لیکن پچھلی طلاق شمار ہوگی۔

طلاق مغلظہ: تین طلاقیں یکبارگی یا متعدد الفاظ کے ساتھ دیں طلاق مغلظہ کہلاتی ہے۔

حکم: اس سے عورت فوراً نکاح سے نکل جائے گی اور عدت گزرنے کے بعد حلالہ کے بغیر اس عورت سے دوبارہ نکاح نہیں کر سکتا۔

تعطیل کی تعریف

ایک جملہ کے مضمون کے حصول کو دوسرے جملہ کے مضمون کے حصول پر منحصر کرنا یعنی ایک کے پائے جانے کا انحصار دوسرے پر ہو تعطیل کہلاتا ہے۔

تعطیل کے ارکان: تعطیل کے مندرجہ ذیل ارکان ہیں۔

(۱) جزا: جسے معلق کیا جائے۔

(۲) شرط: جس کے ساتھ معلق کیا جائے۔

مثلاً: کسی نے اپنی بیوی کو کہا کہ تو دروازے سے باہر نکل تو تجھے طلاق ہے۔ اس مثال میں طلاق دروازے سے باہر نکلنے پر معلق یعنی موقوف ہے جو نبی دروازے سے نکلنے کی شرط پائی جائے گی تو جزا یعنی طلاق واقع ہو جائے گی۔

شرائط: شرط کے ثبوت کے لئے یہ ضروری ہے کہ شرط مناسب ہو عقد کے وقت موجود نہ ہو اور اس کا پایا جانا ممکن ہو اگر موجودہ شرط پر کسی فعل کو معلق کیا گیا تو جزا فوراً پائی جائے گی اور نافذ العمل ہوگی اور اگر تعطیل ایسی شرط کے ساتھ ہو جس کا پایا جانا محال ہو تو وہ شرط باطل ہوگی۔

خلع کی تعریف

مال کے بدلے میں ملک نکاح ختم کرنے کو خلع کہتے ہیں۔

خلع کے الفاظ: شوہر نے کہا میں نے خلع کیا عورت نے کہا میں راضی ہوئی یا عورت نے کہا مجھ کو ہزار روپے کے بدلے طلاق ہے شوہر نے کہا ہاں تو طلاق ہو گئی۔

خلع کی شرائط: خلع کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) خلع میں عورت کا قبول کرنا شرط ہے عورت کے قبول کے بغیر خلع نہیں ہو سکتا۔

(۲) چونکہ شوہر کی جانب سے خلع طلاق ہے لہذا شوہر کا عاقل، بالغ ہونا شرط ہے تا بالغ یا پاگل خلع نہیں کر سکتا۔

(۳) اگر نکاح فاسد ہو یا عورت مرتد ہوگئی تو پھر بھی خلع نہیں ہو سکتا۔

ایلاء کی تعریف

خاوند اپنی بیوی سے چار مہینے یا اس سے زیادہ جماع نہ کرنے کی قسم کھائے ایلاء کہلاتا ہے۔

حکم: (۱) اگر خاوند عدت کے اندر جماع نہیں کرے گا تو عورت پر ایک طلاق بائن واقع ہو جائے گی۔

(۲) اگر مدت ایلاء کے اندر اس نے ہم بستری کر لی تو ایلاء ساقط ہو جائے گا اور مرد کو کفارہ ادا کرنا واجب ہو جائے گا۔

ظہار کی تعریف

کوئی شخص اپنی بیوی یا اس کے ایسے جز کو جسے بول کر عورت کا کل مراد لیا جائے ایسی عورت سے تشبیہ دے کہ وہ عورت اس مرد پر ہمیشہ ہمیشہ کے لئے حرام ہو یا اس عورت کے ایسے عضو سے تشبیہ دے کہ اس عضو کی طرف دیکھنا اس مرد پر حرام ہو ظہار کہلاتا ہے۔

مثلاً: مرد اپنی بیوی سے اس طرح کہے کہ تو مجھ پر میری ماں کی مثل ہے یا یوں کہے کہ تیری گردن یا تیری پیٹھ یا تیرا نصف میری ماں یا میری بہن کی مثل ہے۔

امام جر جانی ظہار کی تعریف کرتے ہوئے فرماتے ہیں
اپنی زوجہ کے کسی عضو کو اپنی نسب یا رضائی ماں یا بہن کے کسی ایسے عضو کے ساتھ تشبیہ دینا کہ جس کا دیکھنا اس مرد پر حرام تھا ظہار کہلاتا ہے۔

حکم: ظہار کا حکم یہ ہے کہ عورت پر ایک طلاق بائن پڑ جائے گی۔

ظہار کی شرائط: ظہار کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) بالغ ہونا۔ تا بالغ، بے ہوش، پاگل یا سونے والے نے ظہار کیا تو ظہار نہ ہوا۔

(۲) مسلمان ہونا۔ کافر نے کہا تو ظہار نہ ہوا۔

(۳) ہمیشہ ملاق میں یا نشہ میں یا مجبور کیا گیا یا زبان سے غلطی سے ظہار کا لفظ نکل گیا تو

بھی ظہار ہے۔

لعان کی تعریف

لعان کا مطلب یہ ہے کہ جب کوئی خاوند اپنی زوجہ کو تہمت زنا لگائے تو قاضی ان سے مندرجہ ذیل جملے کہلوائے اور ابتداء مرد سے کروائے مرد چار مرتبہ یوں کہے کہ میں اللہ تعالیٰ کو گواہ بنا کر کہتا ہوں کہ یہ عورت فلاں مرد کے ساتھ زنا کی مرتکب ہوئی ہے اور میں اپنی اس تہمت میں حق بجانب ہوں جب مرد چار بار اس طرح قسم کھالے تو پانچویں مرتبہ اس طرح کہے کہ اگر میں اس تہمت زنا میں جھوٹا ہوں تو مجھ پر اللہ تعالیٰ کی لعنت ہو اس کے بعد عورت چار بار یہ الفاظ کہے کہ میں اللہ تعالیٰ کو اس بات پر گواہ بناتی ہوں کہ یہ شخص کہ جس نے مجھ پر تہمت لگائی یہ جھوٹا ہے تو پانچویں مرتبہ اس طرح کہے کہ یہ شخص سچا ہے تو اللہ تعالیٰ مجھ پر غضب نازل فرمائے۔ بعد لعان عورت اپنے خاوند سے باندہ ہو جائے گی اور اس خاوند کے لئے حلال نہیں ہوگی اور اگر یہ عورت حاملہ ہو تو بچہ عورت کو دیا جائے گا۔

حکم: اگر مرد جھوٹا ثابت ہو جائے تو اس کو حد قذف لگائی جائے گی اور اگر عورت جھوٹی ثابت ہو تو اسے سنگسار کیا جائے گا۔

لعان کی شرائط: لعان کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) نکاح صحیح ہو۔ اگر نکاح فاسد ہو اور تہمت لگائی تو لعان نہیں۔

(۲) زوجیت کا قائم ہونا۔ اگر تہمت لگانے کے بعد طلاق یا سند دے دی تو لعان نہیں۔

(۳) دونوں عاقل، بالغ ہوں۔

(۴) دونوں مسلمان ہوں۔

(۵) ان دونوں میں کسی پر حد قذف نہ لگائی گئی ہو۔

(۶) عورت زنا سے انکار کرتی ہو۔

(۷) دارالاسلام میں تہمت لگائی ہو۔

(۸) عورت قاضی کے پاس لعان کا مطالبہ کرے اور شوہر تہمت لگانے کا اقرار کرے۔

(۹) عورت پر چند بار تہمت لگائی تو لعان ایک ہی بار ہوگا۔

قذف کی تعریف

کسی پاکدامن مسلمان مرد و عورت کو تہمت لگانا قذف کہلاتا ہے۔

حکم: قذف کی حد (۸۰) اسی کوڑے ہے۔

نوٹ: اسلام میں پانچ جرائم ایسے ہیں جن کی حدود بیان کی گئی ہیں۔

(۱) زنا (۲) ذمکتی (۳) چوری (۴) شراب (۵) قذف۔

حلالہ کی تعریف

ایسی طلاق شدہ عورت جس کے ساتھ اس کو شوہر اول نے دخول کیا ہو اب اگر یہ شوہر اول اس سے دوبارہ نکاح کرنا چاہے تو عدت پوری ہونے کے بعد عورت مذکورہ کسی دوسرے مرد کے ساتھ نکاح کرے اور یہ شوہر ثانی اس عورت سے جماع بھی کرے اب شوہر ثانی کے طلاق دینے یا فوت ہونے کے بعد یہ عورت عدت گزارنے کے بعد دوبارہ شوہر اول کے ساتھ نکاح کر سکتی ہے اسے حلالہ کہتے ہیں

عدت کی تعریف

لغوی معنی ہے شمار کرنا اور اصطلاح میں نکاح کے زائل ہونے کے بعد عورت شوہر کے مکان میں ایک

مقررہ مدت یعنی تین حیض قیام کرے گی اس مدت کے گزرنے کا انتظار کرنا عدت کہلاتا ہے۔

حکم: (۱) دورانِ عدت عورت کا گھر سے باہر نکلنا حرام ہے۔

(۲) دورانِ عدت عورت کا دوسرے مرد سے نکاح کرنا یا نکاح کا پیغام قبول کرنا حرام

ہے۔

(۳) عدت کے زمانہ میں مرد پر واجب ہے کہ وہ عورت کے لئے رہائش کھانے پینے اور

نان نفقہ کا بندوبست کرے۔

عدت کی اقسام: عدت کی مندرجہ ذیل اقسام ہیں۔

(۱) مطلقہ کی عدت تین حیض ہے۔

(۲) بیوہ کی عدت چار مہینے دس دن ہے۔

(۳) حاملہ کی عدت وضع حمل ہے۔

(۴) غیر مدخولہ جس کو طلاق ہو جائے اسکی عدت کچھ بھی نہیں۔

(۵) مفقودہ الخمر (یعنی جس کا شوہر گم ہو جائے اور اس کے زندہ یا مردہ ہونے کی خبر نہ ہو

کی عدت چار سال ہے۔

سوگ کی تعریف

شرعی اعتبار سے سوگ کا مطلب یہ ہے کہ عورت کا زینت کو ترک کر دینا یعنی ہر قسم کے زیور وغیرہ اور ہر رنگ کے ریشم کے کپڑے اگرچہ سیاہ ہوں نہ پہنے جائیں، خوشبو، اور تیل کا استعمال نہ کرنا اور نہ ہی سنگٹھا کرنا اور سرمہ ڈالنا، مہندی اور زعفران یا کسم یا سرخ رنگا ہوا کپڑا نہ پہننا غرض ہر قسم کی زینت کو ترک کرنا سوگ کہلاتا ہے۔

حکم: عورت اپنے خاوند کی موت پر چار مہینے سوگ کرے گی۔ جبکہ عام لوگوں کو تین دن سے

زیادہ کسی کی موت پر سوگ کرنے کی اجازت نہیں۔

حیض کی تعریف

لغوی معنی بہنا اور اصطلاح میں ایسا خون جسے عورت کے بالغ ہونے کے بعد اس عورت کا رحم پھینکے حیض کہلاتا ہے۔ اس کے جاری ہونے کی مدت مقرر ہو جاتی ہے عورت کے حاملہ ہو جانے کے بعد اللہ تعالیٰ کے حکم سے یہ حیض کا خون بچے کی غزائفتا ہے یہی وجہ ہے کہ حاملہ عورت کو حیض آنا بند ہو جاتا ہے اور وضع حمل کے بعد اللہ تعالیٰ اپنی قدرت سے اس حیض کے خون کو دودھ میں تبدیل فرما دیتا ہے مدت حیض: حیض کی کم سے کم مدت تین دن اور زیادہ سے زیادہ دس دن ہے۔

حکم: حالت حیض میں عورت پر فرائض و واجبات وغیرہ ساقط ہو جاتے ہیں نیز مسجد میں داخل ہونا، قرآن پڑھنا یا چھونا نیز اس حالت میں جماع کرنا سب حرام ہیں۔ اوراد و وظائف اور ذکر و روضہ میں حرج نہیں۔ اسی طرح گھر کے کام کاج، کھانا پکانا، اہل خانہ کے ساتھ اٹھنا بیٹھنا، ان کے ساتھ کھانا پینا بھی جائز ہے۔

نفاس کی تعریف

بچہ پیدا ہونے کے بعد عورت کی اگلی شرمگاہ سے جو خون آتا ہے اسے نفاس کہتے ہیں۔

نفاس کی حد: نفاس کی زیادہ سے زیادہ مدت چالیس دن ہے اور کم کی کوئی مدت نہیں بلکہ پیدائش کے ایک گھنٹے بعد بھی منقطع ہو سکتا ہے۔

حکم: نفاس کا حکم وہی ہے جو حیض کا ہے۔ اسی طرح جس وقت نفاس کا خون بند ہوا چاہے پیدائش کے چند گھنٹے بعد ہی بند ہوا اسی روز سے نماز، روزہ، عورت پر ادا کرنا فرض ہو جائے گا۔ بعض عورتوں میں معروف ہے کہ چالیس دن تک نماز روزہ معاف ہے چاہے خون بند ہو یا نہ ہو یہ بالکل غلط ہے۔

استحاضہ کی تعریف

ایسا خون کہ جو عورت کی شرمگاہ سے اس وقت نکلے جب وہ حیض و نفاس کے زمانہ سے خالی ہو یہ بیماری کا خون ہوتا ہے اور رحم سے نہیں آتا بلکہ عورت کی اگلی شرمگاہ سے متعلق کسی رگ کے پھٹنے سے خارج ہوتا ہے اسے استحاضہ کہتے ہیں۔

حکم: یہ تکبیر کے حکم میں ہے لہذا اس حالت میں جماع کرنا اور نماز، روزہ اور دیگر عبادات عورت کے لئے حلال ہیں۔

جنابت کی تعریف

جنابت کا لغوی معنی دوری ہے اور اصطلاح میں اس حالت تاپاکی کو کہتے ہیں جو منی کے خروج یا حشفہ داخل کرنے کے بعد تمام جسم سے متعلق ہوتی ہے۔

وجہ تسمیہ: کیونکہ ایسی حالت میں انسان عبادت سے دور ہو جاتا ہے اسے جنابت کہتے ہیں۔

حکم: جماع کے علاوہ جنابت کا حکم وہی ہے جو حیض کا ہے۔

معذور کی تعریف

وہ شخص کہ جس کو کوئی ایسی بیماری لاحق ہو کہ ایک پورا وقت ایسا گزر گیا کہ وضو کے ساتھ نماز فرض ادا نہ کر سکے یعنی ہر چند کوشش کے باوجود طہارت کے ساتھ نماز نہ پڑھ سکے شرعی معذور کہلاتا ہے۔ مثلاً پیشاب کے قطروں کا آنا، ہوا خارج ہونا، دکھتی آنکھ سے پانی آنا، زخم سے ہر وقت رطوبت بہنا وغیرہ۔

حکم: ایسا شخص شرعی طور پر معذور ہے لہذا کسی نماز کے وقت میں وضو کر لے اور آخر وقت تک جتنی نمازیں یعنی فرض، سنت یا نفل یا قضاے عمری چاہے پڑھ لے اس بیماری سے اس کا وضو نہیں جاتا اب جب پورا ایک نماز کا وقت گزر جائے تو دوبارہ اگلی نماز کے وقت میں اگلی نماز کے لئے وضو کر لے

منی کی تعریف

یہ غلیظ اور سفید مادہ ہوتا ہے جو شہوت و لذت کے ساتھ برآمد ہو کر عضو تناسل کو نرم کر دیتا ہے۔

حکم: منی ایک ناپاک مادہ ہے جو کپڑے یا جسم پر لگنے سے انہیں ناپاک کر دیتا ہے نیز اس کے خروج سے غسل فرض ہو جاتا ہے۔

مذی کی تعریف

یہ ایک رقیق اور سفید مادہ ہوتا ہے جو اکثر اوقات بیوی سے یوس و کنار یا ہنسی مذاق کے وقت شرمگاہ سے نکلتا ہے یا جب شہوت کا غلبہ ہو اس وقت یہ خارج ہوتا ہے۔

حکم: مذی سے غسل واجب نہیں ہوتا لیکن وضو ٹوٹ جاتا ہے۔

ودی کی تعریف

یہ وہ گاڑھا مادہ ہے جو منی کے مشابہ ہوتا ہے یہ بعض اوقات پیشاب کے بعد، اونچائی پر چڑھنے، پیٹ پر بوجھ پڑھنے یا وزن اٹھانے کے وقت مٹانے پر دباؤ پڑنے کی وجہ سے ایک دو قطرہ کی صورت میں بغیر شہوت کے خارج ہوتا ہے۔

حکم: اس سے بھی غسل واجب نہیں ہوتا لیکن وضو ٹوٹ جاتا ہے۔

رضاعت کی تعریف

رضاعت کا لغوی معنی ہے، عورت کا پستان چوسنا، اور فقہاء کی اصطلاح میں عورت کے پستان سے مدت رضاعت میں بچہ کے پیٹ میں دودھ پہنچنا رضاعت کہلاتا ہے۔ خواہ بچہ منہ کے ذریعہ دودھ چوسے یا بچہ کی ناک کے ذریعہ دودھ پہنچایا جائے یا اس کے حلق میں دودھ ٹپکایا جائے اس سے

رضاعت ثابت ہو جاتی ہے۔

رضاعت کی مدت: امام اعظم کے نزدیک رضاعت کی مدت ڈھائی سال ہے یعنی ڈھائی سال تک دودھ پینے کی صورت میں رضاعت ثابت ہو جائے گی جبکہ صاحبین کے نزدیک دو سال ہے، یعنی دو سال تک دودھ پینے کی صورت میں رضاعت ثابت ہوگی اس کے بعد پینے سے ثابت نہیں ہوگی۔

رضاعت کا حکم: دودھ پینے والے پر اس کے رضاعی ماں باپ اور ان کی تمام اولاد حتیٰ کہ اس کے تمام اصول و فروع کے ساتھ نکاح کرنا حرام ہو جاتا ہے۔ دودھ پینے والا دودھ پلانے والی کا محرم ہے اس کے ساتھ اس کا نکاح دائمی طور پر حرام ہے اس کو دیکھنا اس کے لئے حلال ہے اور اس کے ساتھ سفر کرنا جائز ہے۔

بلوغ کی تعریف

لڑکے کا بلوغ: لڑکے کو جب سوتے میں احتلام ہو یا حالت بیداری میں انزال ہو وہ بالغ ہے۔ اور اگر انزال نہ ہو تو جب تک پندرہ سال کا نہ ہو جائے بالغ نہیں اور جب پندرہ سال کا ہو جائے تو بالغ تصور کیا جائے گا اگرچہ انزال نہ ہو۔

مدت بلوغ: لڑکے کے بالغ ہونے کی کم سے کم مدت بارہ سال ہے بارہ سال سے کم عمر میں بلوغ کا دعویٰ کرے تو وہ اس دعویٰ میں جھوٹا تصور کیا جائے گا۔

لڑکی کا بلوغ: لڑکی کا بلوغ احتلام، حیض یا حمل سے جانا جائے گا لہذا ان تینوں حالتوں میں سے کوئی بھی حالت ثابت ہو جائے تو وہ بالغ ہے۔ اور اگر ان میں سے کوئی بھی صورت نہ پائی گئی تو وہ بالغ نہیں اور جیسے ہی پندرہ سال کی ہو جائے تو بالغ تصور کی جائے گی۔

مدت بلوغ: لڑکی کے بالغ ہونے کی کم سے کم مدت نو سال ہے نو سال سے کم عمر میں

بلوغت کا دعویٰ کرے تو وہ جھوٹی ہے۔ اور جیسے ہی پندرہ سال کی ہو جائے وہ بالغ تصور کی جائے گی چاہے بلوغت کی علامت ظاہر نہ ہو۔

حکم: بلوغت ثابت ہوتے ہی بشری احکام ثابت ہو جائیں گے اور ایسا لڑکا یا لڑکی شریعت کا مکلف ہو جائے گا لہذا نماز روزہ اور دیگر فرائض و واجبات کی ادائیگی اس کے ذمہ لازم ہو جائے گی۔

مراہق کی تعریف

ایسا لڑکا جو قریب بلوغ ہو، اس کا آلہ تناسل متحرک ہوتا ہو اور اسے شہوت بھی آئے مراہق کہلاتا ہے۔ حکم: ایسے لڑکے کو عورتوں سے دور رکھا جائے اور اس کا بستر الگ کر دیا جائے لیکن ایسا لڑکا شرعی احکام کا مکلف نہیں۔

خنثی کی تعریف

وہ شخص جس کا ذکر یعنی آلہ تناسل ہو اور فرج یعنی عورت کی اگلی شرمگاہ بھی ہو اور اگر ذکر سے پیشاب آتا ہے تو اسے مذکر ٹرا کیا جائے گا اور دوسری جگہ کو فقط شکاف تصور کیا جائے گا اور اگر فرج سے پیشاب آئے تو اسے مؤنث تسلیم کریں گے اور ذکر کو سح تصور کیا جائے گا۔

حکم: (۱) جب مذکورہ بالا تعریف کے مطابق پیدا ہوا اور اس نے بحکلف عورتوں کی ہیئت یعنی شکل اور عورتوں کے اخلاق و عادات اور طور طریقہ نہ اپنایا ہو اور اللہ تعالیٰ کی اس خلقت پر راضی ہو اس کی نہ تو کوئی مذمت و ملامت ہے اور نہ آخرت میں گناہ ہوگا اس لئے کہ یہ معذور ہے۔

(۲) خنثی ہونی یہ ہے کہ جو بحکلف عورتوں کی ہیئت ان کے اخلاق و اطوار اور وضع قطع اختیار کرے عورتوں کی طرح لباس پہنے اور انہی کی طرح حرکتیں اور باتیں کرے احادیث میں ایسے خنثی کی مذمت آئی ہے۔

دیوث کی تعریف

ایسا نادان آدمی کہ جسے اس بات کی پرداہ ہی نہ ہو کہ اس کی بیوی کس کس غیر محرم یعنی غیر مرد سے ملتی ہے دیوث کہلاتا ہے۔

حکم: اگر بیوی غیر مردوں سے بے تکلف گفتگو کرے یا ملاقات کرے اور شرعی پردہ بھی نہ کرے تو جہنم کی حقدار ہے اور اگر شوہر استطاعت کے باوجود اس کو اس سے باز نہ رکھے تو وہ بھی جہنم کا حقدار ہے اور ایسا شخص فاسق و معلن اور مردود الشہادۃ ہے اس کی امامت بھی جائز نہیں۔

کاہن کی تعریف

وہ شخص جو مستقبل کی خبریں بیان کرنے کا دعویٰ کرے، پوشیدہ چیزوں اور علم غیب پر مطلع ہونے کا دعویٰ کرے اسے کاہن کہتے ہیں۔

نجومی (عراف) کی تعریف

وہ شخص جو چوری شدہ یا گم شدہ اشیاء کی خبر دینے کا دعویٰ کرے عراف کہلاتا ہے جسے نجومی بھی کہتے ہیں حکم: کاہن اور عراف کے پاس جانے والوں کے بارے میں شرعی حکم کی مندرجہ ذیل صورتیں ہیں۔

(۱) کفر: اگر کوئی شخص نجومیوں کے حق ہونے کا اعتقاد رکھ کر کہ یہ جو بتائیں حق ہے جاتا کفر ہے۔

(۲) حرام: اور اگر ان کی طرف میلان اور رغبت کی وجہ سے جاتا ہے تو حرام اور گناہ کبیرہ ہے۔

(۳) مکروہ: اگر بطور استہزاء یعنی ان سے مزاق کے طور پر جاتا ہے تو یہ عیب و بیکار اور

نہ دو ہے۔

(۲) مباح: اور اگر انہیں عاجز کرنے کے لئے جاتا ہے تو جانا مباح ہے۔

مکاتب کی تعریف

وہ غلام کہ جس کو آقا اس طرح کہہ دے کہ اگر تو مجھے اتنا مال ادا کر دے تو توں آزاد ہے اب غلام اس شرط کو قبول کر لے تو یہ مکاتب کہلائے گا۔

حکم: مکاتب جیسے ہی شرط پوری کر دے وہ آزاد ہو جائے گا۔

عبد کی تعریف

وہ شخص جو غیر کا مملوک ہو، مالک بنے، ولی بنے اور شہادت دینے کی اہلیت نہ رکھتا ہو اور غیر میں کسی قسم کا تصرف نہ کر سکے یہاں تک کہ اسے اپنے آپ پر بھی تصرف حاصل نہ ہو عبد کہلاتا ہے۔

عبد کی اقسام: (شعب الایمان ص ۵۳۲)

عق کی تعریف

ایسی قوت حکمیہ کہ جس کے سبب انسان تصرفات شریعہ کا اہل ہو جائے عق کہلاتا ہے۔

امام بیہقی فرماتے ہیں کہ کسی شخص کا اپنے اندر ایسی قوت حکمیہ کا ناذ کرنا کہ جس کے سبب وہ اپنی اور کسی دوسرے کی ملکیت کا اہل بن جائے اپنا اور غیر کا ولی بن جائے اور شہادت دے سکے دوسری چیزوں پر تصرف کرنے پر قادر ہو اور اپنے نفس میں تصرف کرنے پر غیر کو دور کر سکے عق یعنی آزاد کہلاتا ہے۔

=====

باب البیوع

بیع (خرید و فروخت) کی تعریف

اصطلاح میں دو آدمیوں کا مال کے بدلے مال سے ایک مخصوص صورت کے ساتھ تبادلہ کرنا بیع کہلاتا ہے اور اردو میں اسے خرید و فروخت کہتے ہیں۔

حکم: بیع کا حکم یہ ہے کہ مشتری بیع کا مالک ہو جاتا ہے اور بائع ثمن کا لہذا بائع پر واجب ہے کہ بیع کو مشتری کے حوالے کر دے اور مشتری پر واجب ہے کہ بائع کو ثمن دے دے اور یہ حکم اس وقت ہے کہ بیع کی ساری شرائط پائی جائیں۔

بیع کی تقسیم (۱): بیع کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) کسی چیز کو نقد قیمت دے کر خریداجائے۔

حکم: یہ بیع جائز ہے۔

(۲) کسی حاضر چیز کو مدت معینہ کے ادھار پر خریداجائے۔

حکم: یہ بیع بھی جائز ہے۔

(۳) کسی ادھار (غائب) چیز کو ادھار پر خریداجائے۔ مثلاً زید کے عمر پر دس سیر گندم

واجب ہے اور خالد کے بکر پر پندرہ سیر جو واجب ہیں تو زید، خالد کو اپنے وہ دس سیر گندم فروخت کر دے جو عمر کے ذمہ ہیں اور اس کے معاوضہ میں خالد سے وہ پندرہ سیر جو لے جو خالد کے بکر کے ذمہ ہیں اس کو بیع الدین بالدين کہتے ہیں۔

حکم: یہ بیع جائز نہیں ہے۔

بیع کی تقسیم (۲): بیع کی ابتدا دو قسمیں ہیں۔

(۱) قولی (۲) فعلی۔

(۱) بیع قولی: یعنی بات چیت کے ذریعے بیع کرنا۔ قولی میں دو رکن ہوتے ہیں جن کو ایجاب و قبول کہتے ہیں مثلاً ایک نے کہا میں نے یہ چیز بیچی اور دوسرے نے کہا میں نے خریدی، بیع قولی کہلاتی ہے۔

(۲) بیع فعلی: اس کے بھی دو رکن ہوتے ہیں چیز کا لے لینا اور مال دے دینا۔ لہذا یہ لینا، دینا ایجاب و قبول کے قائم مقام تصور کئے جائیں گے۔

بیع کے ارکان: بیع کے مندرجہ ذیل ارکان ہیں۔

(۱) بائع: چیز بیچنے والے کو بائع کہتے ہیں۔

(۲) مشتری: چیز خریدنے والے کو مشتری کہتے ہیں۔

(۳) مبیع: جس چیز پر بیع ہوا ہے مبیع کہتے ہیں۔

(۴) بیع: خرید و فروخت کو بیع کہتے ہیں۔

(۵) ایجاب و قبول: ایسے دو لفظ جو مالک بنانے یا مالک بننے کا فائدہ دیتے ہیں انہیں

ایجاب و قبول کہتے ہیں۔ مثلاً پہلے شخص کے کلام (میں نے بیچا) کو ایجاب اور دوسرے کے کلام (میں نے خریدا) کو قبول کہتے ہیں۔

(۶) ثمن: بازار یا مارکیٹ کے ریٹ کے علاوہ بائع اور مشتری میں جو ریٹ مقرر ہو

جائے اسے ثمن کہتے ہیں۔

(۷) قیمت: بازار یا مارکیٹ میں جس چیز کا جو ریٹ مقرر ہوا ہے قیمت کہتے ہیں۔

(۸) قسمی چیزیں: وہ چیزیں جن کی قیمت ادا کی جائے اور باہم مقابلہ نہ ہوں جیسے ایک

طرف گائے دوسری طرف بکری لہذا گائے کے بدلے بکری نہیں بیچ سکتے بلکہ قیمت دینی پڑے گی۔

(۹) مثلی چیزیں: وہ چیزیں جو باہم مقابلہ ہوں اور ان میں بہت تھوڑا فرق ہو جیسے مالے یا انڈے یعنی اگر ایک طرف مالے ہوں اور دوسری طرف بھی مالے ہوں تو دونوں کو ایک دوسرے کے بدلے بیچ کر سکتے ہیں۔

(۱۰) اشرفی: سونے کے سکے کو کہتے ہیں۔

(۱۱) دینار: سونے کے سکے کو کہتے ہیں۔

(۱۲) درہم: چاندی کے سکے کو کہتے ہیں۔

(۱۳) نوٹ: کاغذی کرنسی کو نوٹ کہتے ہیں۔

(۱۴) پیسہ: تانبے یا پتیل وغیرہ سے بنائے ہوئے سکے کو کہتے ہیں۔

ثمن کی تقسیم نمبر (۱): ثمن کی دو قسمیں ہیں۔

ثمن اصطلاحی: وہ ثمن ہے جو درحقیقت متاع یعنی سامان ہے لیکن لوگوں کی اصطلاح نے اسے ثمن بنا دیا ہو جیسے کرنسی نوٹ اور تانبے یا پتیل کے سکے۔

(۲) ثمن خلقی: وہ ثمن جو پیداہشی طور پر ثمن ہو اور وہ ہر حال میں ثمن ہی رہتے ہیں یعنی ان کی

ثمنیت کو کوئی باطل ہی نہیں کر سکتا۔ جیسے سونا، چاندی۔

ثمن کی تقسیم نمبر (۲): ثمن کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) جو معین کرنے سے معین ہو جائے مثلاً ناپ اور تول کی چیزیں وغیرہ جیسے گندم جو

غیرہ۔

(۲) جو معین کرنے سے بھی معین نہ ہو جیسے روپیہ اشرفی کی بیع میں معین کرنے سے بھی

معین نہیں ہوتے۔ مثلاً کوئی چیز اس روپے کے بدلے خریدی یعنی کسی خاص روپے کی طرف اشارہ کیا

نہ کسی روپیہ دینا واجب نہیں دوسرا کوئی اور روپیہ بھی دے سکتا ہے۔

بیع کی شرائط: بیع کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

- (۱) بائع اور مشتری کا عاقل ہونا۔ بچے یا پاگل نے بیع کی تو صحیح نہیں۔
- (۲) عاقد کا ہونا۔ یعنی ایک ہی شخص بائع ہو اور وہی مشتری بھی بن جائے تو بیع صحیح نہیں۔
- (۳) ایجاب و قبول موافق ہوں۔ یعنی جس چیز کا ایجاب ہو اس کا قبول ہو۔
- (۴) ایجاب و قبول کا ایک ہی مجلس میں ہونا۔
- (۵) بائع اور مشتری کا ایک دوسرے کے کلام کو سننا۔
- (۶) بیع کا موجود ہونا۔
- (۷) بیع کا بائع کی ملک میں ہونا۔
- (۸) بیع اور ثمن کا معلوم ہونا۔ اگر مجہول ہوں اور یہ جہالت جھگڑے تک پہنچائے تو صحیح

نہیں۔

بیع کی تقسیم (۳): بیع کی مندرجہ ذیل سات اقسام ہیں۔

- (۱) بیع تعاظمی (۲) بیع سلم (۳) بیع فاسد (۴) بیع باطل (۵) مراہجہ و تولیہ (۶) بیع فضولی (۷) بیع کردہ۔

بیع تعاظمی کی تعریف

وہ بیع جو لفظ ایجاب و قبول کے بغیر فقط چیز لے لینے اور مال دے دینے سے منعقد ہو جاتی ہے۔

حکم: یہ بیع ہر قسم کی چیز چاہے قیمی ہو یا مثلی کو شامل ہے۔ لہذا فقط ثمن دے دینے اور چیز لے لینے سے بیع لازم ہو جاتی ہے اس میں بغیر دوسرے کی رضامندی کے رد کرنے کا کسی کو حق حاصل نہیں ہے۔

بیع سلم کی تعریف

شریعت میں ایسا عقد کہ جس میں ثمن (قیمت) پہلے واجب ہو اور بیع بعد میں میعاد مقرر پر واجب ہو بیع سلم کہلاتا ہے۔

حکم: جس چیز میں بیع سلم کی گئی ہے اس میں قبضہ سے پہلے تصرف کرنا صحیح نہیں ہے اور نہ اس کے ثمن میں قبضہ سے پہلے تصرف کرنا صحیح ہے۔

بیع مطلق کی تعریف

ایسی بیع کہ جس میں روپے کے بدلے کوئی سامان وغیرہ خریدا یا بیجا جائے بیع مطلق کہلاتی ہے۔
نی زمانہ بیع مطلق رائج ہے۔
حکم: یہ بیع جائز ہے۔

بیع صرف کی تعریف

ایسی بیع کہ جس میں ثمن خلقی کے بدلے ثمن خلقی کو خریدا یا بیجا جائے بیع صرف کہلاتی ہے۔ جیسے سونے چاندی کے بدلے سونے چاندی کی بیع۔
حکم: یہ بیع بھی جائز ہے۔

بیع مقایضہ کی تعریف

اس بیع کو کہتے ہیں جس میں روپے اشرفی نہیں بلکہ ایک سامان کے عوض دوسرا سامان خریدا یا بیجا جاتا ہے۔

بیع عینہ کی تعریف

کوئی شخص ایک چیز ادھار بیچے اور خریدنے والے کے قبضہ میں دے اور پھر ثمن وصول کرنے سے پہلے بیچنے والے خود اس چیز کو پچھلے ثمن سے کم پر نقد خرید لے بیع عینہ کہلاتی ہے۔

حکم: امام یوسف کے نزدیک یہ بیع جائز ہے بلکہ باعث ثواب ہے کیونکہ اس میں حرام یعنی سود سے بھاگنا ہے۔

بیع فاسد کی تعریف

بیع کے تمام ارکان و شرائط پائی جائیں بیع بھی قابل بیع ہو لیکن اس کے علاوہ کوئی فساد پیدا ہو جائے اسے بیع فاسد کہتے ہیں۔

حکم: بیع فاسد کو عائدین فوراً فسخ (ختم) کر دیں ورنہ قاضی زبردستی فسخ کرا سکتا ہے۔

بیع باطل کی تعریف

بیع کے ارکان میں سے اگر کوئی رکن مفقود ہو جائے جیسے پاگل یا ناسمجھ بچے نے بیع کی یا وہ چیز بیچنے کے قابل ہی نہ ہو جیسے خون، شراب، خنزیر یا مردار کی بیع کی تو اس بیع کو بیع باطل کہتے ہیں۔

حکم: یہ بیع منعقد ہی نہیں ہوتی۔

بیع مرابحہ و تولیہ کی تعریف

جو چیز جس قیمت پر خریدی جاتی ہے اور بوکھڑے مصارف (خرچہ وغیرہ) اس کے متعلق کئے جاتے ہیں ان کو ظاہر کر کے اس پر کچھ بڑھا کر نفع حاصل کر کے فروخت کرنا مرابحہ کہلاتا ہے۔ اور اگر نفع کچھ نہ لیا یعنی جس قیمت پر خریدی اسی قیمت پر بیچ دیا تو یہ تولیہ کہلاتا ہے۔

حکم: مرابحہ اور تولیہ کی بیع جائز ہے۔

بیع فضولی کی تعریف

اس بیع کو کہتے ہیں جس میں کوئی شخص دوسرے کے حق میں بغیر اس کی اجازت کے تصرف کر لے بیع فضولی کہلاتا ہے۔

حکم: شخص فضولی کے تصرف کرنے کے دوران اگر مالک موجود ہو تو بیع منعقد ہو جائے گی مگر مالک کی اجازت پر موقوف رہے گی اور اگر عقد کے دوران مالک موجود نہ تھا تو بیع منعقد نہیں ہوئی۔

بیع مکروہ کی تعریف

وہ بیع جس میں تمام شرائط پائی جائیں لیکن کسی امر خارج کی وجہ سے اس میں کراہیت پیدا ہو چکا ہے۔ جیسے اذان جمعہ کے بعد بیع کرنا۔

حکم: جمعہ کی اذان اول کے بعد کسی قسم کی بیع کرنے سے بیع منعقد ہو جائے گی لیکن مکروہ ہوگی۔

خیار شرط کی تعریف

بائع اور مشتری دونوں کو حق حاصل ہوتا ہے کہ وہ قطعی طور پر بیع نہ کریں بلکہ بیع میں یہ شرط عائد کر دیں کہ اگر منظور نہ ہو تو بیع ختم ہو جائے گی مشتری اپنے ثمن واپس لے لے اور بائع اپنا بیع لے لے۔ اسے خیار شرط کہتے ہیں کیونکہ شریعت کی طرف سے دونوں کو موقعہ حاصل ہے کہ خوب غور و نظر کر لیں۔ لہذا منظور ہو تو خیار حاصل ہونے کی بنا پر بیع کو ختم کر دیں۔

خیار تعیین کی تعریف

چند چیزوں میں سے ایک غیر معین چیز کو خرید اور یوں کہا کہ ان میں سے ایک کو خریدتا ہوں تو مشتری ان چیزوں میں سے جس کو چاہے معین کر لے یعنی لے لے خیار تعیین کہلاتا ہے

شرط: (۱) خیارتین میں مدت تین دن تک ہوتی ہے۔

(۲) خیارتین قبی چیزوں میں ہوتی ہے مثلی میں نہیں۔

خیار رویت کی تعریف

بعض حضرات چیز کو دیکھے بغیر لے لیتے ہیں دیکھنے کے بعد وہ چیز ناپسند ہوتی ہے ایسی صورت میں شریعت کی طرف سے مشتری کو اختیار حاصل ہے کہ اگر دیکھنے کے بعد چیز نہ لینا چاہے تو بیع فسخ کر دے۔ اصطلاح فقہاء میں اسے خیار رویت کہتے ہیں۔

خیار عیب کی تعریف

عرف شرع میں عیب وہ ہے کہ جس میں تاجروں کی نظر میں چیز کی قیمت کم ہو جائے عیب کہلاتا ہے۔ حکم: بیع میں عیب ہو تو اس کا ظاہر کر دینا بائع پر واجب ہے چھپانا حرام و گناہ کبیرہ ہے یونہی ثمن کا عیب مشتری پر ظاہر کرنا واجب ہے۔

خیار کی شرائط: خیار کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) بیع میں وہ عیب بیع کے دوران موجود ہو یا مشتری کے قبضہ کرنے سے پہلے ہو اگر مشتری کے قبضہ کرنے کے بعد عیب پیدا ہوا تو اس کی وجہ سے مشتری کو واپس کرنے کا اختیار حاصل نہیں ہوگا۔

(۲) مشتری نے قبضہ کر لیا اس کے دوران عیب موجود تھا بعد میں عیب کسی وجہ سے جانا رہا تو خیار بھی ختم ہو گیا۔

(۳) مشتری کو عقد یا قبضہ کے وقت عیب پر اطلاع نہ ہو عیب دار جان کر لیا یا قبضہ کیا خیار ختم ہو گیا۔

(۴) بائع نے عیب سے برات نہ کی ہو اگر اس نے کہہ دیا کہ میں اس کے کسی عیب کا ذمہ

دار نہیں تو خیار بھی حاصل نہیں ہوگا۔

اقالہ کی تعریف

دو آدمیوں کے درمیان جو عقد ہوا اس کے انھادینے کا نام اقالہ ہے۔

اقالہ کے الفاظ: مثلاً کہا کہ میں نے اقالہ کیا یا چھوڑ دیا یا فسخ کیا یا دوسرے کے کہنے پر بیع یا ثمن کا پھیر دینا اور دوسرے کا لے لینا اقالہ کہلاتا ہے۔

حکم: دونوں میں سے ایک اقالہ کرنا چاہتا ہے تو دوسرے کو قبول کر لینا افضل و مستحب ہے اور قبول کرنے والا ثواب کا مستحق ہے۔

اقالہ کی شرائط: اقالہ کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) دونوں کا راضی ہونا۔

(۲) مجلس کا ایک ہونا۔

(۳) بیع کا موجود ہونا ثمن کا موجود ہونا شرط نہیں۔

(۴) بیع ایسی چیز ہو جس میں خیار شرط یا خیار عیب یا خیار رویت کی وجہ سے بیع فسخ ہو سکتی

ہو اگر بیع میں ایسی زیادتی پیدا ہو گئی کہ جس کی وجہ سے بیع فسخ نہ ہو سکے تو اقالہ نہیں ہو سکتا۔

(۵) بائع نے ثمن مشتری کو قبضہ سے پہلے ہیہ نہ کیا ہو ورنہ اقالہ نہیں ہوگا۔

اجارہ و اعارہ کی تعریف

کسی شخص کا اپنے نفع کو کسی عوض کے بدلے دوسرے شخص کو اس نفع کا مالک بنادینا اجارہ کہلاتا ہے اور اگر مالک بنانا عوض کے بغیر ہو تو اسے اعارہ کہتے ہیں۔ نوکری کرنا، مزدوری کا کام کرنا وغیرہ اجارہ کی صورتیں ہیں۔

ارکان: اجارہ کے ارکان مندرجہ ذیل ہیں۔

(۱) آجر: اجارہ کے مالک کو کہتے ہیں۔

(۲) اجیر: کام کرنے والے کو کہتے ہیں۔

اقسام: اجیر کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) اجیر مشترک۔ (۲) اجیر خاص۔

اجیر مشترک: وہ اجیر جسے کسی مخصوص وقت میں ایک ہی شخص کا کام کرنا ضروری نہ ہو بلکہ مخصوص وقت میں دوسروں کا کام بھی کر سکتا ہو جیسے دھوبی، درزی وغیرہ۔

اجیر خاص: وہ شخص جو ایک ہی شخص کا پابند رہے۔ جیسے دیہاڑی دار مزدور یا ملازم کے مخصوص وقت میں صرف ایک ہی شخص کا کام کر سکتا ہے۔

اجارہ کی شرائط: اجارہ کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) عاقل ہونا یعنی پاگل یا نابالغ نے اجارہ کیا تو صحیح نہ ہوا۔

(۲) ملک و ولایت حاصل ہو یعنی اجارہ کرنے والا مالک یا ولی ہو۔

(۳) اجارہ کرنے کا اختیار حاصل ہو۔

(۴) اجرت معلوم ہو۔

(۵) منفعت معلوم ہو۔

(۶) جہاں اجارہ کا تعلق وقت سے ہو وہاں مدت بیان کرنا مثلاً مکان کرائے پر لیا تو یہ بتانا ضروری ہے کہ اتنے دنوں کے لئے لیا یہ بتانا ضروری نہیں کہ اس میں کیا کام کرے گا۔

(۷) جانور کرائے پر لیا اس میں وقت یا جگہ بیان کرنا ہوگی۔ مثلاً ایک گھنٹہ سواری کرے گا یا فلاں جگہ تک جائے گا اور کام بھی بیان کرنا ہوگا۔

(۸) منفعت مقصود ہو یعنی اجارہ میں نفع حاصل کرنے کی نیت ہو۔

(۹) اجارہ میں کوئی ایسی شرط نہ ہو جو عقد اجارہ کے خلاف ہو۔

عقد فاسد کی تعریف

ایسا عقد جو اپنی اصل کے اعتبار سے تو شریعت کے موافق ہے مگر اس میں کوئی ایسا وصف موجود ہو جس کی وجہ سے وہ غیر مشروع ہو جائے اور اگر اصل ہی کے اعتبار سے خلاف شرع ہو تو وہ باطل ہے۔ مثلاً مردار یا خون وغیرہ کو بطور اجرت قرار دینا یا بت بتانے کے لئے کسی سے اجارہ کرنا یا زنا کے لئے اجرت پر رکھنا وغیرہ۔

حکم: ان سب صورتوں میں اجارہ چونکہ خلاف شرع ہے اس لئے باطل ہے۔

اعارہ (عاریت) کی تعریف

دوسرے شخص کو اپنی چیز کی منفعت کا بغیر عوض کے مالک بنادینا اعارہ یا عاریت کہلاتا ہے۔

ارکان: اعارہ کے دو رکن ہیں۔

(۱) معیر: جس کی چیز ہو یعنی چیز کا مالک۔

(۲) مستعیر: جس کو چیز عاریت دی جائے۔

(۳) مستعار: چیز کو کہتے ہیں۔

عاریت کا حکم: اعارہ کا حکم یہ ہے کہ چیز مستعیر کے پاس بطور امانت ہوتی ہے لہذا اگر مستعیر سے وہ چیز ہلاک ہو جائے اور اس نے حفاظت کا بھی التزام کیا ہو تو اس پر ضمان یعنی چٹی واجب نہیں ورنہ ہوگی۔

اعارہ کی شرائط: اس کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) عاریت کے لئے ایجاب و قبول ہونا شرط ہے۔

(۲) مستعار چیز نفع پہنچانے کے قابل ہو۔

(۳) عاریت میں معاوضہ کی شرط نہ ہو ورنہ وہ اجارہ ہو جائے گا۔

کفالت کی تعریف

اصطلاح شرع میں کفالت کے معنی یہ ہیں کہ ایک شخص پر کوئی مطالبہ تھا اس نے دوسرے شخص کی منت کر کے اپنی ذمہ داری اسے سونپ دی یعنی مطالبہ ایک شخص کے ذمہ تھا دوسرے نے وہ مطالبہ اپنے ذمہ لے لیا کفالت کہلاتا ہے۔ جس مدی کو ڈر ہے کہ معلوم نہیں مال وصول ہوگا یا نہیں اور جس مدعا علیہ کو اندیشہ ہو کہ حراست میں نہ لیا جاؤں ان دونوں کو اس اندیشہ سے بچانے کے لئے کفالت کرنا افضل ہے۔ اور اگر کفیل خود سمجھتا ہے کہ مجھے خود شرمندگی کا سامنا کرنا پڑے گا تو احتیاط یہ ہے کہ اس سے بچے۔

کفالت کے ارکان: کفالت کے ارکان مندرجہ ذیل ہیں۔

(۱) مکفول لہ: جس کا مطالبہ ہے اسے مکفول لہ یا طالب کہتے ہیں۔

(۲) مکفول عنہ: جس پر مطالبہ ہوا ہے مکفول عنہ یا امیل کہتے ہیں۔

(۳) کفیل: جس نے ذمہ داری لی اسے کفیل کہتے ہیں۔

(۴) مکفول بہ: جس چیز کی کفالت کی اسے مکفول بہ کہتے ہیں۔

حکم: کفالت کا حکم یہ ہے کہ امیل کی طرف سے اس نے جس چیز کی کفالت کی ہے اس کا مطالبہ اس کے ذمہ لازم ہو گیا یعنی طالب کے لئے مطالبے کا حق ثابت ہو گیا وہ جب چاہے اس سے مطالبہ کر سکتا ہے اس کو انکار کی گنجائش نہیں۔

کفالت کے الفاظ: کفالت ایسے الفاظ سے ہوتی ہے جن سے کفیل کا ذمہ دار ہونا

سمجھا جائے مثلاً اس طرح کہے، میں ذمہ دار ہوں، یا، میں ضامن ہوں۔

ہبہ کی تعریف

کسی چیز کا دوسرے شخص کو بغیر عوض کے مالک بنادینا ہبہ کہلاتا ہے۔

ہبہ کے ارکان: ہبہ کے تین ارکان ہیں۔

واہب: ہبہ کرنے والے یعنی چیز دینے والے کو کہتے ہیں۔

موہوب لہ: وہ شخص جس کو چیز دی جائے۔

موہوب: چیز کو کہتے ہیں۔

ہبہ کی شرائط: ہبہ کے لئے مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) واہب عاقل ہو، مجنوں ہبہ نہیں کر سکتا۔

(۲) بالغ ہونا۔ نابالغ نے ہبہ کیا تو صحیح نہیں۔

(۳) چیز کا مالک ہونا۔ کسی دوسرے کی چیز ہبہ نہیں کر سکتا۔

(۴) موہوب چیز موجود ہو۔

(۵) مالک کے قبضہ میں ہو۔

(۶) ایجاب و قبول ہو۔

حکم: ہبہ کی ہوئی چیز موہوب لہ کی ملک ہو جاتی ہے۔

ضمان کی تعریف

ضمان کا مطلب یہ ہے کہ اگر کرایہ پر لی ہوئی شے متاجر (اجرت پر لینے والے) کی غفلت یا ظلم و تعدی کے سبب ہلاک یا ضائع ہو جائے تو جو بدل متاجر کے ذمہ لازم ہوتا ہے وہ اس کی ضمان کہلاتا

یعنی اگر اصل شے ذوات الامثال میں سے ہو یعنی اس جیسی اور چیز مل سکتی ہو تو پھر وہ خرید کر اصلی مال کو دینا لازم ہوتا ہے اور اگر اس شے کا تعلق ذوات الیقیم سے ہو تو پھر اس کی قیمت مستاجر کے ذمہ لازم ہوتی ہے۔

ودیت کی تعریف

کسی شخص کو اپنے مال پر نگران بنانا اور اپنا مال اس کے حوالے کر دینا ایدام یا ودیت کہلاتا ہے۔

ارکان: اس کے مندرجہ ذیل ارکان ہیں۔

(۱) ودیت: وہ شے جو بطور امانت رکھی جائے۔

(۲) مودع: حفاظت کرنے والے کو کہتے ہیں۔

(۳) مودع: چیز کے مالک کو کہتے ہیں۔

حکم: امانت رکھی ہوئی چیز لینے والے کی حفاظت میں آجاتی ہے اور وہ اس کے پاس امانت ہوتی ہے اس کی حفاظت کرنا اس پر واجب ہے اور مالک کے طلب کرنے پر واپس لوٹانا واجب ہے اور اگر اس سے وہ چیز ہلاک یا گم ہو جائے اور اس نے اس کی حفاظت کا مکمل اہتمام کیا تھا تو اس پر اس کا کوئی تاوان نہیں اور اگر حفاظت نہیں کی تو اس کا ضامن ہے لہذا چنی دینا پڑے گا۔

امانت کی تعریف

لغوی معنی کسی معاملے میں بھروسہ کرنا یا اعتماد کرنا اور اصطلاح میں ایسی چیز جو اپنے غیر کو اس طرح سپرد کی جائے کہ سپرد کرنے والے نے اس پر کامل بھروسہ کیا کہ یہ شخص اس کا حق لوٹا دے گا امانت کہلاتا ہے

امانت کی اقسام: امانت کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) اللہ تعالیٰ کی امانتیں: انسانی جسم، اعضاء، کان، ناک، آنکھ، زبان، ہاتھ یہاں تک کہ اس کی زندگی یہ سب اللہ تعالیٰ کی امانتیں ہیں لہذا اپنے جسم کو اللہ تعالیٰ کی اطاعت و فرمانبرداری میں لگانا اور اپنی زندگی کو شرعی احکام کے مطابق بسر کرنا، نیکی کرنا، برائی سے بچنا، تقویٰ کو لازم کرنا، بندے کے لئے امانت ہے اور اس کے برعکس کرنا یعنی اپنے اعضاء کو اللہ تعالیٰ کی نافرمانی اور معصیت میں صرف کرنا اور حرام کارکناب اور فرائض و واجبات سے کنارہ کشی کرنا خیانت ہے۔

(۲) نفس کی امانت: ہمارے اوپر ہمارے نفس کے بھی حقوق ہیں ان حقوق کو ادا کرنا

امانت ہے اور اس کے برعکس کرنا خیانت ہے۔ مثلاً اپنے نفس کو رزق حلال بقدر ضروری کھلاتا، مناسب سونا اور آرام کرنا وغیرہ امانت نفس ہے اس کی قوت برداشت سے زیادہ اس میں تصرف کرنا اسے بھوکا پیاسا رکھ کر ہلاک کرنا خیانت ہے۔

(۳) بندوں کی امانتیں: بیوی، بچوں اور اپنے دوستوں کے حقوق، والدین کے حقوق کی ادائیگی میں ہمت نہ کرنا امانت ہے اور اس کا برعکس کرنا خیانت کہلاتا ہے۔

ودیت اور امانت میں فرق: ودیت اور امانت میں فرق یہ ہے کہ امانت میں تلف کی صورت میں ضمان نہیں ہوتی مگر ودیت خاص اس کا نام ہے جو حفاظت کے لئے دی جاتی ہے۔

مضاربہ کی تعریف

ایسا عقد کہ ایک جانب سے مال ہو اور ایک جانب سے کام اور نفع میں جانیں کی شرکت ہو مضاربہ کہلاتا ہے۔

تفصیل: دو فریق کسی کاروبار میں شرکت کا معاہدہ کرتے ہیں ایک فریق کا سرمایہ ہوتا

ہے اور دوسرے فریق کی محنت۔ صاحب مال کہتا ہے کہ یہ مال لو اور اس میں اللہ تعالیٰ جو منافع عطا فرمائے گا وہ ہمارا آدھا آدھا یا چوتھائی یا تہائی تقسیم ہوگا اس کے جواب میں مضارب کہتا ہے میں نے

قبول کیا یا میں اس معاملے پر راضی ہوا مفاربت کہلاتا ہے۔

حکم: دین اسلام میں مفاربت جائز ہے۔

مزارعت کی تعریف

کسی دوسرے شخص کو اپنی زمین اس طور پر کاشت کرنے کے لئے دینا کہ جتنی پیداوار اس زمین سے حاصل ہوگی دونوں میں برابر برابر یا ایک تہائی یا دو تہائی تقسیم ہوگی اسے مزارعت کہتے ہیں۔

حکم: صاحبین کے نزدیک مزارعت جائز ہے۔

مزارعت کے جواز کے لئے شرائط: مزارعت کے جواز کے لئے چند شرائط ہیں۔

(۱) عاقلین عاقل و بالغ ہوں۔ اور اگر نابالغ ہے تو اسے عقد کرنے کی سرپرست بنے

اجازت دی ہو۔

(۲) زمین زراعت کے قابل ہو شوریدہ یا بنجر زمین پر مزارعت صحیح نہیں۔

(۳) زمین معلوم ہو مجہول نہ ہوں۔

(۴) مالک زمین اپنی زمین کو کاشت کار کے حوالے کر دے اور اگر یہ شرط لگائی کہ میں

بھی اس میں کام کروں گا تو مزارعت درست نہیں۔

(۵) مدت بیان ہو مثلاً دو سال، تین سال، چار سال وغیرہ۔ اگر مدت معین نہ کی تو

مزارعت صرف پہلی فصل پر ہوگی اس کے بعد مزارعت باطل ہو جائے گی۔

(۶) یہ واضح کرنا ضروری ہے کہ بیج مالک دے گا یا کاشتکار ورنہ جو وہاں کا عرف ہو اسی

طرح کیا جائے۔

(۷) یہ بیان کیا جائے کہ کیا بونے گا یا مطلقاً اجازت دے دے کہ جو تو بونے تیری

مرضی۔

(۸) ہر ایک کو کیا ملے گا اس کا دوران عقد ذکر کرنا ضروری ہے پیداوار میں دونوں کی

شرکت لازمی ہے۔

مساقات کی تعریف

کسی شخص نے اپنا باغ دوسرے شخص کو اس لئے دیا کہ وہ اس کی حفاظت و نگہداشت کرے باغ کے درختوں کی مناسب دیکھ بھال ان کی گوڑی وغیرہ کرے تو اس کے نتیجہ میں حاصل ہونے والا پھل باغ کے مالک اور نگہداشت کرنے والے کے درمیان مشترک ہوگا اسے مساقات کہتے ہیں۔

حکم: اس کے جواز پر علمائے کرام کا فتویٰ ہے۔

شفعہ کی تعریف

کسی شخص نے غیر منقولہ جائیداد کسی مخصوص قیمت پر خریدی اتنی ہی قیمت میں کسی جائیداد کے مالک ہونے کا حق دوسرے شخص کو حاصل ہو جائے اسے شفعہ کہتے ہیں۔

حکم: مشتری راضی ہو یا نہ ہو دوسرے شخص کا حق ساقط نہیں کر سکتا۔

شفعہ کی شرائط: شفعہ کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) جائیداد غیر منقولہ ہو کیونکہ منقولہ میں شفعہ نہیں ہو سکتا۔

(۲) بائع کی ملک زائل ہوگئی ہو اگر بائع کو اختیار شرط ہو تو شفعہ نہیں ہو سکتا۔

(۳) جب وہ اپنا اختیار شرط ساقط کر دے گا یعنی یوں کہہ دے کہ میں اپنا شفعہ کا حق معاف

کرتا ہوں تب ہو سکے گا۔

(۴) مشتری کو اختیار ہو تو شفعہ کر سکتا ہے۔

(۵) بائع کا حق بھی زائل ہو گیا ہو یعنی بیع کے لینے کا اسے حق نہ ہو۔ لہذا مشتری نے بیع

قاسد کے: رے جائیداد بیچی تو شفعہ نہیں ہو سکتا۔

(۶) جس جائیداد کے ذریعے سے اس جائیداد پر شفعہ کا حق حاصل ہوا ہے وہ اس وقت شفعہ کی ملک میں ہو یعنی جب کہ مشتری نے اس شفعہ والی جائیداد کو خرید لیا اگر وہ مکان شفعہ کے کرایہ میں ہو یا رعایہ اس میں رہتا ہے تو شفعہ نہیں کر سکتا یا اس مکان کو اس نے پہلے ہی بیع کر دیا ہو تو اب شفعہ نہیں کر سکتا۔

(۷) شفعہ کا حق صرف اس شخص کو حاصل ہوتا ہے جس کی جائیداد یا مکان دوسرے کی جائیداد یا مکان کے ساتھ متصل ہو۔
شفعہ کرنے والے کو شفعہ کہتے ہیں۔

مہایاتہ کی تعریف

بعض اوقات ایسا ہوتا ہے کہ ایک چیز چند افراد کے درمیان مشترک ہوتی ہے اور وہ اس کو تقسیم نہیں کرتے اب ہر ایک شریک اپنی باری کے ساتھ اس چیز سے نفع اٹھاتا ہے فقہاء کی اصطلاح میں اسے مہایاتہ یا تہایو کہتے ہیں۔

حکم: اس طریقہ پر ہر فریق کے لئے نفع اٹھانا شرعی طور پر جائز ہے۔

مہایاتہ کی صورتیں: مہایاتہ کی بے شمار صورتیں ہو سکتی ہیں جن میں چند مندرجہ ذیل ہیں

(۱) دو مکان ہیں ایک کا کرایہ ایک لے گا اور دوسرے کا دوسرا۔

(۲) دو مکان ہیں ایک میں ایک رہے گا اور دوسرے میں دوسرا۔

(۳) ایک مکان ہے ایک حصہ میں ایک رہتا ہے دوسرے میں دوسرا۔

(۴) ایک مکان میں ایک مہینہ ایک رہے گا دوسرے مہینہ دوسرا۔

(۵) ایک مکان ہے اسے کرایہ پر دیا ہوا ہے ایک مہینہ ایک کرایہ لیتا ہے دوسرے مہینے

دوسرا

حق کی تعریف

ایسا ذمہ کہ جس کی ادائیگی ایک شخص پر دوسرے شخص کے لئے عائد ہوتی ہے حق کہلاتا ہے۔

وقف کی تعریف

کسی شے کو اپنی ملک سے خارج کر کے کامل طور پر اللہ تعالیٰ کی ملک کر دینا اس طریقہ پر کہ اس سے عوام الناس نفع حاصل کر سکیں وقف کہلاتا ہے۔ جیسے مدرسہ و مسجد کے لئے زمین اور پانی کے لئے کنواں وغیرہ

حکم: وقف شدہ چیز بندے کی ملک سے فوراً نکل جاتی ہے۔

شرائط: (۱) واقف عاقل و بالغ ہو۔ بچہ یا مجنون کسی چیز کو وقف نہیں کر سکتے۔

(۲) وقف شدہ چیز واقف کی ملکیت میں ہو غیر کی چیز وقف کی تو صحیح نہیں۔

(۳) وقف شدہ چیز معین ہو یعنی اس کا نام اور مقدار بیان کی جائے تبہم و مجہول چیز کا وقف صحیح نہیں۔

(۴) وقف کو کسی شرط سے معلق نہ کیا ہو ورنہ وقف باطل ہو جائے گا مثلاً کہا کہ کل بارش ہو

گئی تو میرا مکان مدرسے کے لئے وقف ہے یا کل میرا بیٹا آگیا تو میری زمین مسجد کے لئے وقف ہے تو مکان یا زمین وقف نہ ہوا۔

(۵) وقف ہمیشہ کے لئے ہو کسی مخصوص مقرر مدت تک کے لئے وقف صحیح نہیں۔

(۶) وقف شدہ چیز کی آمدنی کو غیر متناہی مدت کے لئے رکھا جائے۔

(۷) موقوفہ چیز غیر منقول ہو جیسے زمین۔

رہن کی تعریف

رہن کی اصطلاحی تعریف یہ ہے کہ غیر کے مال کو اپنے حق میں اس لئے روک لے کہ اس کے سوا اپنا

حق وصول کر سکے۔ جیسے کسی نے قرضہ دیا اور اس کو وصول کرنے کے لئے مقروض کی کوئی چیز اپنے پاس رکھ لی رہن کہلاتا ہے۔

حکم: شریعت میں رہن بالا جماع جائز ہے۔

رہن کے ارکان: رہن کے تین ارکان ہیں۔

(۱) مرہون: وہ چیز جو رہن رکھی جائے۔

(۲) راہن: رہن رکھنے والے کو کہتے ہیں۔

(۳) مرتہن: جس کے پاس رہن رکھا گیا ہو۔

رہن کی شرائط: رہن کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) راہن اور مرتہن دونوں عاقل ہوں تا بالغ اور مجنون کا رہن درست نہیں۔

(۲) رہن کو کسی شرط پر معلق نہ کیا ہو۔

(۳) رہن رکھی ہوئی چیز قابل بیع ہو (قابل بیع اشیاء کی وضاحت بیع میں دیکھیں)۔

وصیت کی تعریف

کسی شخص کو اپنی موت کے بعد کسی چیز کا مالک بنا دینا وصیت کہلاتا ہے۔

وصیت کی اقسام: وصیت کی چار قسمیں ہیں۔

(۱) واجب: حقوق اللہ کی عدم ادائیگی کی صورت میں وصیت کرنا واجب ہے۔ مثلاً زکوٰۃ

میں نمازیں قضاء کیں یا روزے وغیرہ قضاء کئے ان کی وصیت کرنا کہ میری طرف سے فدیہ ادا کر دیں

واجب ہے۔

(۲) مستحب: مساجد، دینی مدارس بنانے، غریبوں یا دیگر امور دینیہ کے لئے وصیت کرنا

مستحب ہے۔

(۳) مباح: دنیا داروں یا غیر محتاجوں کے لئے وصیت کرنا مباح ہے۔

(۴) مکروہ: فساق و فجار یا حرام کار کتاب کرنے والوں کے لئے وصیت کرنا مکروہ ہے۔

وصیت کی شرائط: وصیت کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) وصیت کرنے والا مالک بنانے کا اہل ہو لہذا بچہ اور مجنون وصیت نہیں کر سکتے۔

(۲) جس کے لئے وصیت کی جائے وہ وصیت کے وقت زندہ ہو چاہے تحقیقاً یا تقدیراً

تقدیراً کی مثال جیسے ماں کے پیٹ میں بچہ۔

(۳) جس کے لئے وصیت کی جائے وہ پہلے سے وارث نہ ہو۔

(۴) جس کے لئے وصیت کی جائے وہ قاتل نہ ہو۔

(۵) جس چیز کی وصیت کی جائے وہ تملیک یعنی مالک بننے کی صلاحیت رکھتی ہو۔

وصیت کے ارکان: وصیت میں چار ارکان ہوتے ہیں۔

(۱) موصی: وصیت کرنے والے کو کہتے ہیں۔

(۲) وصی: جس کو وصیت کی جائے۔

(۳) موصی لہ: جس کے لئے وصیت کی جائے۔

(۴) موصی بہ: جس چیز کی وصیت کی جائے۔

وصیت کا حکم: وصیت کا مال موصی لہ کی ملکیت میں اس طرح داخل ہو جاتا ہے جیسے ہبہ کیا

ہو مال۔

مسابقت کی تعریف

چند اشخاص کا آپس میں یہ طے کرنا کہ کون آگے بڑھ جاتا ہے جو آگے بڑھ جائے اس کو فلاں چیز دی

جائے کی مسابقت کہلاتا ہے۔

شرائط: مسابقت کے لئے مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) تیر اندازی، گھڑ دوڑ، اونٹ دوڑ، آدمیوں کی آپس میں دوڑ، گدے، خچر کی دوڑ میں مسابقت جائز ہے لیکن ان میں بھی مقصود جہاد کی تیاری ہو فقط لہو لعب یا کھیل کود کے لئے یا فخر بوائی کے لئے مسابقت مکروہ ہے۔

(۲) مسابقت کے لئے یہ بھی ضروری ہے کہ شرط فقط ایک جانب سے ہو مثلاً ایک نے کہا مجھ سے آگے نکل گئے تو سو روپے دوں گا اور اگر میں آگے نکل گیا تو تجھ پر کچھ نہیں یا کوئی تیسرا شخص ان دونوں سے کہے کہ تم میں سے جو آگے بڑھ جائے اسے پچاس روپے دوں گا۔

(۳) اگر جانبین سے شرط ہو مثلاً کہا کہ اگر تم مجھ سے آگے نکل گئے تو تمہیں دو سو روپے دوں گا اور اگر میں آگے نکل گیا تو تمہیں دو سو روپے دینے ہوں گے یہ جوئے کی صورت ہے اس لئے حرام ہے۔

کسب کی تعریف

کسب کے حکم کی صورتیں: اس کی مندرجہ ذیل صورتیں ہیں۔

(۱) فرض: اپنے اہل و عیال اور جن کا نان نفقہ اس کے ذمہ ہے اور مفلس و نادار اور تنگ دست و محتاج والدین کے لئے بقدر کفایت کما فرض ہے۔

(۲) مستحب: کفایت سے زائد اس لئے کمانا کہ فقراء و مساکین کی خبر گیری کرے گا، رشتہ داروں کی مدد کرے گا مستحب و افضل ہے۔

(۳) مباح: اور اگر یہ چیز مقصود نہ ہو تو بقدر کفایت سے زیادہ کمانا مباح ہے۔

(۴) مکروہ: اور اگر مال کی کثرت اور فخر و تکبر مقصود ہو تو کفایت سے زیادہ کمانا مکروہ ہے۔

دین کی تعریف

ہر وہ چیز جو کسی عقد یا کسی شے کے ہلاک و ضائع کرنے سے کسی کے ذمہ لازم و واجب ہو جائے یا کوئی چیز قرض لینے کی وجہ سے کسی کے ذمہ لازم ہو جائے اسے دین یعنی قرض کہتے ہیں۔

دین اور قرض میں فرق: دین اور قرض میں مندرجہ ذیل فرق ہے۔

(۱) دین قرض سے عام ہے دین میں مدت کا مقرر کرنا واجب ہے چاہے مدت معلوم ہو یا مجہول۔

مدت معلوم کی مثال: مثل یوں کہا کہ میں تمہیں رجب کی ۲۴ تک قرض ادا کر دوں گا۔

مدت مجہول کی مثال: مثلاً یوں کہا کہ میں تمہیں سردیاں آنے تک قرض ادا کر دوں گا۔

(۲) قرض میں مدت کا معین کرنا لازم نہیں یعنی اگر قرض میں مدت کا تعین کر بھی دیا جائے تو وہ غیر لازم ہونے کے باوجود صحیح ہے۔

قرض کی تعریف

ایسی چیز جس کو تقاضا کرنے کے لئے دیا جائے اور شریعت میں جو مثلی چیز تقاضا کرنے کے لئے دی جائے یعنی مثلی چیزوں میں سے کوئی چیز کسی کو دینا اس غرض سے کہ بعد میں اسی کے مثل چیز وصول کرے اسے قرض کہتے ہیں۔ مثلی سے مراد مکملی، موزونی یا معدودی چیزیں ہیں یعنی اس چیز کی مثل میں ایسا فرق نہ ہو جس سے قیمت مختلف ہو جائے جیسے انڈا اور اخروٹ وغیرہ۔ اس لئے درہم، دینار، گوشت، روٹی، کاغذ، اور سکوں وغیرہ میں قرض کا لین دین جائز ہے۔

حکم: (۱) شرعی طور پر قرض کا لین دین جائز ہے۔

(۲) قرض دار قرض ادا نہیں کرتا اگر قرض خواہ کو اس کی کوئی چیز اسی جنس کی جو قرض میں دی ہے مل جائے تو بغیر دے لے سکتا ہے بلکہ زبردستی چھین لے جب بھی قرض ادا ہو جائے گا۔ لیکن

دوسری جنس کی چیز بغیر اجازت نہیں لے سکتا۔

(۳) قرض دیا اور ٹھہرا لیا کہ جتنا دیا ہے اس سے زیادہ لے گا یہ سود ہے۔

(۴) جس پر قرض ہے اس نے قرض دینے والے کو کچھ ہدیہ کیا تو لینے میں ہرج نہیں

جبکہ ہدیہ دینا قرض کی وجہ سے نہ ہو بلکہ اس وجہ سے ہو کہ دونوں میں قربت یا دوستی ہے یا اس عادت ہے کہ یہ تھے تحائف دیتا رہتا ہے۔

(۵) جو چیز قرض میں لی گئی ہے اسی کی مثل ادا کی جائے۔

جوا (قمار) کی تعریف

برودہ کھیل کہ جس میں یہ شرط لگائی جائے کہ جیتنے والا ہارنے والے سے کچھ لے گا جوا کہلاتا ہے۔
- مردہ لاشی کی تقریباً تمام صورتوں پر جوا کی تعریف صادق آتی ہے۔

علامہ شامی فرماتے ہیں کہ قمار قرعے بنا ہے جو کہ گھٹنا بڑھتا ہے اور جوا کا نام اس لئے جوا رکھا گیا ہے کہ جوا کھیلنے والوں میں سے ہر ایک آدمی کا مال ہر دم گھٹنے اور بڑھنے کا امکان رہتا ہے کہ اس کا مال اس کے مقابل کو مل جائے اور دوسرے کا اس کی طرف چلا جائے۔

حکم: شریعت میں جوئے کی تمام صورتوں کو حرام قرار دیا گیا ہے قرآن میں اس کی مذمت بیان ہوئی ہے۔

سود کی تعریف

یہ سود کا لغوی معنی ہے زیادتی اور شرعی طور پر ایسی زیادتی کہ جس کا کوئی عوض نہ ہو یا اصل مال پر زیادتی کو سود کہتے ہیں۔

اقسام: سود کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) زیادتی کا سود (۲) ادھار کا سود۔

زیادتی کا سود: اس کے حرام ہونے کے لئے دو شرطوں کا پایا جانا ضروری ہے۔

(۱) دونوں چیزیں ہم جنس ہوں مثلاً گندم کے بدلے گندم، جو کے بدلے جو۔

(۲) دونوں ہم وزن ہوں جیسے سابقہ مثال کہ گندم اور گندم یہ دونوں تولی جاتی ہیں اس میں کی بیشی

حرام لہذا کسی نے ایک کلو گندم کے بدلے دو کلو گندم بیچی یہ سود ہے۔

ادھار کا سود: اس کے حرام ہونے کے لئے ایک شرط ہوگی۔

(۱) یا تو دونوں چیزیں ہم جنس ہوں یا دونوں چیزیں ہم وزن ہوں جیسے سونا اور چاندی

دونوں ہم وزن تو ہیں کیونکہ تولے جاتے ہیں لیکن ہم جنس نہیں لہذا اس میں کی بیشی حلال مثلاً ایک

تولہ سونا کے بدلے چھ تولہ چاندی بیچنا جائز ہے مگر اس میں ادھار کرنا حرام ہے لہذا فوری قبضہ کریں۔

ہم جنس کی تعریف

جب دو چیزوں کا ایک نام اور ایک کام ہو تو وہ دو چیزیں ہم جنس کہلاتی ہیں اور جب نام و مقصد میں اختلاف پیدا ہو جائے تو غیر جنس کہلائیں گی۔

مثلاً: گہو، جو، کپڑے کی قسمیں، مل، لٹھا یہ سب اجناس مختلف ہیں کججور کی تمام قسمیں ہم جنس ہیں لہذا، تانبا، پتیل مختلف جنس ہیں، اون اور ریشم، سوت مختلف اجناس ہیں گائے کا گوشت بھیڑ اور بکری کا گوشت یہ سب مختلف اجناس ہیں۔

چند پیمانوں کی تعریفات

(۱) صاع: تین سو چونتیس تولے کا ایک وزن۔

(۲) مثقال: ساڑھے چار ماشے کا وزن۔

(۳) تولہ: بارہ ماشے کا وزن۔

(۴) ماسہ: آٹھ تولی کا وزن یعنی تولے کا بارہواں حصہ۔

(۵) رتی: آٹھ چاول کے برابر یعنی ماشے کا آٹھواں حصہ۔

(۶) اوقیہ: چالیس گرام کا وزن اوقیہ کہلاتا ہے۔

(۷) درہم: چاندی کا ایک سکہ جو دو آنے کے برابر ہوتا ہے اور دو ماشہ اڑھائی رتی

وزن کے برابر ہوتا ہے۔

(۸) قیراط: درہم کے بارہویں حصے کا ایک وزن۔

(۹) رطل: آدھے سیر کا وزن۔

(۱۰) کلوگرام: ایک ہزار گرام یا ایک سیر آٹھ تولہ کے برابر وزن۔

(۱۱) ذراع: تین فٹ یا چھتیس انچ کا پیمانہ۔

(۱۲) میل: ۶۰۰ یعنی ایک ہزار سات سو ساٹھ گز کا فاصلہ یا بارہ ہزار قدم کا ایک میل

ہوتا ہے۔

(۱۳) کلو میٹر: پانچ فرلانگ یا گیارہ سو گز کے برابر کا فاصلہ کلو میٹر کہلاتا ہے۔

(۱۴) فرلانگ: دو سو بیس گز کا فاصلہ یعنی میل کا آٹھواں حصہ فرلانگ کہلاتا ہے۔

(۱۵) فرہنگ یا فرسخ: تین میل سے زائد کا فاصلہ۔

(۱۶) کوس: تین ہزار گز کی لمبائی کو کوس کہتے ہیں۔

بیمہ کی تعریف

لغوی معنی یقین دہانی اور اصطلاح میں ایسا معاملہ جو طالب بیمہ اور کمپنی کے درمیان ہوتا ہے جس میں کمپنی طالب بیمہ سے ایک مخصوص رقم، مخصوص قسطوں کی صورت میں مخصوص شرائط کے ساتھ وصول کر کے مخصوص وقت میں مخصوص منافع کے ساتھ دیتی ہے جو کہ حقیقت میں سود ہے لیکن ان کی اصطلاح میں سود نہیں بلکہ بونس ہے اسے بیمہ کہتے ہیں۔

اقسام: بیمہ کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) زندگی کا بیمہ (۲) املاک کا بیمہ (۳) ذمہ داری کا بیمہ۔

(۱) زندگی کا بیمہ: بیمہ کمپنی اپنے ڈاکٹر کے ذریعے طالب بیمہ کا معائنہ کراتی ہے

ڈاکٹر اس کی جسمانی حالت دیکھ کر اندازہ لگاتا ہے کہ یہ شخص اتنے سال مثلاً تیس سال تک زندہ رہے گا چنانچہ کمپنی ڈاکٹر کی رپورٹ پر تیس سال کے لئے اس کی زندگی کا بیمہ کرتی ہے یعنی طالب بیمہ کمپنی کو تیس سال تک مقررہ اقساط ادا کرتا ہے۔ بیمہ کی مدت مکمل ہونے کے بعد اگر طالب بیمہ فوت ہو جائے تو کمپنی اس کے ورثاء کو وہ جمع شدہ رقم نفع (سود) ادا کر دیتی ہے۔ اور اگر وہ مقررہ مدت سے پہلے مر جائے تو کمپنی مقررہ رقم زائد منافع کے ساتھ ادا کر دیتی ہے لیکن اس صورت میں منافع (سود) کی شرح بڑھ جاتی ہے۔

(۲) املاک کا بیمہ: یعنی مکان، گھر، کارخانہ، موٹر کار وغیرہ کا بیمہ۔ اس کی صورت

بھی وہی ہوتی ہے جو اوپر ذکر ہوئی یعنی طالب بیمہ معین مدت تک معینہ رقم معینہ اقساط میں ادا کرتا ہے اور کمپنی معینہ مدت کے بعد اسے معینہ رقم منافع کے ساتھ واپس کر دیتی ہے۔ اور اگر حادثہ کی صورت میں بیمہ شدہ املاک ہلاک ہو جائے تو کمپنی اس کی تلافی کرتی ہے اور اصل رقم کے ساتھ مزید رقم (سود) زائد شرح کے حساب سے طالب بیمہ کو ادا کرتی ہے۔

ذمہ داریوں کا بیمہ: اس کی صورت یہ ہے کہ بچوں کی تعلیم، شادی وغیرہ کا بیمہ کیا جاتا ہے اور کمپنی ان کاموں کی ذمہ داری لیتی ہے باقی رقم وغیرہ کی ادائیگی اور وصولی مذکورہ بالا تفصیل کے مطابق ہوتی ہے۔

حکم: بیمہ سود کی ایک واضح صورت ہے اس لئے حرام ہے۔

قسم کی تعریف

جب کسی شی کا وجود اپنے اوپر لازم کرنا ہو تو اس کو اللہ تعالیٰ کے ذکر کے ساتھ پختہ کرنا قسم کہلاتا ہے۔ یا اللہ تعالیٰ کے نام کے ساتھ اپنی بات کو پختہ کرنا قسم کہلاتا ہے۔

قسم کی اقسام: قسم کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) غموس (۲) لغو (۳) منعقدہ۔

(۱) غموس: جان بوجھ کر کسی گزشتہ چیز کی قسم کھائی مثلاً کہا کہ خدا کی قسم فلاں بندے نے کھانا کھالیا ہے لیکن اس نے ابھی کھانا نہیں کھایا اور یہ جانتا تھا کہ اس نے نہیں کھایا ایسی قسم کو غموس کہتے ہیں۔

حکم: غموس میں سخت گناہ گار ہوگا اور توبہ واستغفار کرے گا مگر اس قسم پر کفارہ نہیں۔

(۲) لغو: وہ قسم ہے کہ کوئی شخص اپنے خیال میں تو سچی قسم کھائے لیکن حقیقت میں وہ جھوٹی تھی مثلاً ایک طالب علم نے دوسرے طالب علم سے کہا کہ کے زید مدرسہ میں آیا ہے دوسرے نے زید کی عدم موجودگی کا گمان کر کے کہا کہ نہیں آیا حالانکہ وہ آچکا تھا اسے لغو کہتے ہیں۔

حکم: اس قسم میں نہ گناہ ہے نہ کفارہ۔

(۳) منعقدہ: کسی نے زمانہ مستقبل کی قسم کھائی مثلاً کہا خدا کی قسم کل روزہ رکھوں گا اس کو منعقدہ کہتے ہیں۔

منعقدہ کی اقسام: منعقدہ کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) یقین فور (۲) یقین مرسل (۳) یقین موقت۔

(۱) یقین فور: اگر کسی خاص وجہ سے یا کسی بات کے جواب میں قسم کھائی جس سے اس کام کا فوراً کرنا یا نہ کرنا سمجھا جاتا ہو اسے یقین فور کہتے ہیں۔

حکم: ایسی قسم میں اگر فوراً وہ بات ہو گئی تو قسم ٹوٹ گئی اور اگر کچھ دیر کے بعد ہو تو اس کا کچھ اثر

نہیں

مثلاً: کسی نے اس کو ناشتہ کے لئے کہا کہ میرے ساتھ ناشتا کر لو اس نے کہا خدا کی قسم ناشتہ نہیں کروں گا۔ اس کے ساتھ ناشتہ نہ کیا تو قسم نہیں ٹوٹی اگرچہ گھر جا کر اسی روز ناشتہ کر لیا ہو۔

(۲) یقین مرسل: اگر قسم میں کوئی وقت مقرر نہیں کیا اور قرینہ سے فوراً کرنا یا نہ کرنا نہ سمجھا جاتا ہو تو اسے یقین مرسل کہتے ہیں۔

حکم: قسم کھائی کہ فلاں کو ماروں گا اور نہ مارا یہاں تک کہ دونوں میں سے ایک مر گیا تو قسم ٹوٹ گئی اور جب تک دونوں زندہ ہوں تو اگرچہ نہ مارا قسم نہیں ٹوٹی۔

(۳) یقین موقت: وہ قسم کہ جس کے لئے کوئی وقت مثلاً ایک دن یا دو دن یا کم و بیش مقرر کر دیا ہو یقین موقت ہے۔

حکم: اگر وقت معین کے اندر قسم کے خلاف کیا تو ٹوٹ گئی ورنہ نہیں۔ مثلاً قسم کھائی کہ اس گھرے میں جو پانی ہے اسے آج پیوں گا اور آج نہ پیا تو قسم ٹوٹ گئی اور کفارہ دینا ہوگا اور پی لیا تو قسم پوری ہو گئی

قسم کی تقسیم نمبر (۲): (۱) اللہ تعالیٰ کی ذات و صفات کی قسم (۲) غیر اللہ کی قسم۔

(۱) اللہ تعالیٰ کی ذات و صفات کی قسم: اللہ تعالیٰ کی ذات و صفات کی قسم کھانے سے قسم منعقد ہو جائے گی مثلاً اللہ کی قسم، خدا کی قسم، رحمان کی قسم۔

صفات کی مثال۔ کلام اللہ کی قسم، قرآن کی قسم، کبریا کی قسم، اللہ کی بزرگی کی قسم، اللہ کی واحدانیت کی قسم۔

(۲) غیر اللہ کی قسم: غیر اللہ کی قسم کھانے سے قسم منعقد نہیں ہوتی اور نہ ہی اس پر کفارہ ہے۔

مثلاً رسول اللہ ﷺ کی قسم، کعبہ کی قسم، عرش کی قسم، مکہ و مدینہ کی قسم، ماں باپ کی قسم، جوانی کی قسم

محبوب کی قسم۔

قسم کی شرائط: قسم کے لئے چند شرطیں ہیں اگر یہ شرائط موجود نہ ہوں تو کفارہ لازم نہیں آئے گا۔

(۱) قسم کھانے والا مسلمان ہو۔

(۲) عاقل ہو۔

(۳) بالغ ہو۔

(۴) جس چیز کی قسم کھائی وہ عقلاً ممکن بھی ہو۔

(۵) قسم اور جس چیز کی قسم کھائی دونوں کو ایک ساتھ کہا ہو درمیان میں فاصلہ آگیا تو قسم

نہیں

نذر کی تعریف

اللہ تعالیٰ کی تعظیم کے سبب فعلی مباح کو اپنے اوپر لازم کر لینا نذر کہلاتا ہے۔ ایک تعریف اس طرح بھی کی گئی ہے کہ انسان جس چیز کی نذر مان کر اپنے اوپر لازم کرتا ہے اسے نذر کہتے ہیں۔

نذر کی اقسام: نذر کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) نذر شرعی (۲) نذر عرفی۔

نذر شرعی: اللہ تعالیٰ کے لئے غیر ضروری عبادت کو اپنے اوپر لازم کر لینا نذر شرعی ہے جیسے نفل وغیرہ کی نذر۔

حکم: (۱) نذر شرعی اللہ تعالیٰ کے سوا کسی دوسرے کی ماننا جائز نہیں۔

(۲) نذر شرعی کا پورا کرنا فرض ہے۔

نذر عرفی: غیر اللہ کے لئے نذر ماننا نذر عرفی کہلاتا ہے۔

حکم: نذر عرفی انبیاء و اولیاء کے لئے جائز ہے۔

(۲) نذر عرفی کا پورا کرنا فرض نہیں۔

نذر کی شرائط: نذر کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) جس عبادت کی نذر مانی اس عبادت کا ادا کرنا محال نہ ہو جیسے کسی نے کہا کہ فلاں کام ہو گیا تو آج کی رات ایک لاکھ نفل ادا کروں گا۔ ایک لاکھ نفل ایک رات میں ادا کرنا عادتاً محال ہے

(۲) جس چیز کی نذر مانی وہ کسی دوسری عبادت کے لئے وسیلہ نہ بنے جیسے وضو کی نذر ماننا کہ یہ نماز کے لئے وسیلہ ہے۔

(۳) جس شے کے لئے نذر مانی وہ بذات خود گناہ نہ ہو جیسے شراب پینے کی نذر۔

(۴) جس چیز کی نذر مانی وہ خود فرض یا واجب نہ ہو جیسے عصر کی نماز کی نذر کیونکہ یہ پہلے ہی فرض ہے۔

لقطہ کی تعریف

وہ گری پڑی چیز جو راستے میں کسی شخص کو مل جائے اور اس کے مالک کا پتہ نہ ہوا اسے لقطہ کہتے ہیں۔

لقطہ کی اقسام: لقطہ کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) وہ لقطہ کہ جس کے بارے میں غالب گمان ہو جائے کہ اس کا مالک اسے تلاش نہیں کرے گا جیسے ایک آدھ روپیہ یا پچھی پرانی ٹوپی وغیرہ۔

حکم: اس صورت میں لقطہ اٹھانا اور اس سے نفع حاصل کرنا فقیر کے لئے جائز اور غنی کو چاہئے کہ کسی فقیر، مسکین کو دے دے۔

(۲) وہ لقطہ جس کے بارے میں علم ہو جائے کہ اس کا مالک اسے تلاش کرے گا جیسے سو روپیہ یا پانچ روپیہ یا چادر وغیرہ۔

حکم: اس صورت میں اگر کسی نے اٹھالیا تو اس پر اس کی حفاظت کرنا واجب ہو جائے گا اور اس پر اس لفظ کا اعلان کرنا بھی ضروری ہو جائے گا تا کہ اس چیز کو اس کے مالک تک پہنچا دے۔

مدت اعلان: لفظ کی مدت اعلان تین دن ہے۔

لفظ اٹھانے یا نہ اٹھانے کی صورتیں: اس کی مندرجہ ذیل صورتیں ہیں۔

(۱) مستحب: اگر یہ خیال ہے کہ میں اس لفظ کے مالک کو تلاش کر کے دے دوں گا تو اٹھا لیتا مستحب ہے۔

(۲) واجب: اگر یہ ظن غالب ہو کہ میں نہ اٹھاؤں گا تو یہ چیز ضائع و ہلاک ہو جائے گی تو اٹھا لینا واجب ہے۔

(۳) مکروہ تنزیہی: اگر اندیشہ ہو کہ شاید میں خود ہی رکھ لوں اور مالک کو تلاش نہ کروں گا تو اٹھانا مکروہ تنزیہی ہے اور نہ اٹھانا بہتر ہے۔

(۴) مکروہ تحریمی: اور اگر ظن غالب ہے کہ مالک کو نہ دوں گا تو اٹھانا مکروہ تحریمی ہے۔

(۵) حرام: اور یقینی طور پر صرف اپنے لئے اٹھا لینا حرام ہے اور یہ غصب کے بمنزلہ ہے حدیث پاک میں ہے کہ کسی کی گری پڑی چیز اٹھانے والے کے لئے آگ کا انگارہ ہے۔

لقیط کی تعریف

لغوی معنی وہ بچہ جو کہیں پڑا ہوا ملے اور اس کے ولی کا کچھ پتہ نہ ہو اور شرعی طور پر کسی شخص کا پھینکا ہوا وہ بچہ جسے یا تو اس نے غربت و افلاس کے سبب پھینکا یا تہمت و زنا کے اندیشہ سے پھینکا لقیط کہلاتا ہے۔

حکم: (۱) اگر اس بچہ کو نہ اٹھانے کی صورت میں اس کے ہلاک ہونے کا خطرہ نہ ہو تو اٹھانا مستحب ہے۔

(۲) اگر اس کے ہلاک ہونے کا یقین کامل ہو تو اسے اٹھا لینا واجب ہے۔

باب الجنایات

حد کی تعریف

لغوی معنی منع کرنا اور اصطلاح میں ایسی سزا جو شارع یعنی اللہ تعالیٰ کی طرف سے مخصوص کی گئی ہو اسے حد کہتے ہیں

حکم: اس سزا میں زیادتی ہو سکتی ہے اور نہ کی بادشاہ وقت کو بھی اس میں کمی بیشی کا اختیار نہیں۔
سات سزائیں ایسی ہیں جن میں حد لگائی جاتی ہے۔ (۱) قتل (۲) چوری (۳) زنا (۴) زنا (۵) شراب (۶) مرتد (۷) کذف۔

تعذیر کی تعریف

شارع کی طرف سے جن جرائم پر حد و مقرر کی گئیں ان کے علاوہ جرائم کی سزا قاضی اور حاکم وقت کی صواب دید پر چھوڑ دی گئیں انہیں تعذیر کہتے ہیں۔ تعذیر کا اختیار صرف بادشاہ وقت ہی کو نہیں بلکہ شوہر بیوی کو آقا غلام کو ماں باپ اپنی اولاد کو استاد شاگرد کو تعزیر کر سکتا ہے۔

چوری (سرقہ) کی تعریف

ایسا شخص جو عاقل و بالغ ہو اور کسی محفوظ مقام سے مالی غیر لے جائے اور وہ مال دس درہم یا دس درہم سے زیادہ ہو یا اتنی مالیت کی کوئی شے چھپ کر بغیر شبہ اٹھالے اور جس جگہ سے اس نے مال لیا اس کی حفاظت کا التزام بھی کیا گیا ہو ایسے شخص کو چور اور اس کے فعل کو چوری کہتے ہیں۔

چوری کی شرائط: چوری کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) چرانے والا مکلف ہو یعنی بچہ یا پاگل نہ ہو۔ اگر بچہ یا پاگل نے مال اٹھا یا تو ان پر حد

نہیں

(۲) اندھانہ ہو کیونکہ ہو سکتا ہے اس نے اپنا مال سمجھ کر اٹھایا ہو۔

(۳) دس درہم چرائے یا اتنی قیمت کا کوئی بھی مال چرائے جو دس درہم مالیت کی ہو اگر دس سے کم ہو تو حد جاری نہیں ہوگی۔

(۴) چرانے میں خود اسی شے کا چرانا مقصود ہو یعنی اگر کوئی کپڑا چرایا اور کپڑے کی قیمت دس درہم سے کم ہو مگر اس کپڑے میں سے دینار نکلا تو جس کو قصد چرایا وہ دس درہم کا نہیں تو حد بھی نہیں۔

(۵) مال اس طرح لے گیا ہو کہ اس کا نکالنا ظاہر ہو لہذا اگر مکان کے اندر جہاں سے لیا وہاں اشرفی وغیرہ نکل لی تو حد نہیں بلکہ تادان دینا پڑے گا۔

(۶) مال پوشیدہ طور پر لیا ہو۔

(۷) جس کی چوری کی اس کا مال پر قبضہ صحیح ہو خواہ وہ اس کا مالک ہو یا مانتدار اور اگر چور نے کسی چور کا چوری شدہ مال چرایا تو حد نہیں۔

(۸) ایسی چیز نہ ہو جو جلد خراب ہو جاتی ہو جیسے بزییاں وغیرہ ان پر حد نہیں۔

(۹) چوری دار الحرب میں نہ ہو۔

(۱۰) بقدر دس درہم کے ایک بار مکان سے لے گیا اور اگر چند بار لے گیا کہ سب کا مجموعہ دس درہم یا زیادہ ہے مگر ہر بار دس سے کم لے گیا تو ہاتھ نہیں کٹے گا یعنی حد جاری نہیں ہوگی۔

(۱۱) مال محفوظ ہو۔ حفاظت کی دو صورتیں ہیں۔

(۱) وہ مال ایسی جگہ ہو جو حفاظت کے لئے بنائی گئی ہو مثلاً مکان، دکان وغیرہ۔

(۲) وہ جگہ ایسی تو نہ ہو مگر وہاں کوئی محافظ مقرر کر دیا ہو جیسے میدان وغیرہ۔

چوری کی حد: چور کا داہنا ہاتھ گٹے سے کاٹ کر کھولتے تیل میں داغ دیں۔ ایک بار ہاتھ کٹنے کے بعد دوبارہ چوری کرے تو اب بائیں پاؤں گٹے سے کاٹ دیں اس کے بعد تیسری مرتبہ جب چوری کرے تو اب ہاتھ پاؤں نہیں کاٹیں گے بلکہ بطور تعذیر مار کر قید کر دیں یہاں تک کہ توبہ کر

لے ورنہ قید میں رکھیں۔

ڈاکہ (حرب) کی تعریف

احناف کے نزدیک حربہ یعنی ڈاکہ اور چوری کی تعریف ایک ہی ہے کیونکہ ڈاکہ بڑی چوری ہے اسے مطلقاً چوری بھی نہیں کہہ سکتے اس لئے کہ چور ذیہ طریقے سے مال لیتا ہے جبکہ ڈاکہ میں ڈاکو اعلائیہ مال لوٹتا ہے۔

ڈاکہ کی شرائط: ڈاکہ کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) ڈاکہ ڈالنے والا عاقل یا بالغ ہو چاہے مجنون نے ڈاکہ ڈالا تو حد نہیں ہے۔

(۲) ڈاکہ کا مرد ہو تا ضروری ہے اگر عورت نے ڈاکہ ڈالا تو حد نہیں بلکہ تعذیر ہوگی۔

(۳) جن پر ڈاکہ ڈالا وہ مسلمان ہوں غیر مسلموں پر ڈاکہ ڈالا تو حد نہیں بلکہ تعذیر ہوگی۔

(۴) جس مال پر ڈاکہ ڈالا وہ مال متقوم ہو اور اس کی حفاظت بھی کی گئی ہو۔

(۵) جس مال پر ڈاکہ ڈالا اس کی مالیت دس درہم سے کم نہ ہو اگر ڈاکو کثیر ہوں تو ہر ڈاکو کے حصہ میں دس درہم کی مالیت کا مال آئے ہر ڈاکو کے حصہ میں اتنا مال نہ آئے تو حد نہیں۔

(۶) ڈاکہ دار الاسلام میں ڈاکہ لایا ہو دار الحرب میں ڈاکہ لایا تو حد نہیں۔

حکم: مال غصب کرنے کی صورت میں اس کے ہاتھ پاؤں کاٹنے جائیں گے۔

غصب کی تعریف

مال متقوم (ایسا مال جس سے نفع ماہل کیا جاسکے) محترم سے مالک کی اجازت کے بغیر ناجائز قبضہ کر لینا غصب کہلاتا ہے بشرطیکہ قبضہ خفیہ یعنی پوشیدہ نہ ہو۔

غصب کے ارکان: غصب کے مندرجہ ذیل ارکان ہیں۔

غاصب: قبضہ کرنے والے کو کہتے ہیں۔

مغضوب منہ: جس کی چیز پر قبضہ کیا جائے۔

مغضوب: جس چیز پر قبضہ کیا جائے۔

نوٹ: یاد رہے کہ وہ چیز جس پر ناجائز قبضہ ہوا مگر جائز قبضہ کو ہٹا کر نہ ہوا وہ غصب نہیں کہلائے گا۔ مثلاً ایسی چیز غصب کی کہ اس میں کچھ زیادتی پیدا ہو گئی جیسے کسی کی بکری غصب کی غصب کے بعد اسی سے بچہ پیدا ہوا تو اس زائد یعنی بچہ کو غصب نہیں کہا جائے گا۔

حکم: اگر غاصب جانتا ہے کہ دوسرے کا مال ہے اس کے باوجود غصب کر لیا تو سخت گناہ گار ہوا اگر مغضوبہ چیز موجود ہو تو مالک کو واپس کرے اگر ضائع ہو گئی یا گم ہو گئی تو تاوان ادا کرے یعنی اتنی مالیت کا مال مالک کو دے۔

وکیل کی تعریف

وہ شخص جو اپنے غیر میں تصرف کرے یا وہ شخص کہ عاجز آدمی اپنا کام اس کے سپرد کر دے وکیل کہلاتا ہے۔

حکم: انسانوں کو اللہ تعالیٰ نے مختلف طبیعتیں عطا فرمائی ہیں کوئی قوی ہے تو کوئی کمزور، بعض کم سمجھ ہیں اور بعض عقلمند ہر شخص میں خود ہی اپنے معاملات کو انجام دینے کی قابلیت نہیں نہ ہر شخص اپنے ہاتھ سے اپنے سب کام کرنے کے لئے تیار لہذا انسانی حاجات کا یہ تقاضا ہوا کہ وہ دوسروں کو اپنا وکیل بنائے شریعت میں یہ جائز ہے۔

وکالت کی شرائط: (۱) وکیل کے لئے عاقل و سمجھ دار ہونا شرط ہے بالغ ہونا شرط نہیں اس لئے مجنون اور نامسمجھ بچہ وکیل نہیں بن سکتا۔

(۲) وکالت اسی چیز میں ہو سکتی ہے جس کو موکل خود کر سکتا ہو۔

شہادت کی تعریف

کسی شخص کے حق کو ثابت کرنے کے لئے مجلس قضاء کے اندر شہادت کے لفظ (یعنی میں گواہی دیتا ہوں) کے ساتھ خبر صادق (سچی بات) بیان کرنا شہادت کہلاتا ہے۔

شہادت کی اقسام: شہادت کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) یحییٰ شہادت (۲) سمعی شہادت (۳) شہادت علی الشہادت۔

(۱) یحییٰ شہادت: گواہ کا آنکھوں دیکھا حال بیان کرنا شہادت یحییٰ کہلاتا ہے۔

(۲) سمعی شہادت: سنی ہوئی بات کی گواہی دینا شہادت سمعی ہے۔

(۳) شہادت علی الشہادت: اصل گواہ کسی دوسرے شخص کو اپنی شہادت پر گواہی دینے والا بنائے اس صورت میں گواہ ثانی گواہ اول کی شہادت دے سکتا ہے۔

نصاب شہادت کی اقسام: نصاب شہادت کی مندرجہ ذیل اقسام ہیں۔

شہادت وزنا: اس شہادت میں چار عادل مردوں کی گواہی معتبر ہے۔

دیگر حدود میں شہادت: اس میں دو مردوں کی گواہی معتبر ہے۔

عورتوں کے عیوب سے متعلق امور پر شہادت:

(۱) وہ امور کہ جن پر مرد مطلع نہیں ہو سکتے ان میں ایک عادلہ عورت کی گواہی قبول کی جائے گی۔

(۲) عورتوں کے وہ امور جن پر مرد مطلع ہوں (یعنی بغیر حدود کی شہادت کے) اس میں دو عادل مردوں یا ایک مرد اور دو عورتوں کی شہادت قبول کی جائے گی۔

شہادت کی شرائط: شہادت ادا کی مندرجہ ذیل شرطیں ہیں۔

(۱) گواہ کا عاقل و بالغ ہونا۔

(۲) اکھیارہ ہونا۔

(۳) ناطق یعنی بولنے والا۔

(۴) محد و فی القذف ہونا یعنی اسے تہمت کی حد پہلے سے نہ لگی ہو۔

(۵) گواہی دینے میں گواہ کا نفع مقصود نہ ہونا۔

(۶) جس چیز کی شہادت دے رہا ہے اسے جانتا ہو۔

(۷) گواہ کا مقدمہ میں کسی کا فریق نہ ہونا۔

(۸) مسلمان کے خلاف مسلمان کا گواہی دینا۔

(۹) حدود و قصاص کے مقدمات میں گواہ کا مرد ہونا۔

(۱۰) گواہ کا دعویٰ کے موافق ہونا۔

تنبیہ: آجکل پچھریوں میں علم دین سے عدم واقفیت کی وجہ سے لوگ ان لفظوں سے گواہی دیتے ہیں،، میں خدا کو حاضر و ناظر جان کر کہتا ہوں،، یہ خلاف شرع ہے۔ کیونکہ اللہ تعالیٰ کے لئے حاضر و ناظر کا لفظ بولنا جائز نہیں ہے۔

دعویٰ کی تعریف

وہ قول جو دوسرے شخص سے حق طلب کرنے کے لئے قاضی کے سامنے پیش کیا جائے دعویٰ کہلاتا ہے۔

ارکان: دعویٰ کے ارکان مندرجہ ذیل ہیں۔

(۱) مدعی: دعویٰ کرنے والے کو کہتے ہیں۔

(۲) مدعی علیہ: جس پر دعویٰ کیا جائے۔

(۳) مدعا: جس چیز پر دعویٰ کیا جائے۔

دعویٰ کے صحیح ہونے کی شرائط: دعویٰ کے صحیح ہونے کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) دعویٰ جس چیز کا کرے وہ معلوم ہو مجہول شے کا دعویٰ مثلاً فلاں کے ذمہ میرا کچھ حق ہے قابل سماعت نہیں۔

(۲) دعویٰ ثبوت کا احتمال رکھتا ہو لہذا ایسی چیز کا دعویٰ جس کا پایا جانا محال ہو باطل ہے مثلاً کسی ایسے لڑکے کو اپنا بیٹا ہونے کا دعویٰ کرتا ہے جو عمر میں اس سے بڑا ہے۔

(۳) خود مدعی اپنی زبان سے دعویٰ کرے بلا عذر اس کی طرف سے دوسرا شخص دعویٰ نہیں کر سکتا۔

(۴) اگر مدعی زبانی دعویٰ پیش کرنے سے عاجز ہے تو لکھ کر پیش کرے۔

(۵) مدعی، مدعا علیہ کے سامنے اپنا دعویٰ بیان کرے اور اسی کے سامنے ثبوت پیش کرے۔

ثالث (حکم) کی تعریف

فریقین اپنے کسی معاملے میں کسی شخص کو اس لئے مقرر کریں کہ وہ عدل کے ساتھ ان کے درمیان فیصلہ کرے اور ہمارے جھگڑے کو دور کرے حکم یعنی ثالث کہلاتا ہے۔

رکن: حکم بنانے کا رکن ایجاب و قبول ہے یعنی فریقین یہ کہیں کہ ہم نے فلاں کو حکم یعنی ثالث منتخب کیا اور حکم یعنی ثالث بھی اس کو قبول کرے۔

حکم: ثالث کا فیصلہ فریقین کے حق میں دیا ہی ہے جیسے قاضی کا فیصلہ لہذا حکم یعنی ثالث کا فیصلہ حتمی ہوگا۔

ثالث بنانے کی شرائط: اس کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) فریقین کا عاقل ہونا شرط ہے۔

(۲) مسلمان ہونا شرط نہیں کا فر کو بھی ثالث بنایا جاسکتا ہے۔

(۳) ثالث ایسے شخص کو بتائیں جسے فریقین جانتے ہوں اور اگر ایسے کو بتایا جو معلوم نہ ہو مثلاً یہ کہا کہ جو شخص مسجد میں پہلے آئے گا وہ ہمارا ثالث ہے یہ ناجائز ہے۔

زخم (جرح) کی تعریف

زخم کی مندرجہ ذیل قسمیں ہیں۔

شجہ: ایسا زخم جو سر یا چہرے پر لگایا جائے۔ سر اور چہرے کے علاوہ جسم کے باقی کسی عضو پر زخم کو جرح کہتے ہیں۔

شجہ کی اقسام: شجہ کی مندرجہ ذیل دس قسمیں ہیں۔

(۱) حارصہ: وہ زخم جو گہرا تو نہ ہو فقط کھال چھل جائے۔

(۲) دامعہ: وہ زخم کہ جس میں خون ظاہر تو ہو جائے لیکن بہتا نہ ہو۔

(۳) دامیہ: وہ زخم کہ جس میں خون بہ جائے۔

(۴) باضعہ: ایسا زخم جس میں کھال کٹ جائے۔

(۵) متلاجمہ: ایسا زخم کہ جس میں کھال کٹنے کے ساتھ ساتھ گوشت بھی کٹ جائے۔

(۶) سمحاک: وہ زخم کہ جس کی گہرائی اس جھلی تک پہنچ جائے جو سر کی ہڈی اور گوشت کے درمیان میں ہوتی ہے۔

(۷) موضیہ: ایسا زخم کہ جس میں ہڈی ظاہر ہو جائے۔

(۸) ہاشمہ: ایسا زخم جو ہڈی بھی توڑ دے۔

(۹) منقلہ: وہ زخم کہ جس میں ہڈی ٹوٹ کر اپنی جگہ سے ہٹ جائے۔

(۱۰) آمہ: وہ زخم جو دماغ کی کھال تک پہنچ جائے۔

حکم: (۱) موضیہ میں دیت کا بیسواں حصہ یعنی پانچ سو درہم یا پانچ اونٹ یا ان کی مالیت کا مال واجب ہوگا۔

(۲) ہاشمہ میں دیت کا دسواں حصہ یعنی دس اونٹ دینا واجب ہوں گے۔

(۳) منقلہ میں پندرہ اونٹ دینا واجب ہوں گے۔

(۴) آمہ میں دیت کا تہائی دینا واجب ہے۔

(۵) ان کے علاوہ دیگر زخموں میں فقط ایک عادل مسلمان کے فیصلہ کا اعتبار کیا جائے گا

یعنی وہ جو فیصلہ کرے اس پر عمل کیا جائے گا لیکن دیت واجب نہیں ہوگی۔

قتل کی تعریف

ایسا فعل کہ جسکے سبب روح جسم سے نکل جائے قتل کہلاتا ہے۔

قتل کی اقسام: احناف کے نزدیک قتل کی پانچ اقسام ہیں۔

(۱) قتل عمد: ایسا قتل جس میں روح نکالنے کے لیے کسی ایسے ہتھیار سے ضرب لگاتا کہ وہ

زخم لگائے اور کانٹے والا ہو قتل عمد کہلاتا ہے۔

حکم: آخرت میں عذاب اور دنیا میں قصاص ہے اور اگر ورنہ دیت پر راضی ہو جائیں تو پھر قصاص نہیں۔

(۲) قتل شبہ عمد: وہ قتل جس میں فقط کوڑے، لاشی یا ہاتھ وغیرہ سے ضرب لگانے کا ارادہ ہو اور

بندہ مر جائے۔

حکم: قاتل گناہ گار ہوگا اور کفارہ ادا کرے۔ لیکن اس میں قصاص نہیں۔

کفارہ: ایک غلام آزاد کرے یا دو ماہ کے مسلسل روزے رکھے اور اس کے ورنہ پر دیت کی صورت

میں سواونٹ واجب ہیں اور یہ ادائیگی تین سال تک کی جائے گی۔

(۳) قتل خطا: جس کو قتل کرنا چاہتا تھا اس کی بجائے کوئی دوسرا قتل ہو جائے اس کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) گمان میں خطا (۲) فعل میں خطا۔

گمان میں خطا: مثلا کسی شخص کو کافر سمجھ کر قتل کیا مگر حقیقت میں وہ مسلمان تھا۔

فعل میں خطا: کسی جانور کو نشانہ بنایا لیکن تیر یا گولی کسی مسلمان کو لگ گیا۔

حکم: قتل خطا میں قصاص واجب نہیں ہوتا اور اخروی سزا بھی نہیں۔ لیکن دیت واجب ہوگی۔

(۴) قتل قائم مقام خطا: کوئی شخص نیند میں کسی دوسرے پر گر پڑے اور وہ اس کے گرنے کے سبب مر جائے قتل قائم مقام خطا کہلاتا ہے۔

حکم: فاعل کے عصبات (خونی رشتہ داروں) پر دیت و کفارہ دونوں واجب ہوں گے۔ لیکن قصاص نہیں۔

(۵) قتل بالسبب: کسی نے راستے میں کنواں کھدوایا راستے پر پتھر رکھ دئے اور کوئی اس کنویں میں گرا، یا پتھر سے ٹکڑا لگ گئی اور مر گیا قتل بالسبب کہتے ہیں۔

حکم: اس قتل میں فقط دیت واجب ہوگی کفارہ نہیں۔

قسامت کی تعریف

لغوی معنی ہے کسی مخصوص شخص کے لئے مخصوص طریقے سے حلف اٹھانے کو قسامت کہتے ہیں اور اصطلاح میں کوئی شخص کسی محلے میں مقتول پایا گیا اور قاتل کے بارے علم نہ ہو تو مقتول کا ولی پچاس ایسے محلے داروں سے حلف لے گا کہ جن کو اس ولی نے منتخب کیا ہو اور وہ اس طرح حلف اٹھائیں کہ اللہ تعالیٰ کی قسم نہ تو میں اس شخص کا قاتل ہوں اور نہ میں اس کے قتل کے بارے میں جانتا ہوں۔

حکم: ان محلے داروں کے حلف اٹھانے کے بعد تمام پر مشترکہ طور پر دیت واجب ہو جائے گی

جس کو تین سال کے اندر اندر ادا کرنا لازم ہو جائے گا۔ اور اگر اہل محلہ قسم کھانے سے انکار کر دیں تو انہیں قید کر لیا جائے گا یہاں تک کہ قسم کھائیں۔

دیت کی تعریف

وہ مال جو جان کے بدلے ادا کیا جائے یعنی مقتول کے ورثاء کو مقتول کی جان کے بدلے جو مال دیا جائے دیت کہلاتا ہے۔ لیکن یہاں یہ فرق ذہن میں رکھنا ضروری ہے کہ اگر مقتول کے ورثاء مسلمان ہوں تو دیت ادا کی جائے گی اور اگر ورثاء کافر ہوں تو دیت نہیں۔

دیت کی مقدار: دیت تین قسم کے مالوں سے ادا کی جائے گی۔

(۱) اونٹ ایک سو۔ (۲) دینار ایک ہزار۔ (۳) درہم دس ہزار۔

قاتل کو اختیار ہے کہ ان تینوں میں سے جو چاہے ادا کرے۔

شکار کی تعریف

شکار اس وحشی جانور کو کہتے ہیں جو آدمیوں سے بھاگتا ہو اور بغیر حیلہ نہ پکڑا جاسکتا ہو اور کبھی فعل یعنی جانور کے پکڑنے کو بھی شکار کہتے ہیں نیز شکار حلال اور حرام دونوں قسم کے جانوروں کو شامل ہے۔

شکار کی صورتیں: شکار کی مندرجہ ذیل پانچ صورتیں ہیں۔

(۱) مباح: زندگی برقرار رکھنے کے لئے حلال جانور کا شکار کرنا مباح ہے۔

(۲) مستحب: تنگنی روزگاری وجہ سے یا سوال سے بچنے کے لئے حلال جانور کا شکار کرنا مستحب ہے۔

(۳) واجب: بھوک کی حالت کی بناء پر اپنے آپ کو ہلاکت سے بچانے کے لئے شکار کرنا واجب ہے جبکہ کھانے کا اور کوئی ذریعہ موجود نہ ہو۔

(۴) مکروہ: لہو و لعب کے لئے شکار کرنا مکروہ ہے۔

(۵) حرام: ذبح نہ کرنے اور کھانے کی نیت کے بغیر شکار کا حرام ہے۔

مردار کی تعریف

ایسا حلال جانور جو غیر مذبوح ہو (یعنی جس کو ذبح نہ کیا جاسکے) چاہے وہ خود مر گیا ہو یا کسی نے اس کا گلا گھونٹ کر مار ڈالا ہو یا کسی جانور نے اسے مار ڈالا ہو مردار کہلاتا ہے۔ لیکن مچھلی اور مٹھی مردار میں داخل نہیں کہ یہ ذبح کرنے کی چیز نہیں۔

حکم: مردار کا گوشت کھانا اور اس کی خرید و فروخت ناجائز و حرام ہے۔

شراب کی تعریف

شراب کی چار قسمیں ہیں۔ (۱) خمر (۲) عصیر (۳) نقع التمر (۴) نقع الزبيب۔

(۱) خمر: انگور کا وہ کچا پانی جس میں جوش آ کر تیزی پیدا ہو جائے اور جھاگ پھینک دے یعنی جھاگ سے صاف ستھرا ہو کر شفاف اور رقیق ہو جائے خمر کہلاتا ہے۔ جبکہ صاحبین کے نزدیک جھاگ سے صاف ستھرا ہو جانا خمر ہونے کے لئے شرط نہیں بلکہ صرف تیزی آجائے یعنی پڑے پڑے جھاگ چھوڑ جائے خمر کہلاتا ہے۔

(۲) عصیر: انگور کا وہ شیرہ جو دھوپ میں یا آگ پر اتنا پکا یا جائے کہ دو تہائی سے کم جل جائے یعنی ایک تہائی سے زیادہ باقی رہے عصیر کہلاتا ہے۔

عصیر کی اقسام: عصیر کی دو قسمیں ہیں۔

(!) باذق: وہ عصیر جو معمولی پکا یا گیا ہو باذق کہلاتا ہے۔

(!!) منصف: وہ عصیر جو پکا کر آدھا جلادیا گیا ہو اور آدھا باقی ہو منصف کہلاتا ہے۔

(۳) نقع التمر: ترکھور کا کچا پانی جس میں تیزی آجائے اور جھاگ پھینک دے اس کا دوسرا

نام سکر بھی ہے۔

(۴) نقع الزبيب: منقہ کا کچا پانی جس میں جوش آ کر تیزی پیدا ہو جائے اور جھاگ پھینک دے نقع الزبيب کہلاتا ہے۔

نتیجہ: خمر اپنی حقیقت کے لحاظ سے صرف انگور کا کچا پانی حسب تفصیل بالا ہے اسی معنی کے ساتھ خمر خاص ہے اسی پر علمائے لغت کا اجماع ہے اور بقیہ شرابوں پر اس کا اطلاق محض مجازاً ہوتا ہے۔

حکم: (۱) خمر کی حرمت قطعی ہے اور بقیہ شرابوں کی ظنی اور اجتہادی۔

(۲) خمر کو حلال سمجھنے والا کافر ہے اور بقیہ شرابوں کو حلال سمجھنے والا کافر نہیں۔

(۳) خمر کا ایک قطرہ بھی پی لینے پر حد واجب ہے لیکن بقیہ شرابوں میں نشہ کی حد تک پینے

پر واجب ہے۔

(۴) خمر بالاتفاق نجاست غلیظہ ہے لیکن بقیہ شرابیں ایک روایت میں یعنی شیخین کے

زردیک خفیفہ ہیں۔

(۵) خمر کی خرید و فروخت بالاتفاق ناجائز ہے اور بقیہ شرابوں کی بیع امام اعظم کے نزدیک

جائز ہے۔

(۶) خمر کے تلف کرنے پر بالاتفاق ضمان واجب نہیں لیکن بقیہ شرابوں کے تلف کرنے پر

امام اعظم کے نزدیک ضمان واجب ہے۔

نتیجہ: ان شرابوں کے درمیان خمر و غیر خمر کے فرق احکام کے باوجود ہمارے ائمہ کرام کا اتفاق

ہے کہ یہ تمام شرابیں حرام و ناپاک ہیں۔ اسی طرح ان شرابوں کے علاوہ جو بھی دوسرے مشروبات

تیار کئے جاتے ہیں خواہ وہ انگور و کھجور کے ہوں یا دوسری چیزوں کے مثلاً گیہوں، جو، شہد، دودھ، میوہ

بکئی، انجیر وغیرہ کے ان باب میں اصل مذہب جو شیخین کا مذہب ہے یہ ہے کہ نشہ کی حد تک ان کا پینا

بھی حرام ہے اور اس سے کم میں غرض صحیح کے لئے ان کا پینا جائز و حلال ہے کہ یہ مشروبات بجائے خود

پاک ہیں۔ لیکن امام محمد ان مشروبات کو بھی شراب قرار دے کر حرمت و نجاست کا فیصلہ سناتے ہیں

لہذا ہمارے ائمہ خصوصاً اعلیٰ حضرت فاضل بریلی رحمۃ اللہ علیہ کا فتویٰ بھی انہی یعنی امام محمد رحمۃ اللہ علیہ کے مسلک پر ہے۔

بھنگ کی تعریف

بھنگ ایک ایسی جڑی بوٹی ہے جو اعضاء کو بے حس کر دیتی ہے عقل کو مآؤف کر دیتی ہے اور جنون لاتی ہے، جسم کی رطوبت کو خشک کر دیتی ہے اور اندیشوں کو ختم کر دیتی ہے جسم کو گرم بیماریوں کی آماجگاہ بنا دیتی ہے درد سر کا باعث بنتی ہے اس کے استعمال سے منی خشک ہو جاتی ہے اور یہ اچانک موت آنے کا سبب بنتی ہے۔

حکم: بھنگ نشہ آور ہے اس لئے حرام ہے۔ جان بوجھ کر بھنگ پینے کی صورت میں اگر نشہ پیدا ہو اور اسی حالت میں کسی نے اپنی بیوی کو طلاق دے دی تو واقع ہو جائے گی۔

حشیش کی تعریف

یہ ایک قسم کی گھاس ہے جو ہلاک تو نہیں کرتی مگر اعضاء کو بے حس کر دیتی ہے یہ سستی اور کابلی کا سبب بنتی ہے اسکے اثرات بہت ہی مذموم ہیں۔

حکم: اسکی حرمت پر متاخرین کا اجماع ہے۔

افیون کی تعریف

وہ خشک شدہ لیس دار عرق جو خشخاش کے کچے ڈوڈے سے حاصل ہوا فیون کہلاتا ہے۔

حکم: افیون نشہ آور اور اعضاء میں سستی کا سبب بنتی ہے، اعصاب کو ڈھیلا کر دیتی ہے اور شرعی ضابطہ کے ہر وہ چیز جو نشہ دے اور اعضاء کو مست و ڈھیلا کر دے اسکا استعمال کرنا حرام ہے۔

نبذ کی تعریف

انگور یا کھجور کو پانی کے اندر اتنی دیر تک رکھنا کہ اس میں کچھ مٹھاس پیدا ہو جائے اس کو نبذ کہتے ہیں۔

حکم: اس کا پینا جائز ہے اور اگر ان چیزوں کو کافی دیر تک پانی میں رکھا جائے یہاں تک کہ پانی خوب گاڑھا ہو جائے اور جھاگ چھوڑنا شروع کر دے تو اس وقت اس میں نشہ پیدا ہو جاتا ہے اب یہ شراب ہے اس لئے حرام ہے۔

اسپرٹ کی تعریف

لغوی معنی روح الہی یا تیز شراب اور اصطلاح میں یہ ایک بے رنگ و شفاف سیال ہے جس کی بو خوشگوار اور ذائقہ تیز ہوتا ہے آگ لگانے سے یہ باسانی بغیر دھواں دینے کے نیلے رنگ کے شعلے سے جل اٹھتا ہے اور جل جانے کے بعد کچھ باقی نہیں رہتا۔

بنانے کی ترکیب: شکری سیال یا مٹھے رسوں مثلاً گڑ، یا شکر کا شربت یا آب انگور یا آب سیب وغیرہ میں خیر اٹھا کر پھر ان کا عرق کھینچ لیتے ہیں جب شکر کو پانی میں گھول کر اور اسے ایک ایسی گرم جگہ میں جہاں کی حرارت ستر اور اسی درجہ فارن ہائیٹ کے درمیان ہو رکھ کر اس میں تیز شراب ملا دیں تو اس میں ایک تیز حرکت پیدا ہو کر جوش آنے لگتا ہے اور کاربانک ایسڈ گیس خارج ہونے لگتی ہے اور وہ سیال بڑا گدلا ہونے لگتا ہے لیکن آخر کار تمام تلچھٹ برتن کے پیندے میں نہ نشین ہو جاتا ہے اور شکر شراب میں تبدیل ہو جاتی ہے ایسی شراب کو شراب خام کہتے ہیں اور جب شراب خام کو مقطر یا کشید کرتے ہیں تو مذکورہ بالا اسپرٹ حاصل ہوتی ہے۔

نچکر کی تعریف

انگریزی لفظ نچکر یعنی صبغہ کا لغوی معنی ہے رنگ اور اصطلاح میں کسی چیز مثلاً پتی جو ایک مفرد دوا ہے کا جب عرق کشید کرنا ہوتا ہے تو اسے کچکا کر الکحل میں بھگوایا جاتا ہے الکحل اس دوا یا پتی کے ایک ایک رگ وریشہ میں پہنچ جاتا ہے اور اس کے ذریعے پتی کا سارا عرق باسانی کشید کر لیا جاتا ہے اسے نچکر کہتے ہیں

الکحل کی تعریف

لفوی معنی ہے روح الخمر یا روح شراب یا جو ہر شراب اور اصطلاح میں الکحل ایک بے رنگ اور پانی کی مثل ایک خاص قسم کا رقیق ہے جو پانی کے مزاج کے برخلاف آتش گیر ہوتا ہے اور مزہ تند و تیز اور نہایت سیما طبع یعنی اڑ جانے والا سیال ہے جو نمی کو بآسانی جذب کر لیتا ہے اس میں نانوے فی صد استعمل ہائیزرواکسائیڈ اور ایک فی صد پانی ہوتا ہے۔ الکحل کو بے شمار دواؤں میں استعمال کیا جاتا ہے انگریزی دواؤں میں تقریباً سارے ہی سیال ادویہ اور کچھ انجیکشنوں میں اس کی آمیزش ہوتی ہے اور ہومیو پیتھک میں تو سو فیصد دواؤں میں اس کی آمیزش ہوتی ہے بلکہ الکحل ہی دواؤں کا جزو اعظم ہوتا ہے اور دوا کا جز کم سے کم تر ہوتا ہے۔ دواؤں کے علاوہ بھی بہت سی چیزوں کے بنانے میں الکحل کی مدد لی جاتی ہے مثلاً خوشبوؤں، وارنش، رنگ اور پینل بنانے میں بھی الکحل استعمال ہوتا ہے۔

حکم: (۱) الکحل، اسپرٹ اور ٹیچر حقیقی شراب نہیں ہیں۔

(۲) یہ ان شرابوں میں سے ہیں جن کی تھوڑی مقدار جس سے نشہ پیدا نہ ہو شیخین کے نزدیک حرام نہیں جبکہ امام محمد کے نزدیک حرام ہیں غرض یہ کہ ان شرابوں کی قلیل مقدار کی حرمت پر ائمہ احناف کا اجماع نہیں ہے۔

(۳) الکحل وغیرہ سے مخلوط دواؤں کے استعمال میں عموم بلوی کی کیفیت پیدا ہو چکی ہے کیونکہ عوام و خواص ان کے استعمال میں مبتلا ہیں۔

(۴) بے شک دواؤں کے استعمال کی حد تک شیخین کے مذہب پر عمل کرنا اور فتویٰ دینا جائز ہے۔

(۵) دیوار، دروازے یا کرسی وغیرہ پر رنگ و روغن کیا گیا اور وہ خشک ہو گیا تو جسم یا کپڑے کے مس کرنے میں حرج نہیں اور اگر خشک نہیں ہوا تو اس سے بچنا چاہئے کیونکہ اس کے

بارے میں عموم بلوی نہیں پایا جاتا۔

احتیاط: اس مسئلے میں حضرات شیخین کے مذہب کو بنیاد بنانے میں فتنے کا خطرہ ہے اور وہ یہ کہ عوام الکحل وغیرہ پینا شروع کر دیں گے لہذا اس کی جگہ علاج بالمحرکات کو بنیاد بنایا جائے تو بہتر ہے۔ (مولانا شرف قادری صاحب)

زنا کی تعریف

مسلمان شخص جو دارالاسلام میں زندہ مشغہ (قابل شہوت) عورت کی قبل (اگلی شرمگاہ) میں حرام طریقہ سے جماع کرے اس شرط پر کہ وہ شرمگاہ حقیقی ملک اور حقیقی نکاح یا شہ نکاح سے خالی ہو زنا کہلاتا ہے۔

فوائد و قیود: مذکورہ تعریف میں جن چیزوں کی قید لگائی گئی ان کی وضاحت مندرجہ ذیل ہے۔

(۱) وطی کی قید سے عورت کی شرمگاہ میں بقدر سپاری آلہ تاسل کا داخل ہونا ضروری ہے اگر بقدر سپاری کم دخول ہوا تو حد نہیں ہے۔

(۲) حرام کی قید سے یہ فائدہ حاصل ہوا کہ مکلف شخص نے اگر وطی کی تو اسے حرام کہا جائے گا بچہ یا بچوں کی وطی کرنا حرام نہیں کیونکہ وہ مکلف نہیں۔

(۳) قبل کی قید سے مراد عورت کی دبر (پچھلی شرمگاہ) میں وطی کرنا زنا کی تعریف سے نکل جائے گی۔

(۴) عورت کی قید سے مادہ جانوروں سے وطی کرنا زنا کی تعریف سے خارج ہوگی۔

(۵) زندہ کی قید سے مردہ کے ساتھ وطی کرنا بھی زنا کی تعریف سے خارج ہے۔

(۶) مشغہ (قابل شہوت) کی قید سے اتنی چھوٹی لڑکی کہ جس پر شہوت نہ آئے وہ بھی

اس تعریف سے خارج ہوگی۔

(۷) اختیار کی قید سے بے اختیار مرد یا عورت زنا کی تعریف سے خارج ہو گئے کیونکہ

مکڑہ (جس پر جبر کیا گیا ہو) پر حد نہیں ہوتی۔

(۸) دارالاسلام سے دارالحرب یا دارالکفر زنا کی تعریف سے خارج ہو گئے کیونکہ دارالحرب یا دارالکفر میں کسی نے وطی کی تو حد نہیں۔

(۹) حقیقت نکاح کی قید سے وہ شخص جس نے حالت حیض میں اپنی عورت سے وطی کی تو وہ بھی زنا کی تعریف سے خارج ہو گیا یہ درست ہے کہ اس نے ناجائز فعل کا ارتکاب کیا لیکن یہ زنا نہیں ہے اس لئے کہ عورت حقیقت میں اس کے نکاح میں موجود ہے۔

(۱۰) شبہ نکاح کی قید سے وہ شخص زنا کی تعریف سے خارج ہو گیا کہ جس کے نکاح میں شبہ تھا اور اس صورت میں اس نے عورت سے وطی کر لی تو حد نہیں۔

حکم: شادی شدہ مرد و عورت مذکورہ بالا تعریف کے تحت جب زنا کریں تو ان کو سنگسار کیا جائے گا اور اگر دونوں کنوارے ہوں تو دونوں کو سو کوڑے لگائے جائیں گے۔

زنا کا ثبوت: شعب الایمان ص ۳۴۶۔

اکراہ کی تعریف

لفوی معنی کسی شخص کو ناپسندیدہ فعل پر مجبور کرنا اور اصطلاح میں ایسا فعل جو کسی دوسرے شخص سے اس طریقہ پر انجام دیا جائے جسے کرنے میں اس دوسرے شخص کی رضا کوئی دخل نہ ہو اور وہ فعل طبعی یا شرعی لحاظ سے بھی ناپسندیدہ ہو اکراہ کہلاتا ہے۔

حکم: مکڑہ شرعی معذور ہے لہذا مجبوری کی بنا پر کئے گئے ناپسندیدہ فعل کے ارتکاب پر اس سے کوئی مواخذہ نہیں۔

ارکان: اکراہ کے مندرجہ ذیل ارکان ہیں۔

(۱) مکڑہ: جبر کرنے والے کو کہتے ہیں۔

(۲) مکڑہ: جس پر جبر کیا جائے۔

مکڑہ کی اقسام: مکڑہ کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) ملجی (۲) غیر ملجی۔

ملجی: وہ مکڑہ جس کو جان سے مار ڈالنے کی یا کسی عضو کے تلف کرنے کی دھمکی دی جائے۔

غیر ملجی: ایسا مکڑہ کہ جسے جان لینے یا کسی عضو کے تلف ہونے کا خوف نہ ہو بلکہ ضرر میں لگانے کی دھمکی دی جائے مثلاً کہا گیا دس کوڑے ماروں گا، چھڑیاں لگاؤں گا یا قید کر دوں گا وغیرہ۔

اکراہ کی شرائط: اکراہ کی مندرجہ ذیل شرائط ہیں۔

(۱) مکڑہ اس فعل کے کرنے پر قادر ہو جس کی اسے دھمکی دی گئی۔

(۲) مکڑہ کا غالب گمان ہو کہ اگر اس کام کو نہ کروں گا جس چیز کی دھمکی دی گئی اسے مکڑہ کر گزرے گا۔

(۳) جس کو دھمکی دی گئی وہ پہلے سے اس کام کو نہ کرنا چاہتا ہو۔

باب المکروبات

رشوت کی تعریف

وہ چیز جو کسی کے حق کو باطل کرنے کے لئے یا باطل کو حاصل کرنے کے لئے دی جائے یا کسی شخص کا حاکم یا کسی بھی دوسرے شخص کو اس لئے کوئی چیز دینا تاکہ وہ اس کے حق میں فیصلہ یا حاکم کو اپنا مقصد پورا کرنے پر ابھارے یا اپنی حاجت پوری کروانے کے لئے کچھ روپے دے رشوت کہلاتا ہے۔

رشوت کے ارکان: رشوت کے مندرجہ ذیل ارکان ہیں۔

(۱) راشی: رشوت دینے والے کو کہتے ہیں۔

(۲) مرتشی: رشوت لینے والے کو کہتے ہیں۔

حکم: رشوت لینا اور دینا سخت حرام اور جہنم میں لے جانے والا کام ہے۔ حدیث پاک میں ہے کہ رشوت لینے والا اور رشوت دینے والا دونوں جہنمی ہیں۔

رشوت کی جوازی صورتیں: رشوت کی مندرجہ ذیل جوازی صورتیں ہیں۔

(۱) اپنے حق کے حصول کے لئے یا ظلم کو دور کرنے کے لئے جو چیز یا مال دیا جائے وہ دینے والے کے لئے رشوت نہیں لیکن لینے والے کے لئے رشوت ہے اس لئے لینے والے کے حق میں حرام ہے۔

(۲) اپنی جان و مال بچانے کے لئے بھی رشوت دینا دینے والے کے لئے جائز ہے لینے والے کے لئے نہیں۔

(۳) وزیر اعظم یا صدر یا کسی بھی بڑے ذمہ دار تک رسائی حاصل کرنے کے لئے رشوت دینا جائز مگر لینے والے کے لئے حرام ہے۔

وسوسہ کی تعریف

لغوی معنی نرم آواز اور اصطلاح میں دل کے اندر برے خیالات اور افکار فاسدہ کا آنا وسوسہ کہلاتا ہے اور اچھے خیالات کا آنا الہام کہلاتا ہے۔

وسوسہ کی اقسام: وسوسہ شیطان کی طرف سے آتا ہے شیخ عبدالحق محدث دہلوی لکھتے ہیں وسوسہ کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) حاجس: ایسا برا خیال جو بے اختیار دل میں آجائے حاجس کہلاتا ہے۔ یہ آئی فانی ہوتا ہے یعنی آیا اور فوراً گیا۔

حکم: یہ ام سابقہ پر بھی معاف تھا اور ہمیں بھی معاف ہے۔ اور اگر یہ برا خیال دل میں باقی رہ جائے تو یہ ہم پر معاف ہے لیکن پچھلی امتوں پر معاف نہیں تھا۔

(۲) وہم: اگر اس برے خیال سے دل میں لذت و خوشی پیدا ہو تو اسے وہم کہتے ہیں۔

حکم: اس پر بھی اس امت کو پکڑ نہیں۔

(۳) عزم: اور اگر اس برے خیال کو عملی جامہ پہنانے کا ارادہ پیدا ہو تو اسے عزم کہتے ہیں

حکم: عزم میں پکڑ ہے۔

غیبت کی تعریف

اپنے مسلمان بھائی کے متعلق کوئی ایسی بات کہنا کہ اگر اس بات کا ذکر اس کے سامنے کیا جاتا تو اس کو ناگوار گزرتا اب چاہے اس بات کا تعلق اس کے بدن سے ہو یا اس کے نسب سے اس کے اخلاق سے ہو یا اس کے قول و فعل سے ہو اس کے دین و دنیا سے ہو یہاں تک کہ اس کے کپڑوں، مکان یا سواری سے ہو غیبت کہلاتا ہے۔

اقسام: غیبت کی چار قسمیں ہیں۔

(۱) کفریہ (۲) نفاق (۳) معصیت (۴) مباح۔

غیبت کفریہ: کوئی شخص غیبت کا مرتکب ہوا کسی نے اسے کہا غیبت مت کرو اس نے جواب میں یوں کہا میں نہیں مانتا کہ یہ غیبت ہے بلکہ میں اپنے قول میں سچا ہوں تو اس نے حرام قطعی کو حلال کر دیا لہذا کافر ہو گیا۔

غیبت نفاق: کسی شخص کا نام لئے بغیر اس کی برائی کرتا ہے مگر مخاطب کو جانتا ہے اب یہ غیبت کا ارتکاب کرتا ہے اور خود کو تقی ثابت کرتا ہے یہ نفاق ہے۔

غیبت معصیت: غیبت کا مرتکب ہوا لیکن یہ جانتا ہے کہ حرام فعل ہے یہ معصیت یعنی گناہ ہے۔

مباح: لوگوں کو فاسق یا بد مذہب کے شر سے بچانے کے لئے ان کی برائی کرتا ہے تاکہ لوگ ان سے دور رہیں اور ان سے محتاط ہو جائیں ایسی غیبت کرنا مباح ہے۔

حسد و رشک کی تعریف

حسد: حسد کے معنی یہ ہیں کہ کسی مسلمان شخص میں کوئی خوبی دیکھے اب دل میں یہ آرزو پیدا ہوئی کہ یہ نعمت اس سے چھین کر یعنی زائل ہو کر مجھے مل جائے حسد کہلاتا ہے۔

بغض و کینہ: کسی مسلمان شخص کے پاس نعمت دیکھ کر فقط اس نعمت کے زوال کی تمنا کرنا بغض و کینہ کہلاتا ہے۔

رشک: اور اگر یہ خواہش بیدار ہو کہ جیسی نعمت اللہ تعالیٰ نے اس کو عطا فرمائی ہے ایسی نعمت مجھے بھی مل جائے تو یہ غبطہ یعنی رشک ہے۔

غیرت: کسی مسلمان شخص کے پاس نعمت دیکھ کر اچھی اور بہتر نیت کے ساتھ اس نعمت کے زائل ہوجانے کی تمنا کرنا غیرت کہلاتا ہے۔ یعنی کسی مسلمان کو کوئی نعمت حاصل ہوئی لیکن وہ اسے ناجائز

کاموں میں صرف کر رہا ہے تو اس بات کو دیکھ کر خواہش کرنا کہ یہ نعمت اس سے چھین جائے تاکہ لوگ اس کے فتنہ و فساد سے محفوظ رہیں۔

حسد، بغض، رشک اور غیرت میں فرق: ان میں فرق یہ ہے کہ حسد میں نعمت کے زائل ہونے کے ساتھ ساتھ اپنے لئے حاصل ہونے کی بھی تمنا ہوتی ہے جبکہ بغض و کینہ میں فقط زوال کی تمنا ہوتی ہے اور رشک میں فقط حصول کی تمنا ہوتی ہے جبکہ غیرت میں تمنا تو زوال کی ہوتی ہے لیکن اچھی نیت کے ساتھ۔

حکم: حسد اور بغض و کینہ حرام اور گناہ کبیرہ ہے لہذا توبہ نہ کرنے کی صورت میں جہنم کا حقدار ہے جبکہ رشک اور غیرت جائز ہے بلکہ بعض صورتوں میں باعث ثواب ہے۔

رشک کی اقسام: رشک کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) مباح (۲) مستحب۔

(۱) مباح: دنیاوی معاملات میں رشک کرنا مباح ہے۔

(۲) مستحب: دینی معاملات میں رشک کرنا مستحب و افضل ہے۔

چغلی کی تعریف

چغلی کا مطلب یہ ہے کہ کسی کو اکسانے، بھڑکانے یا فساد پیدا کرنے کے لئے کوئی بات پھیلاتا اور اپنے کلام کو جھوٹ سے آراستہ کرنا چغلی کہلاتا ہے۔

امام غزالی فرماتے ہیں کوئی شخص کسی دوسرے آدمی کو اس طرح کہے کہ فلاں بندہ تمہارے متعلق اس طرح کہہ رہا تھا اور یہ ایسی بات ہو کہ اگر اس کو اس آدمی کے سامنے ظاہر کیا جاتا تو وہ اس کو ناپسند و ناگوار سمجھتا اب چاہے اس بات کا اظہار صراحتاً ہو یا اشارتاً یا کنایتاً چغلی کہلاتا ہے۔

حکم: اپنے مسلمان بھائی کی چغلی کرنا سخت حرام ہے۔

تکبر کی تعریف

کسی شخص کا دوسرے کو حقیر جانتے ہوئے خود کو افضل تصور کرنا تکبر کہلاتا ہے اور ایسے شخص کو تکبر کہتے ہیں

تکبر کی اقسام: تکبر کی مندرجہ ذیل قسمیں ہیں۔

(۱) اللہ تعالیٰ کے مقابلے میں تکبر: یعنی ایسا تکبر کہ جس میں کوئی شخص معاذ اللہ، اللہ تعالیٰ کو اپنے سے حقیر اور کم تر تصور کرے اور خود کو اس سے افضل گمان کرے۔ جیسے فرعون کا تکبر۔

حکم: ایسا تکبر کرنا بدترین کفر ہے۔

(۲) اللہ تعالیٰ کے احکامات سے تکبر: ایسا تکبر کہ جس میں کوئی شخص کلام الہی میں موجود احکامات اور قرآنی تعلیمات کو حقیر اور کم تر گمان کرے اور خود کو ان احکامات سے آزاد تصور کر کے یہ گمان کرے کہ یہ احکام اس قابل نہیں کہ ان پر عمل کیا جائے۔ جیسے آج کے دنیاوی تعلیم یافتہ مغربی تہذیب کے پرستار۔

حکم: ایسا تکبر بھی کفر ہے۔

(۳) انبیاء کے ساتھ تکبر: ایسا تکبر کہ جس میں انبیائے کرام اور ان کے طریقہ شریعت، ان کی سنتوں کو حقارت کی نظر سے دیکھنا اور خود کو یا اپنے طریقہ کار کو افضل و بہتر گمان کرنا۔

حکم: ایسا تکبر بعض صورتوں میں گناہ ہے اور بعض میں کفر۔

(۳) اولیاء و علمائے کرام اور دیگر مومنین کے ساتھ تکبر: ایسا تکبر کہ جس میں اولیائے کرام اور بزرگان دین کے اقوال و افعال یا ان کی ذات بابرکات کو حقارت سے دیکھنا اور عام مومنین کو کسی خاطر میں نہ لانا اور اپنے آپ کو برتر تصور کرنا۔

حکم: ایسا تکبر گمراہی اور گناہ کا باعث ہے۔

بخل کی تعریف

بخل کا معنی یہ ہے کہ جہاں مال خرچ کرنے کی ضرورت ہو اور مال خرچ کرنے کا موقع مل بھی ہو ایسی جگہ مال خرچ نہ کرنا بخل کہلاتا ہے اور اس صفت سے موصوف شخص کو بخیل کہتے ہیں۔

امام بیہقی بخل کی تعریف میں لکھتے ہیں۔

جو چیز انسان کو ادا کرنا واجب تھا اسے روک لینا بخل ہے۔

حکم: قرآن وحدیث میں بخل کی مذمت بیان ہوئی ہے۔

گمان کی تعریف

ایسا اعتقاد جو کسی ظاہری علامت سے حاصل ہونے کہلاتا ہے۔

ظن کی اقسام: ظن کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) حسن ظن: یعنی کسی مسلمان سے اچھا گمان کرنا۔

(۲) سوئے ظن: یعنی کسی مسلمان سے برا گمان کرنا۔

حسن ظن کا حکم: ہر عاقل و بالغ مسلمان مرد و عورت پر فرض ہے کہ اللہ تعالیٰ و انبیائے کرام اور تمام مومنین سے اچھا گمان کرے۔

سوئے ظن یعنی بدگمانی کا حکم: اس کی چار صورتیں ہیں۔

(۱) مباح: ایسی بدگمانی کہ نہ کرنے کی صورت میں نقصان میں مبتلا ہونے کا یقین حاصل ہو۔

جیسے اپنے پارنٹر کی مشکوک حرکات پر بدگمان ہو کر احتیاطی تدابیر اختیار کرنا تاکہ نقصان سے محفوظ رہے

(۲) مستحب: ایسی بدگمانی کہ جب سامنے والا ایسی حرکات میں مبتلا ہو کہ حسن ظن رکھنا ناممکن ہو۔

جیسے کسی شخص کا اعلانیہ برے کاموں میں مشغول ہونا مثلاً بدکاری کے اڈے سے کسی کو نکلنے دیکھنا یا شراب کی دکان سے نکلنے دیکھنا یا فاجرہ عورتوں کی صحبت میں بیٹھے دیکھنا۔

(۳) حرام: یعنی بغیر کسی شرعی ضرورت کے موٹین سے سوئے ظن رکھنا قرآن پاک اور احادیث میں ایسے ظن کی مذمت بیان ہوئی ہے۔

(۴) کفر: معاذ اللہ، اللہ تعالیٰ یا کے رسولوں سے سوئے ظن رکھنا یہ کفر ہے۔ مثلاً کسی آزمائش کے وقت اللہ تعالیٰ کی طرف ظالم یا غیر منصف ہونے کا گمان کرنا۔

خود پسندی (عجب) کی تعریف

اللہ تعالیٰ کی عطا کردہ کسی بھی دینی یا دنیوی نعمت کی وجہ سے اپنے آپ کو باکمال تصور کرنا خود پسندی یا خوش فہمی کہلاتا ہے۔ لیکن یہ بات یاد رہے کہ جب نعمت کے زوال سے بے خوف ہو اور اس نعمت کو بھی اپنا ذاتی کمال تصور کرے نیز اس نعمت کو اللہ تعالیٰ کی طرف منسوب کرنے کی بجائے اپنی جانب منسوب کرنے کو پسند کرتا ہو۔

حکم: خود پسندی قابل مذمت ہے۔

غصے کی تعریف

کسی خلاف مرضی کام کی وجہ سے دل میں نفرت اور ناپسندیدگی کی پیدا ہونے والی کیفیت کا نام غصہ ہے۔

حکم: غصہ کے حکم کی دو صورتیں ہیں۔

(۱) جائز غصہ (۲) ناجائز غصہ۔

جائز غصہ: ایسا غصہ جو اللہ اور رسول ﷺ کی رضا اور خوشنودی کی خاطر کیا جائے۔ جیسے کسی کے نماز نہ پڑھنے پر غصہ کرنا۔

ناجائز غصہ: ایسا غصہ جو اللہ و رسول کی رضا کی بجائے اپنے نفس کی خاطر کیا جائے۔ جیسے کھانا مرضی کے مطابق نہ ہونے پر غصہ کرنا۔

نوٹ: نفس کے لئے غصہ کرنا اس وقت ناجائز ہوگا جب غصہ پیدا ہونے کے بعد غصے کا اظہار بھی کیا جائے۔

فسق کی تعریف

لغوی معنی طریقہ مستقیم سے خردج اور شریعت میں وہ شخص جو گناہ کبیرہ کا مرتکب ہو فاسق کہلاتا ہے۔ فسق کے مراتب: فسق کے تین مراتب ہیں۔

(۱) تغابی: فسق کا مرتبہ اولیٰ یہ ہے کہ کوئی انسان کبھی کبھی گناہ کرے اور اس گناہ کو برا بھی جانتا ہو تغابی کہلاتا ہے۔

(۲) انہماک: درجہ ثانی یہ ہے کہ جو بندہ گناہ کبیرہ کا عادی ہو جائے اسے کسی قسم کا خوف نہ ہو انہماک کہلاتا ہے۔

(۳) مجود: درجہ ثالث یہ ہے کہ کوئی شخص گناہ کبیرہ کو اچھا جان کر کرے جو شخص اس درجہ تک پہنچ جائے اس کا ایمان برباد ہو جاتا ہے۔

تور یہ کی تعریف

کلام کرنے والا اپنے کلام سے ظاہر کے خلاف کا ارادہ کرے تو یہ کہلاتا ہے۔

تور یہ کی تعریف یوں بھی کی گئی ہے۔

لفظ کے ظاہری معنی کچھ اور ہوں اور محکم نے دوسرے معنی مراد لئے ہوں تور یہ کہلاتا ہے۔

علامہ جلال الدین سیوطی لکھتے ہیں۔

ایک ایسا لفظ استعمال کیا جائے جو دو معانی رکھتا ہو اور دونوں معانی حقیقت اور مجاز کے لحاظ سے ہوں ایک معنی قریب ہو اور دوسرا معنی بعید اور ارادہ معنی بعید کا کیا جائے اور محکم اس معنی بعید کو معنی قریب کے پردہ میں اس طرح چھپالے کہ سننے والا اس لفظ سے معنی قریب کا خیال کرے تور یہ کہلاتا ہے۔

مثال: استاد نے طالب علم سے کہا کیا آپ نے سبق کی تکرار کی تھی اب اس کا معنی قریب آج کا سبق ہے جبکہ طالب علم نے مارے بچنے کے لئے کہا جی ہاں کی تھی جبکہ اس نے گزشتہ دنوں کے سبق کی تکرار مراد لی معنی بعید ہے۔

حکم: بلا ضرورت شرعی تور یہ کرنا جائز نہیں اور اگر ضرورت شرعی ہو تو تور یہ کرنے میں حرج نہیں

حیلہ کی تعریف

شرعی طور پر اپنے مقصود کو خفیہ طریقے سے حاصل کرنا حیلہ کہلاتا ہے۔

حیلہ کی اقسام: حیلہ کی مندرجہ ذیل چار صورتیں ہیں۔

حرام: جائز طریقہ سے غیر کے حق کو باطل کرنا چاہے وہ اللہ تعالیٰ کا حق ہو مثلاً نماز روزہ یا بندے کا حق ہو یا کسی باطل چیز مثلاً سود، رشوت، جوا کو حیلہ کے ذریعے حاصل کرنا حرام ہے۔

واجب: اگر جائز طریقہ سے کسی حق کو حاصل کیا جائے یا کسی باطل یا ظلم کو دفع کیا جائے تو یہ حیلہ بعض صورتوں میں مستحب ہے اور بعض میں واجب۔ جیسے ظالم کے ظلم کو مظلوم سے دور کرنے کے لئے حیلہ کرنا

مستحب و مباح: جائز طریقہ سے کسی ضرر و نقصان سے محفوظ رہنے کے لئے حیلہ کرنا مباح و

مستحب ہے۔

مکروہ: جائز طریقہ سے مستحب کو ترک کرنے کا حیلہ کرنا مکروہ ہے۔

تقیہ کی تعریف

اپنی جان، مال اور عزت کو دشمنوں کے شر سے محفوظ کرنا تقیہ کہلاتا ہے چاہے دشمنی دینی اختلاف کی بنا پر ہو جیسے کافر اور مسلمان کی آپس میں دشمنی یا دنیوی اغراض کی وجہ سے دشمنی جیسے مال و متاع وغیرہ کی وجہ سے دشمنی۔

حکم:

مداہنت و مدارات کی تعریف

مداہنت: مداہنت کا معنی شرعی یہ ہے کہ کوئی شخص برائی دیکھے اور اس برائی کو روکنے پر قدرت رکھتا ہو لیکن برائی کا ارتکاب کر نیوالے کی طرف فدا کی بنا پر یا خوف و طمع کی بنا پر یا دینی بے رغبتی کی وجہ سے اس برائی کو نہ روکے مداہنت کہلاتا ہے۔

مدارات: اپنی یا کسی دین دار و شریف آدمی کی مال و جان یا عزت و ناموس کی حفاظت کیلئے یا نقصان سے بچنے کے لئے خاموشی اختیار کرنا مدارات ہے۔ حاصل کلام یہ ہوا کہ کسی فعل باطل میں برے لوگوں کی حمایت کرنا مداہنت کہلاتا ہے اور دین دار لوگوں کے حقوق کے تحفظ کیلئے نری اختیار کرنا مدارات ہے۔

حکم: لوگوں کے ساتھ مدارات سے پیش آنا، نرم باتیں کرنا، کشادہ روئی سے کلام کرنا مستحب ہے۔ لیکن مداہنت سے کام لینا شرعاً جائز نہیں ہے لہذا جب بھی کسی کا فریاد بندہ بے مصلحت کرے تو اس طرح نہ کرے کہ وہ سمجھے کہ میرے مذہب کو اچھا سمجھنے لگا ہے برائیاں جانتا۔

جہل، نسیان، ذہول کی تعریف

(۱) جہل: کسی چیز کو نہ جانتا جہل کہلاتا ہے۔

مثلاً کسی نے قرآن پڑھا ہی نہیں۔

(۲) نسیان: اگر جان لیا لیکن حافظہ سے نکل گیا اسے نسیان کہتے ہیں۔

مثلاً قرآن حفظ کیا مگر بھول گیا۔

(۳) ذہول: اگر کوئی چیز ذہن میں موجود تھی اور ادھر توجہ نہ رہی یہ ذہول ہے۔

مثلاً: کسی وقت اس سے کوئی آیت پوچھی اسے یاد تھی لیکن ادھر توجہ نہ گئی۔

نتیجہ: نتیجہ یہ نکلا کہ پہلا قرآن سے جا مل دوسرا قرآن کا ناسی اور تیسرا قرآن سے ذائل ہے۔

خطا کی تعریف

کسی انسان کو فعل تو یاد ہو مگر اس کا ارادہ نہ ہو۔ مثلاً روزہ دار ہونا یا دھوا کلی کر رہا تھا کہ بلا ارادہ پانی حلق سے نیچے چلا گیا اسے خطا کہتے ہیں۔

گناہ کی تعریف

از روئے شرع بری چیز کے ارتکاب کو گناہ کہتے ہیں۔

معاف ہونے یا نہ ہونے کے اعتبار سے گناہ کی اقسام: اس اعتبار سے گناہ کی چار قسمیں ہیں۔

(۱) وہ گناہ جو بغیر توبہ معاف نہ ہوں۔ جیسے کفر و شرک۔

(۲) وہ گناہ جو اللہ تعالیٰ سے توبہ کئے بغیر معاف نہ ہوں لیکن بغیر توبہ معافی کی امید

ہو۔ جیسے حقوق اللہ سے متعلق گناہ کبیرہ۔

(۳) وہ گناہ کہ توبہ کے ساتھ ساتھ مخلوق کو بھی راضی کیا جائے۔ جیسے حقوق العباد۔

(۴) وہ گناہ جو نیک اعمال کے سبب معاف ہو جائیں۔ جیسے گناہ صغیرہ۔

گناہ کبیرہ کی تعریف

وہ گناہ کہ جس کی ممانعت دلیل قطعی سے ثابت ہو یا جن پر شریعت کی جانب سے کوئی سزا مقرر کی گئی ہو گناہ کبیرہ کہلاتا ہے۔

گناہ صغیرہ کی تعریف

وہ گناہ کہ جن کی ممانعت نہ تو دلیل قطعی سے ثابت ہو اور نہ شریعت نے اس پر سزا مقرر کی ہو لیکن اس کے ارتکاب پر ناپسندیدگی کا اظہار کیا ہو گناہ صغیرہ کہلاتا ہے۔

صغیرہ کے کبیرہ بننے کے اسباب: بعض اسباب کی بنا پر گناہ صغیرہ بھی گناہ کبیرہ بن جاتا ہے وہ اسباب درج ذیل ہیں۔

(۱) گناہ صغیرہ پر اصرار سے وہ کبیرہ بن جاتا ہے۔ اصرار کا ادنیٰ درجہ تین مرتبہ گناہ صغیرہ کرتا ہے۔

(۲) گناہ صغیرہ کو معمولی جان کر اور حقارت کی نگاہ سے دیکھ کر اس کا ارتکاب کرتا گناہ کبیرہ ہے۔

(۳) گناہ صغیرہ پر خوش ہونا اور اس کا ارتکاب اپنی کامیابی تصور کرنا اور بڑے فخر سے کہے کہ میں نے فلاں کو خوب بے وقوف بنایا۔ اس طرح صغیرہ کبیرہ بن جاتا ہے۔

(۴) گناہ صغیرہ کیا اور اللہ تعالیٰ نے اس کے گناہ کی پردہ پوشی کی لیکن اس نے اس پردہ کو اٹھا دیا اس طرح صغیرہ کبیرہ بن جاتا ہے۔

(۵) کوئی عالم دین گناہ صغیرہ کا مرتکب ہو اور اس کے اصل گناہ پر عوام الناس دلیر ہو

جائیں اور جب ان کو اس گناہ سے روکا جائے تو وہ عالم دین کا حوالہ دیں کہ اگر یہ فعل غلط ہوتا تو عالم نہ کرتا کبیرہ کے درجہ میں داخل ہو جائے گا۔

ریا کی تعریف

ریا یعنی دکھاوے کے لئے کام اور سماع یعنی اس لئے کام کرنا کہ لوگ سنیں گے اور اچھا جائیں گے یہ دونوں چیزیں بہت بری ہیں ان کی وجہ سے عبادت کا ثواب نہیں ملتا بلکہ گناہ ہوتا ہے اور یہ شخص مستحق عذاب ہوتا ہے۔

ریا کی ایک تعریف اس طرح بھی ہے کہ اللہ تعالیٰ کی عبادت و اطاعت کا مقصد اگر اس کی بندگی کی بجائے دنیاوی شہرت اور دکھاوا ہو تو وہ ریا ہے لہذا ظاہری طور پر کوئی عمل چاہے کتنا ہی بڑا ہو اگر اس سے مقصود ریاکاری ہے تو وہ شرک اصغر ہے۔

ریا کی اقسام: ریا کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) ریا مخلوط (۲) ریا غیر مخلوط۔

(۱) ریا غیر مخلوط: کبھی تو اصل عبادت ہی ریا کے ساتھ کرتا ہے کہ مثلاً لوگوں کے سامنے نماز پڑھتا ہے اور کوئی دیکھنے والا نہ ہو تو پڑھتا ہی نہیں یہ ریا کامل ہے کہ ایسی عبادت کا بالکل ثواب نہیں۔

(۲) ریا مخلوط: دوسری صورت یہ ہے کہ اصل عبادت میں ریا نہیں کوئی ہو یا نہ ہو بہر حال نماز پڑھتا ہے مگر وصف میں ریا ہے کوئی دیکھنے والا نہ ہوتا جب پڑھتا لیکن اس خوبی کے ساتھ نہ پڑھتا یہ دوسری قسم پہلے سے کم درجے کی ہے۔ اس میں اصل نماز کا ثواب ہے اور خوبی کے ساتھ نماز پڑھنے کا ثواب نہیں۔

کذب کی تعریف

قائل کے قول کا واقعہ یعنی ظاہر کے مطابق ہونا صدق کہلاتا ہے اور قائل کا قول واقع کے مطابق نہ ہو تا ہے توں عم ہو یا ہو کذب یعنی جھوٹ کہلاتا ہے۔

حکم: جھوٹ بولنا گناہ کبیرہ ہے اور جہنم میں لے جانے والا کام ہے قرآن پاک میں جھوٹ بولنے والے پر اللہ تعالیٰ کی لعنت بیان ہوئی ہے۔

کذب کی جوازی صورتیں: چار صورتوں میں جھوٹ بولنا جائز ہے یعنی اس میں گناہ نہیں۔

(۱) ایک جنگ کی حالت میں جھوٹ بولنا جائز ہے کہ یہاں اپنے مد مقابل کو دھوکہ دینا جائز ہے۔

(۲) ظالم کے ظلم سے خود بچنے یا دوسرے مسلمان بھائی کو بچانے کے لئے جھوٹ بولنا جائز ہے۔

(۳) دو مسلمان بھائیوں کے درمیان صلح کروانے کے لئے بھی جھوٹ بولنا جائز ہے مثلاً ایک کے سامنے یہ کہتا ہے کہ وہ تمہیں اچھا جانتا ہے اور تمہاری تعریف کرتا ہے اس نے تمہیں سلام بھیجا ہے اور دوسرے کے پاس بھی اسی قسم کی باتیں کرے۔

(۴) ناراض بیوی کو منانے کے لئے بھی جھوٹ بولنا جائز ہے۔

فضول گوئی کی تعریف

ایسی باتیں کہ جس سے دنیا و آخرت کا کوئی فائدہ نہ ہو فضول گوئی کہلاتی ہیں۔ نیز اس میں وہ باتیں بھی داخل ہیں جن میں نہ نفع ہو نہ نقصان۔ لیکن وہ باتیں جن سے نہ نفع ہو نہ نقصان وہ بھی دراصل نقصان ہی کی باتیں ہیں کیونکہ جتنی دیر ایسی باتیں کہیں اتنی دیر ذکر و درود ہو سکتا تھا تلاوت کر سکتے تھے۔ ان منافع کا ضائع ہونا نقصان نہیں تو اور کیا ہے۔

حکم: اچھی بات بنا چپ رہنے سے افضل ہے اور چپ رہنا فضول بات کرنے سے افضل ہے



باب الآداب

حمد، مدح، شکر کی تعریف

کسی کی اختیاری خوبی پر اس کی تعظیم تعریف کرنا خواہ اس نے کوئی نعمت دی ہو یا نہ دی ہو حمد کہلاتا ہے جیسے اللہ تعالیٰ کی تعریف کرنا حمد ہے۔ اور کسی چیز کی غیر اختیاری خوبی پر اس کی تعریف کرنا مدح ہے مثلاً موتی اور یا قوت کی خوبصورتی پر تعریف کرنا مدح ہے اور کسی شخص کے انعام اور احسان پر اس کی تعظیم شکر کہلاتا ہے۔

حمد کی اقسام: حمد کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) قولی حمد (۲) فعلی حمد (۳) حالی حمد۔

قولی حمد: انبیائے کرام نے جس طرح اللہ تعالیٰ کی اپنی زبان مبارک سے ثناء فرمائی انہی الفاظ سے اپنی زبان میں تعریف کرنا حمد فعلی کہلاتا ہے۔

فعلی حمد: اللہ تعالیٰ کی رضا کی خاطر بدنی اعمال و عبادات اختیار کرنا فعلی حمد ہے۔

حالی حمد: وہ حمد کہ جس کا تعلق قلب و روح سے یعنی قلب و روح کے لحاظ سے اللہ تعالیٰ کی حمد بیان کرنا حمد حالی ہے۔

تقویٰ کی تعریف

اپنے نفس کو ہر اس چیز سے بچانا کہ جس کے سبب وہ عذاب کا مستحق ہو جائے تقویٰ کہلاتا ہے۔

ایک تعریف یوں ہے کہ اپنے نفس کو ہر قسم کے گناہوں سے محفوظ رکھنا تقویٰ کہلاتا ہے۔

تقویٰ کی اقسام: تقویٰ کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) قسم اول: یہ ہے کہ اپنے آپ کو دائمی عذاب سے محفوظ رکھنا۔ اور یہ قسم ترک کفر و شرک

سے حاصل ہوتی ہے۔

(۲) قسم ثانی: اپنے آپ کو ہر قسم کے گناہ یعنی حرام کے ارتکاب اور ترک نماز و روزہ وغیرہ سے بچانا اور صغیرہ گناہوں سے محفوظ رکھنا، ارتکاب مکروہ تحریمی اور ترک واجب سے بچانا اور ساتھ ہی اسات کے ارتکاب اور سنت موکدہ کے ترک سے اپنے آپ کو بچانا تقویٰ کی قسم ثانی ہے۔

(۳) قسم ثالث: انسان کا ہر اس چیز کو اپنانا کہ جس کے سبب اس کی کامل توجہ ذات باری تعالیٰ کی جانب رہے یہی تقویٰ کا اعلیٰ درجہ ہے۔

توکل کی تعریف

ہر وہ چیز جو اللہ تعالیٰ کے پاس ہو اس چیز کے ملنے کی فقط اللہ تعالیٰ سے امید رکھنا اور ایسی چیز جو لوگوں کے پاس ہو اس سے ناامیدی اختیار کرنا توکل کہلاتا ہے اور اسے کامل یقین ہو کہ اس کے تمام معاملات کا فقط اللہ تعالیٰ ہی کفیل ہے اور وہ شخص اللہ تعالیٰ ہی سے رجوع کرے اور غیر اللہ سے کسی قسم کی امید نہ رکھے وہ متوکل الی اللہ ہے۔

اسباب اختیار کرنا توکل کے منافی نہیں:

امام غزالی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ بندے کے سامنے کھانا رکھا ہو اور وہ بھوکا اور حاجت مند بھی ہو مگر کھانے کی طرف ہاتھ نہیں بڑھاتا اور متوکل ہونے کا دعویٰ کرتا ہے تو ایسا شخص اپنے قول میں جھوٹا ہے اس لئے کہ اسباب کو ترک کرنا توکل نہیں بلکہ اسباب حاصل کرنے کے بعد اس کے نتیجہ کو اللہ تعالیٰ کی ذات پر چھوڑ دینا توکل کہلاتا ہے۔

نبی کریم ﷺ سید التوکلین ہونے کے باوجود عار حرامیں کئی دنوں کا کھانا بھی ساتھ لے جاتے، میدان جنگ میں حفاظت کے لئے ذرہ استعمال فرماتے، بیمار یوں کے علاج کے لئے دوا کی تلقین بھی فرمائی اور اپنا علاج بھی کروایا، اپنے ساتھ محافظ رکھے اور خود مجاہدین کو ہتھیاروں کے ساتھ اپنی حفاظت کرنے کی تلقین فرمائی۔

توکل کے درجات: توکل کے تین درجے ہیں۔

(۱) توکل (۲) تسلیم (۳) تفویض۔

توکل ابتداء ہے، تسلیم درمیانی درجہ ہے اور تفویض انتہائی درجہ ہے۔

متوکل کو اللہ تعالیٰ کے وعدے پر اطمینان ہوتا ہے اور تسلیم کا درجہ رکھنے والا صرف اس پر اکتفاء کرتا ہے کہ اللہ تعالیٰ کو اس کی حالت کا علم ہے اور تفویض والا شخص اللہ تعالیٰ کے حکم پر راضی ہوتا ہے خواہ حکم موافق ہو یا مخالف۔

توکل انبیاء کی صفت ہے، تسلیم حضرت ابراہیم کی اور تفویض سرکارِ دو عالم ﷺ کی۔

صبر کی تعریف

لغوی معنی ہے روکنا اور اصطلاح میں نفس کی مرضی کے خلاف امور پر دل و زبان کو شکوہ و شکایت سے اور اس کے نتیجے میں ظاہری اعضاء کو ہر قسم کی غیر شرعی کارروائیوں سے روکے رکھنے کا نام صبر ہے اور اس کا برعکس کرنا بے صبری ہے۔

صبر کی اقسام: صبر کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) اللہ تعالیٰ کی جانب سے آنے والے مصائب و آلام اور پریشانیوں پر صبر۔

(۲) عبادات پر استقامت کے لئے صبر۔

(۳) گناہوں سے اجتناب پر صبر۔

توفیق کی تعریف

اللہ تعالیٰ کا اپنے بندے کے فعل کو اپنی محبت و رضا کے موافق بنانا توفیق کہلاتا ہے۔

علامہ نووی رحمۃ اللہ علیہ توفیق کی تعریف کرتے ہوئے ارشاد فرماتے ہیں۔

اللہ تعالیٰ کی اطاعت کے لئے اپنے اندر قدرت پیدا کرنا توفیق کہلاتا ہے۔

ہدایت کی تعریف

ہدایت ایسی دلالت ہے جو مطلوب تک پہنچا دے۔

امام راغب اصفہانی ہدایت کی تعریف میں لکھتے ہیں۔

ہر وہ چیز جو مطلوب تک پہنچا دے اور اس کی طرف خلوص دل سے رہنمائی حاصل کرنا ہدایت کہلاتا ہے

صراط مستقیم کی تعریف

عند الشرع وہ عقائد کہ جس میں دارین (دنیا و آخرت) کی سعادت حاصل ہو یا ایسا دین کہ جس کے سبب اللہ تعالیٰ و رسول کریم ﷺ کی معرفت صحیحہ اور تمام شرعی احکام کا علم ہو صراط مستقیم ہے۔

استقامت کی تعریف

استقامت کا معنی ہے ایسا خط مستقیم جس میں دائیں بائیں بالکل التفات نہ ہو اور مطلقاً کبھی نہ ہو اور احکام شریعہ پر ہو بہو عمل کرنا اور ان میں کسی قسم کی کمی اور زیادتی نہ ہو عقائد، اعمال اور اخلاق میں معتدل اور متوسط طریقہ پر ہمیشہ قائم رہنا استقامت کہلاتا ہے۔

اقسام: استقامت کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) عقائد میں استقامت: اللہ تعالیٰ کی توحید اور اس کی ذات و صفات میں ذرا سی کمی اور زیادتی عقائد میں استقامت سے خارج کر دیتی ہے۔

جیسے معتزلہ اللہ تعالیٰ کا عدل ثابت کرنے میں افراط کا شکار ہوئے اور انہوں نے کہا کہ اللہ تعالیٰ پر واجب ہے کہ وہ نیکو کاروں کو ثواب عطا فرمائے۔ حالانکہ اللہ تعالیٰ پر کوئی چیز واجب نہیں اور وہ استقامت سے نکل گئے۔ ہمارے دور میں علمائے دیوبند اللہ تعالیٰ کی قدرت کا عموم ثابت کرنے میں افراط اور غلو کا شکار ہوئے اور انہوں نے کہا اللہ تعالیٰ جھوٹ بولنے اور ہر برے

(فتاویٰ رشیدیہ ص ۸۴)

کام کرنے پر قادر ہے

حالانکہ اللہ تعالیٰ کے لئے جھوٹ بولنا اور کوئی بھی برا کام کرنا محال ہے اس طرح وہ استقامت سے نکل گئے۔ اسی طرح نبی کریم ﷺ کی شان میں تنقیص کرنا تفریط ہے اور آپ ﷺ کے مقام و مرتبہ کو اللہ تعالیٰ کے برابر کر دینا افراط ہے اور یہ بھی استقامت سے دور کر دیتے ہیں۔ اسی طرح شیعہ جب اہل بیت میں افراط اور غلو کا شکار ہوئے اور انہوں نے صحابہ کرام پر تمہار کیا استقامت سے نکل گئے اسی طرح ناصی اہل بیت میں تنقیص اور تفریط کے مرتکب ہوئے استقامت سے نکل گئے۔ خارجی حضرت علی اور حضرت امیر معاویہ کی شان میں تمہار کرنے کی وجہ سے صراط مستقیم سے نکل گئے۔

(۲) اعمال میں استقامت: جس طرح عقائد میں استقامت ضروری ہے اسی طرح اعمال میں بھی استقامت مطلوب ہے اور بہت مشکل ہے۔

جیسے اللہ تعالیٰ کی راہ میں سب مال خرچ کر کے خود بھیک مانگنا شروع کر دینا افراط ہے اور اللہ تعالیٰ کی راہ میں بالکل مال خرچ نہ کرنا تفریط ہے اور یہ دونوں استقامت سے خارج ہیں۔ نفلی نماز، روزے میں انسان اس قدر مشغول رہے کہ بیوی بچوں کے حقوق ادا نہ کر سکے یہ عبادت میں افراط ہے اور بیوی بچوں کی محبت اور ان کے ساتھ مشغولیت میں عبادت کرنے، نماز پڑھنے اور روزہ رکھنے کا بالکل خیال نہ رہے یہ تفریط ہے اور یہ دونوں عمل استقامت سے خارج ہیں۔

خلاصہ یہ ہے کہ ہر عمل میں اپنے آپ کو متوسط کیفیت اور اعتدال پر رکھنا استقامت ہے اور کسی ایک طرف میلان اور جھکاؤ اختیار کرنا استقامت کے خلاف ہے۔

صوفیا کے نزدیک استقامت کی تعریف:

استقامت ایک ایسا درجہ ہے جس کے سبب تمام امور کمال اور تمام کو پہنچتے ہیں اور اسی کی وجہ سے تمام نیکیاں حاصل ہوتی ہیں اور جس شخص کو اپنے کسی حال میں استقامت حاصل نہ ہو اس کی کوشش رائگاں اور اس کی جدوجہد بے سود ہوتی ہے اور جو شخص اپنی کسی صفت میں متقیم نہ ہو وہ اپنے مقام سے ترقی نہیں کر سکتا۔

استقامت کی علامات: استقامت کی مندرجہ ذیل علامات ہیں۔

- (۱) مبتدی میں استقامت کی علامت یہ ہے کہ اس کے معاملات میں سستی نہ آئے۔
- (۲) متوسط میں استقامت کی علامت یہ ہے کہ اس کی منازل میں وقفہ نہ آئے۔
- (۳) اور منتہی میں استقامت کی علامت یہ ہے کہ اس کے مشاہدے میں حجاب نہ آئے۔

حیاء کی تعریف

کسی فعل کے ارتکاب کے وقت مذمت و ملامت کے خوف کے سبب ہمت کا تبدیل ہونا حیا کہلاتا ہے۔

حیا کی تعریف یوں بھی کی گئی ہے کہ حیا ایک ایسا وصف ہے جو فعل قبیح کو ترک کرنے پر ابھارے اور کسی حقدار کو اس کے حق کی ادائیگی میں کمی کرنے سے روکے حیا کہلاتا ہے۔

زہد کی تعریف

امام غزالی فرماتے ہیں

زہد کا مطلب یہ ہے کہ انسان ایسی چیزوں کو ترک کر دے جو اس کے لئے مباح ہوں اور نفس ان کی طرف رغبت کرے زہد کہلاتا ہے۔

زہد کے مراتب: زہد کے تین مرتبے ہیں۔

- (۱) ایک شخص کے دل میں دنیا کی خواہش ہو لیکن وہ مجاہدہ اور کوشش کر کے دنیا کو ترک کر دے۔
- (۲) ایک شخص اپنی رغبت سے دنیا کو ترک کر دے بایں طور کہ وہ آخرت کے مقابلہ میں دنیا کو حقیر جانے۔
- (۳) ایک شخص زہد میں بھی زہد کرے۔ یہ سب سے بڑا مرتبہ ہے۔

توبہ کی تعریف

جب توبہ کی نسبت بندے کی طرف ہو تو اس کا معنی یہ: گناہ کے بندے نے تافرمانی سے اللہ تعالیٰ کی اطاعت کی طرف رجوع کیا تو یہ کہلاتا ہے۔ توبہ کا لفظ اللہ تعالیٰ کے لئے بھی استعمال ہوا چنانچہ جب اس کی نسبت اللہ تعالیٰ کی طرف ہو تو اس کا مطلب یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے بندے کی مغفرت کی طرف رجوع فرمایا۔

توبہ کے ارکان: ارکان توبہ چار ہیں۔

- (۱) رکن اول یہ ہے کہ جو تافرمانی سرزد ہو اس پر ندامت کا اظہار کیا جائے۔
- (۲) رکن ثانی یہ ہے کہ اس گناہ کو فوراً ترک کر دے۔
- (۳) رکن ثالث یہ ہے کہ آئندہ اس گناہ سے دور رہنے کا مصمم ارادہ کرے۔
- (۴) رکن رابع یہ ہے کہ جہاں تک ممکن ہو اس کا تدارک و تلافی کرے مثلاً نماز، روزہ ترک ہوا تو اس کی قضا لوٹائے، کسی کی حق تلفی کی تو اس کا حق لوٹائے۔

ادب کی تعریف

ادب ایک ایسی ریاضت محمودہ ہے کہ جو انسان کے لئے حصول فضیلت کا سبب بنے۔ اس کی ایک تعریف یوں بھی کی گئی ہے کہ ادب ایک ایسا لنگہ ہے جو مذموم و ممنوع اشیاء سے محفوظ رکھتا ہے۔

مذاق (مزاح) کی تعریف

کسی دوسرے شخص کے ساتھ اس طرح خوش کلامی کرنا کہ اس کے خوش کلامی کرنے کے سبب اس کو کسی قسم کی تکلیف نہ پہنچے مذاق یا مزاح یا دل لگی کہلاتا ہے۔

حکم: ہمارے عرف میں ہر قسم کے بیہودہ الفاظ کے ساتھ دوسرے کو نشانہ بنانا، ایک دوسرے کو

ماں بہن کی گالی دینا مزاح میں شامل ہے حالانکہ یہ طریقہ خلاف شرع اور گناہ ہے۔ سرکارِ دو عالم ﷺ سے مزاح کرنا ثابت ہے لیکن آپ ﷺ کا مزاح ہر قسم کے بیہودہ اور معیوب الفاظ و حرکات سے پاک ہوتا تھا بلکہ آپ ﷺ کے مزاح میں بھی شفقت و محبت اور صلہ رحمی کا درس ہوتا تھا لہذا مزاح کرتے وقت اس کے آداب کو ملحوظ خاطر رکھنا بے حد ضروری ہے۔

(۱) ایسا مزاح نہ ہو جس سے سامنے والے کو تکلیف ہو۔

(۲) مزاح میں کسی کی عزت و آبرو پر حرف نہ آئے۔

(۳) مزاح جھوٹ سے خالی ہو۔

(۴) مزاح پر عادت نہ بنالی جائے ورنہ دل میں سختی پیدا ہوگی۔

(۵) ایسا بے ہودہ مزاح نہ ہو کہ جس سے وقار میں کمی پیدا ہو۔

(۶) مزاح میں تحقیری پہلو نہ ہو۔

مصافحہ کی تعریف

ایک شخص کا اپنی ہتھیلی کو دوسرے شخص کی ہتھیلی سے اس طرح ملانا کہ بیچ میں کوئی چیز مثلاً کپڑا وغیرہ حائل نہ ہو مصافحہ کہلاتا ہے فقہاء اہل کیوں کو چھونے کا نام مصافحہ نہیں جیسا کہ بعض لوگ کرتے ہیں۔

حکم: بوقت ملاقات مصافحہ کرنا سرکارِ دو عالم ﷺ کی سنت مبارکہ ہے۔ صاحب بہار شریعت فرماتے ہیں کہ رخصت کے وقت بھی عموماً لوگ مصافحہ کرتے ہیں اس کے مسنون ہونے کی تصریح نظر فقیر سے نہیں گزری مگر اصل مصافحہ کا جواز حدیث سے ثابت ہے تو اس کو بھی جائز ہی سمجھا جائے گا۔

مصافحہ کا طریقہ: مصافحہ کرنے کے دو طریقے ہیں۔

(۱) پہلا طریقہ یہ ہے کہ ہر ایک کا سیدھا ہاتھ دوسرے کے دونوں ہاتھوں کے درمیان

میں ہو۔

(۲) ہر ایک اپنا داہنا ہاتھ دوسرے کے داہنے ہاتھ سے اور بائیں بائیں سے ملائے اور

انگوٹھے کو دبائے گا انگوٹھے میں ایک رگ ہے کہ اس کے پکڑنے سے محبت پیدا ہوتی ہے۔

بوسہ کی تعریف

کسی شخص کا اپنے ہونٹوں کو اپنی کسی محبوب چیز کے ساتھ مس کرنا بوسہ کہلاتا ہے۔ بعض لوگوں کے منہ سے انگوٹھے چومنے کے دوران آواز نکلتی ہے یہ بوسہ کے آداب کے خلاف ہے۔

بوسہ کی اقسام: بوسہ کی چھ قسمیں ہیں۔

(۱) بوسہ رحمت۔ جیسے والدین کا اپنی اولاد کو بوسہ دینا۔

(۲) بوسہ شفقت۔ جیسے اولاد کا اپنے والدین کو بوسہ دینا۔

(۳) بوسہ محبت۔ جیسے ایک شخص اپنے بھائی کی پیشانی کو بوسہ دے۔

(۴) بوسہ تحیہ جیسے بوقت ملاقات ایک مسلمان کا دوسرے مسلمان کو بوسہ دینا بشرطیکہ وہ

قابل شہوت نہ ہو۔

(۵) بوسہ شہوت۔ جیسے مرد اپنی عورت کو بوسہ دے۔

(۶) بوسہ یا نیت۔ جیسے حجر اسود کا بوسہ۔

خلق کی تعریف

خلق ایک ایسا ملکہ ہے کہ جو بندہ اس وصف کے ساتھ متصف ہو جائے تو اس کے لئے نیک افعال اختیار کرنا آسان ہو جاتے ہیں، معاملات میں شدت کرنا، بخل اور غضب سے کام لینا لوگوں کے ساتھ تکبر کے ساتھ پیش آنا ترک تعلق کرنا، رشتہ داروں، عزیز و اقربہ کے حقوق سے غفلت کرنا ان تمام افعال قبیحہ سے اجتناب کرنا حسن اخلاق میں سے ہے۔

خلق کی اقسام: خلق کی تین قسمیں ہیں۔ (۱) خلق حسن۔ (۲) خلق کریم۔ (۳) خلق عظیم۔

خلق حسن یہ ہے کہ برائی کا بدلہ برائی سے دیا جائے۔ خلق کریم یہ ہے کہ برائی کا بدلہ نہ لیا جائے بلکہ اس کو معاف کر دیا جائے اور خلق عظیم یہ ہے کہ برائی کرنے والے کو معاف کر کے اس پر احسان بھی کیا

جائے

مثلاً کسی شخص نے آپ کو کوئی تکلیف پہنچائی آپ نے اس سے بدلہ لے لیا تو یہ خلق حسن ہے اور اگر اس کو معاف کر دیا تو یہ خلق کریم ہے اور اگر آپ نے معاف کر کے مزید اس پر احسان بھی کیا تو یہ خلق عظیم ہے

اخلاص کی تعریف

خالص کا معنی ہے صافی ایسی شے کہ جس میں ملاوٹ ہو اور اس ملاوٹ کو دور کر دیا جائے تو اس کو خالص کہا جاتا ہے مطلب یہ کہ جس شے میں ملاوٹ ہو سکتی ہو لیکن اس میں ملاوٹ نہ کی جائے اس کو اخلاص کہتے ہیں۔ حقیقت اخلاص یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ کی ذات پاک کے علاوہ ہر چیز سے بری ہو جانا۔ خلاصہ یہ ہوا کہ جس عبادت میں ریا کاری کی ملاوٹ نہ ہو اسے اخلاص کہتے ہیں۔

خشوع کی تعریف

نفس کی ایسی حالت کہ جس کا اثر جسم کے ظاہری اعضاء پر سکون و تواضع کی صورت میں ظاہر ہو خشوع کہلاتا ہے۔

زینت کی تعریف

ایسی چیز کہ جس کے سبب دنیا و آخرت کی دونوں حالتیں محبوب نہ ہوں زینت ہے اور جس چیز سے ایک وجہ سے حسن پیدا ہو رہا ہے اور دوسری وجہ سے قباحت پیدا ہو تو وہ زینت نہیں مثلاً قیمتی کپڑے خرید کر پہننا اس میں کوئی قباحت نہیں لیکن اگر اس کے سبب ریا کاری پیدا ہوئی یا تکبر پیدا ہوا تو اب قباحت پیدا ہو گئی لہذا زینت نہ رہا۔

زینت کی اقسام: زینت کی تین قسمیں ہیں۔

(۱) زینت نفسیہ (۲) زینت بدنیہ (۳) زینت خارجیہ۔

زینت نفسیہ: جیسے علم دین اچھے اخلاق و آداب اور اچھے اعتقاد وغیرہ زینت نفسیہ کہلاتے ہیں۔

زینت بدنہ: مثلاً خوبصورت شکل و صورت جسمانی قوت و طاقت وغیرہ زینت بدنہ کہلاتے ہیں۔

زینت خارجہ: عزت و وجاہت، مال و متاع اچھی شہرت وغیرہ زینت خارجہ کہلاتے ہیں۔

حکم: زینت کرنا مستحب ہے فقہائے کرام فرماتے ہیں خوبصورت لباس استعمال کرنا مستحب ہے حدیث پاک میں ارشاد ہے جب اللہ تعالیٰ کسی شخص کو کوئی نعمت عطا فرماتا ہے تو وہ چاہتا ہے کہ میرے بندے پر اس نعمت کا اظہار ہو بشرطیکہ غرور و تکبر اور زیاپیدا نہ ہو۔

خواب کی تعریف

وہ چیز جو حالت نیند میں دیکھی جائے خواب کہلاتا ہے۔

خواب کے درجات: خواب دیکھنے کے سلسلے میں انسانوں کے تین درجات ہیں۔

(۱) درجہ اولی: یہ درجہ انبیائے کرام کا ہے ان کے خواب قطعی طور پر سچے ہوتے ہیں۔

حکم: انبیائے کرام کے خواب قطعی اور یقینی ہوتے ہیں لہذا یہ قابل حجت ہوتے ہیں اور ان سے شرعی احکام بھی مرتب ہوتے ہیں۔

(۲) درجہ ثانی: یہ درجہ نیک و صالحین لوگوں کا ہے ان کے زیادہ تر خواب سچ پر مبنی ہوتے ہیں۔

حکم: نیک و صالحین کے خواب ظنی ہوتے ہیں لہذا یہ قطعی طور پر قابل حجت نہیں ہوتے اور نہ ان سے شرعی احکام مرتب ہوتے ہیں۔

(۳) درجہ ثالث: یہ درجہ عام لوگوں کا ہے ان کی مزید تین قسمیں ہیں۔

(۱) مستورین کے خواب: ان کے خواب سچے بھی ہوتے ہیں اور پریشان کن بھی اور یہ دلوں یکساں ہوتے ہیں۔

(۲) فساق کے خواب: ان کے زیادہ تر خواب جھوٹے اور پریشان کن ہوتے ہیں اور سچے کم ہوتے ہیں۔

(۳) کفار کے خواب: ان کے خواب بہت ہی کم سچے ہوتے ہیں اور بہت کثیر خواب جھوٹے اور پریشان کن ہوتے ہیں۔

حکم: یاد رہے کہ انبیاء کے خواب یقینی و قطعی ہوتے ہیں ان سے احکام بھی ثابت ہوتے ہیں لیکن انبیاء کے علاوہ کسی کے خواب نہ قطعی ہوتے ہیں اور نہ ہی کوئی حکم ثابت ہوتا ہے۔

مراقبہ کی تعریف

لغوی معنی ایک دوسرے کو دیکھنا اصطلاحی معنی بندے کا اس طرح تصور جمانا کہ اللہ تعالیٰ مجھے اور میں اللہ تعالیٰ کو دیکھ رہا ہوں مراقبہ کہلاتا ہے۔

تبسم ہنسی قہقہہ کی تعریف

(۱) تبسم: خوشی کے دوران بندے کا چہرہ پھیل جائے اور دانت ظاہر ہو جائیں لیکن آواز پیدا نہ ہوا سے تبسم کہتے ہیں۔

(۲) ہنسی: اب اگر آواز پیدا ہوئی اور یہ آواز قریب تک سنائی دے تو ہنسی ہے۔

(۳) قہقہہ: اور اگر آواز دور تک پہنچ جائے تو قہقہہ کہلاتا ہے۔

حکم: تبسم پر اقتصار کرنا افضل ہے جیسا کہ ہر کار و دعا کے لئے اکثر اوقات تبسم فرماتے اور کبھی

کبھی آپ نصیحت بھی ہیں روایت میں ہے کہ جب رسول اللہ ﷺ جنتے تو دیواریں روشن ہو جاتیں۔ زیادہ ہنسنا قبیح ہے اس سے دل مردہ ہوتا ہے اور قہقہہ لگانا تو بہت ہی قبیح ہے سرکارِ دو عالم ﷺ نے زندگی میں کبھی بھی قہقہہ نہیں لگایا۔

حکمت کی تعریف

انسان اپنی طاقت کے مطابق اشیاء کی حقیقتوں کو اس طرح جان لے کہ جس طرح وہ واقع میں ہوں۔ ایک تعریف یوں بھی کی گئی ہے کہ کسی جھگڑے کا عدل کے مطابق فیصلہ کرنا اس لئے کہ مدعی اور مدعا علیہ کے متضاد بیانات کی وجہ سے حقیقت پر ٹھوک و شبہات کے پردے پڑ جاتے ہیں لہذا اس حقیقت کو واضح و ظاہر کرنا اور حقدار کو اس کا حق دلانا عدل ہے اسی چیز کو حکمت کہتے ہیں۔

سیاست کی تعریف

لغوی معنی کسی شے کی اصلاح کا بندوبست کرنا اور اصطلاح میں وطن عزیز کے داخلی و خارجی امور کو مستحکم کرنے کے لئے غور و فکر کرنا، ہر قسم کے بگڑے ہوئے و پیچیدہ مسائل کے حل کے لئے لائحہ عمل اختیار کرنا، عوام الناس کے مسائل ان کے دکھ درد اور ان کی فلاح و بہبود کے لئے تنگ دو کرنا سیاست کہلاتا ہے۔

سیاست کی اقسام: سیاست کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) سیاست بمعنی عبادت (۲) سیاست بمعنی خباثت۔

(۱) سیاست بمعنی عبادت: ایسی سیاست کہ جس میں ہر قسم کے داخلی و خارجی معاملات، قانون و ضوابط، قرآن و حدیث کے تابع ہوں اور کتاب اللہ و سنت رسول کی بالادستی ہو سیاست بمعنی عبادت ہے۔ یہی انبیاء و اولیاء اور خلفائے راشدین کی سیاست ہے۔

(۲) سیاست بمعنی خباثت: ایسی سیاست کہ جس میں قرآن و سنت کی بالادستی کی بجائے

اسلامی احکام کو اپنی مرضی کے تابع کر لیا جائے سیاست بمعنی خباثت ہے۔ بد قسمتی سے ہمارے وطن عزیز پاکستان میں یہی سیاست رائج ہے۔

مشورہ کی تعریف

مشورہ کا مطلب یہ ہے کہ بعض اشخاص کا بعض اشخاص سے ان کی رائے حاصل کرنے کے لئے رجوع کرنا مشورہ کہلاتا ہے جس معاملے میں طلب مشورہ ہوا سے شوری کہتے ہیں۔ حکم: مشورہ کرنا سنت مبارکہ ہے لہذا اچا ہے دینی معاملہ ہو یا دنیاوی مشورہ کر لینا بہتر ہے

عشق و محبت کی تعریف

جب طبیعت کسی لذت چیز کی طرف مائل ہو تو اسکو محبت کہتے ہیں اور یہ میلان جب شدت اختیار کر لے تو اس کو عشق سے موسوم کیا جاتا ہے۔

اقسام: محبت و عشق کی دو قسمیں ہیں۔

(۱) محبوب کے اعتبار سے (۲) غرض کے اعتبار سے۔

محبوب کے اعتبار سے محبت کی اقسام: اس کی چار قسمیں ہیں۔

(۱) مکروہ: کسی ناجائز اشیاء سے عشق و محبت جیسے زنا، لواطت یا شراب و شباب سے

محبت۔

(۲) مباح: ایسی محبت جس کا کرنا یا نہ کرنا برابر ہو یعنی نہ گناہ نہ ثواب۔ مثلاً اچھے اچھے

کھانوں سے محبت۔

(۳) مستحب: ایسی محبت جس کو اختیار کرنا ضروری تو نہ ہو لیکن اجر و ثواب کا موجب

ہو۔ جیسے علم دین سے محبت یا رضائے باری تعالیٰ کے لئے اپنے استاد و پیر سے محبت۔

(۴) واجب: ایسی محبت جس کا اختیار کرنا ہر مسلمان کے لئے ضروری ہو مثلاً اللہ تعالیٰ اور رسول اللہ ﷺ سے محبت یا دین اسلام سے محبت۔

غرض کے اعتبار سے عشق و محبت کی اقسام: انسان کا قلب جب مختلف اشیاء کی طرف مائل ہوتا ہے تو اس میلان کا سبب مختلف قسم کی اغراض ہوتی ہیں جن کی مندرجہ ذیل تین اقسام ہیں۔

۱۔ اللہ تعالیٰ کی رضا حاصل کرنے کے لیے محبت کرنا۔

جیسے مختلف قسم کی عبادات، نفل، تہجد، چاشت، اشراق سے محبت۔

حکم: اللہ تعالیٰ یہ محبت سب کو عطا فرمائے۔

۲۔ دنیاوی منفعت کے حصول کی غرض سے محبت۔

جیسے اپنی جاگیر اور زمین وغیرہ سے محبت کرنا۔

حکم: اگر یہ محبت فخر و غرور کی خاطر ہے تو قابل مذمت ہے ورنہ مباح ہے۔

۳۔ حصول لذت کی غرض سے محبت۔

جیسے آوارہ گرد قسم کے لڑکوں کا کسی کی ماں بہن کو ستانے اور ان پر جیلے کسنے سے محبت کرنا۔

حکم: یہ محبت گناہ اور موجب عذاب ہے۔



مصنف کی دیگر
قابل مطالعہ
کتابیں

• درس حدیث • انوار الحدیث
• ساگر کی لہریں • زلف و زنجیر
• جنتی زیور

الحمد للہ عزوجل اسلامی بھائیوں کے عقائد و
اعمال کی اصلاح کے لیے کوشاں مکتبہ فیضان مدینہ
کی تمام کتب تھوک و پرچون ریٹ پر خریدنے کے
لیے تشریف لائیں نیز مکتبہ فیضان مدینہ کی جانب
سے جذبہ اصلاح عوام کے تحت مفت تقسیم کرنے
والے حضرات کے لیے خصوصی رعایت ہوگی۔

PRINTEX 0300-4189945

مکتبہ فیضانِ مدینہ

فیضانِ مدینہ چوک، سوساں روڈ، مدینہ ٹاؤن، فیصل آباد 0346-6021452